Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

...वर्षा न होने की ...

...लन

...ो अंग्रेज़ी ...ो निन्दा

...बिल करने की मांग

...य कार्यसमितिकी बैठकमें ...िया जायगा ।

...ने बताया कि अधिवेशनमें ...प्रतिनिधियोंने भाग लिया । ...त्तामें प्रादेशिक अध्यक्ष श्री ... त्रिपाठी भी उपस्थित थे ।

...जगंज भीषण ...ाका चपेट में

हमारे संवाददाता से

...राजगंज (गोरखपुर), १५ ... । जिला इंदिरा कांग्रेस संघर्ष ... सदस्य एवं इंदिरा युवक कांग्रेस ... अध्यक्ष श्री माहि- ... अधिकारीने महाराजगंज ...

...है । आगामी कुछ दिनोंमें वर्षा न हुई अथवा सिचाईकी व्यवस्था नहीं की गयी तो क्षेत्रमें अकालकी स्थिति उत्पन्न हो जायगी तथा रबीकी बुआई भी नहीं हो पायेगी । नहरोंका पानी समान रूपसे पूरे क्षेत्रमें न वितरित होने, विद्युत आपूर्ति नियमित न होने तथा विद्युत आपूर्तिका निश्चित समय न होनेके कारण ग्रामीणोंके ... संकट उत्पन्न हो गया है । ग्रामीणोंका कहना है कि यह सही है कि इतना भयंकर सूखा अबतक नहीं पड़ा था, किंतु इतनी प्रशासनिक अव्यवस्था इसके पूर्व नहीं थी ।

चंदौली तहसीलकी मुख्य फसल धान है । सिंचाईका प्रमुख साधन नहर है । लतीफशाह से चन्दौली क्षेत्रसे होकर भदौरा (जमानिया, गाजीपुर) जानेवाली चन्दौली नहर का पानी नरवन परगनाके क्षेत्रोंतकके लिए भी पर्याप्त नहीं है । स्थान-स्थानपर नहर काटी जानेके कारण पानी नहरके अंतिम सिरेतक नहीं पहुंच पा रहा है । पानीके अभाव में हरी भरी फसल नष्ट हो रही है ।

चन्दौली क्षेत्रके ग्रामीणोंने बताया कि लवण्डा-झांसी ग्रामके पास काफी मात्रामें नहरका पानी क्षेत्रीय ग्रामीणोंने रोक लिया था जिसके कारण बड़वल, नमुनीपुर तथा नमुरी माइनर (नहरकी उपशाखा) में पानी नहीं पहुंच पा सका है । पुलिस, प्रशासनिक तथा सिंचाई विभागके कर्मचारियोंकी निष्क्रियताके कारण मनमाने ढंगसे पानीका वितरण हो रहा है । नहर काटनेके आरोपमें अबतक कोई गिरफ्तारी नहीं की गयी है । चमनीपुर माइनर सींचे जानेवाले बनौली, बिछिया, जमनीपुर फगुइया रायब ताल तथा जमुरी माइनरसे सिंचित मदधूपुर, पुरवा, धरीपुर, आदि ग्रामोंका तथा लीलापुर परातपुर बगहा आदि क्षेत्रोंका 'आज' प्रतिनिधिने निरीक्षण किया । इन ग्रामोंमें अधिकांश फसल नष्ट हो चुकी है । ऊंचाईपर स्थित भूमि (पलिहर) की फसल पूरी तरह सूख गयी है जबकि निचले इलाके (खंदा) की फसल वर्षा होने पर बच सकती है । विशेष रूपसे रायल ताल क्षेत्रमें कई हजार एकड़तककी फसल बच सकता है ।

बनौली खुर्द ग्रामके ग्राम प्रधान श्री बच्चन सिंहने बताया कि पानीके सही वितरण, विद्युतकी सुचारु आपूर्तिसे फसलकी कुछ रक्षा हो सकती है । उन्होंने बताया कि इससे पूर्व सूखाके समय नहरके किनारे पुलिसकी व्यापक गश्त होती थी । इस वर्ष ऐसा नहीं ...

... गत वर्षोंमें ऐसी व्यवस्था की गयी ... आपूर्तिकी अनिश्चितता तथा ... समयतक बिजली न मिल ... सिचाईमें असुविधा हो रही है । ... से खेतके कुछ हिस्सोंमें ही पानी ... कि इसी बीच बिजली गायब हो ... बिजली आनेतक पानी सूख ... नहीं हो पाती । पानी एवं बिजली ... नहीं मिल पाता । किसान हताश ...

एकड़ तकके काश्तकारोंकी ... की है जबकि सूखा से ... प्रभावित है ... है । अतः बड़े-छोटेका प्रश्न नहीं ... सरकारको पूरे तौरपर वसूली स्थगित ... चाहिये । क्षेत्रके कई ग्रामोंमें ग्रामीण ... बुआईकी तैयारी करना चाहते हैं ... सूखी होनेके कारण हल चलाना ... हो पा रहा है ।

डीजलकी कमी तथा डीजल ... कारण कृषक त्रस्त हैं । किसानोंने ... पेट्रोल पंपवाले ट्रैक्टरोंको डीजल ... में नहीं देते । डीजल देनेमें आना- ... है । बस, ट्रकवालोंको आसानी ... मिल जाता है । क्योंकि वे पेट्रोल ... मित ग्राहक हैं ।

ग्रामीण क्षेत्रके लोगोंकी ... हो रही है । एक तो सूखा दूसरी ... वृद्धिसे ग्रामीण त्रस्त हैं । ग्राम ... वर्ग बेरोजगार है । टेस्ट वर्कमें ... न मिलनेके कारण मजदूर, ... कम रुचि ले रहे हैं । दूसरी ओर ... काम करनेपर उन्हें नकद रुपयेकी ... के कारण ग्रामीण क्षेत्रसे लोग ... आ रहे हैं । नकद रुपयेसे वे अपनी ... सामग्री खरीद सकते हैं ।

चंदौली तहसीलमें सकलडीहा ... बाद, चहनिया, बरहनी, धानापुर ... स्थिर ज्यादा खराब है । ... पशुओंका चारा समाप्त हो गया ... फसल मक्का, बाजरा, ज्वार, ... सनई आदि ९० प्रतिशत नष्ट हो ...

स्टेनलेस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

...में डीजल पेट्रोल की कमी

...के विभिन्न क्षेत्रोंमें डीजल; ...तथा मिट्टीके तेलकी कमी हो ...है ।

...लसराय, अलीनगर, चन्दौली, ...जा तथा नौबतपुर, पड़ाव ...स्थित पेट्रोल पम्पोंपर डीजल ...ट्रोलके अभावमें काफी संख्यामें ...भिन्न स्थानोंपर खड़ी है । ...के किनारे ट्रकोंके खड़ी रहनेसे ... जी० टी० रोडपर कई बार ...ात अवरुद्ध हो जाता है। जिसके ...मस्वरूप मुगलसरायसे ट्रेन ...वाले यात्रियोंको काफी परे- ...उठानी पड़ती है ।

...ासी क्षेत्रोंमें पुलिस ...यी नहीं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिक्षाविभाग भारत सरकार से पुरस्कृत

॥ श्रीः ॥

सामवेदीयरुद्रजपविधिः

पदपाठ-संहिता-हिन्दी-अंग्रेजी-अनुवादोपेतः

संग्रहकर्ता :-

आहिताग्नि श्री पं० यमुनाप्रसाद त्रिपाठी आई. पी. एस.

सम्पादकः-

आचार्य श्री पं० ऋषिशङ्कर अग्निहोत्री

(अध्यापक, जो० म० गोयनका संस्कृत महाविद्यालय वाराणसी)

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

ई० १९६३] [वि० सं० २०२०

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक:-
सनातनधर्म संस्कृत महाविद्यालय
मेंहदावल, जि० बस्ती (उ० प्र०)
१९६३

(पुनर्मुद्रणादिकाः सर्वेऽधिकाराः सम्पादकाधीनाः)

मूल्य ४-००

मुद्रक:—
विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

"With the financial assistance of the Ministry of Education, Govt. of India"

THE

SĀMAVEDĪYARUDRAJAPAVIDHI

WITH

PADAPĀTHA-SAMHITĀ, HINDI-ENGLISH TRANSLATIONS

Compiler :-

Āhitagni S'rī Pandit Yamuna Prasad Tripathi
I. P. S.

Editor :-

Āchārya S'rī Pandit Rishishankar Agnihotri
(Adhyāpaka J. M. Goenkā Mahāvidyālaya, Varanasi.)

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

THE CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

Post Box 69, Varanasi-1 (India) Phone : 3076

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

प्राक्कथन

ग्रन्थ-परिचय

इस ग्रन्थ में संग्रहकर्ता ने स्वयं कुछ नहीं लिखा है। अनेक सामवेदीय ग्रन्थों से—जो संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में हैं—मंत्र, गायन व अर्थ हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में संग्रह करके एक जगह कर दिया गया है। पदपाठ आचार्य श्री पंडित ऋषिशंकर त्रिपाठी अग्निहोत्री की कृपा से इस ग्रन्थ में आ सका है। इस संग्रह का प्रयोजन यह है कि जो महानुभाव सामवेद की रुद्री का अध्ययन करना चाहते हैं उनको सब सामग्री एक ही स्थान पर मिल जाय। भूमिका में जो महत्त्वपूर्ण बातें लिखी गयी हैं वे श्री पंडित ऋषिशंकर त्रिपाठी अग्निहोत्री सामवेदाचार्य व स्वर्गीय पंडित तेजोनारायण जी पाण्डेय शास्त्री की कृपा से प्राप्त हुई हैं। अंग्रेजी भाषा का ज्ञान व उसमें अभिरुचि रखनेवाले जो महानुभाव वेदों के प्रति भी आस्था रखते हों तथा वेद-प्रतिपादित विषयों की जानकारी प्राप्त कर उससे लाभान्वित होना चाहते हों उनके लिये प्रामाणिक अंग्रेजी अनुवाद भी यथाक्रम उपन्यस्त कर दिया गया है। आशा है पाठकों को अवश्य सन्तुष्टि होगी।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संग्रहकर्ता का परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ के संग्रहकर्ता आहिताग्नि श्री पंडित यमुनाप्रसाद जी त्रिपाठी आई० पी० एस० का जन्म १६०६ ई० में बाँदा जिले के मरका गाँव में हुआ। त्रिपाठी जी के पिता पंडित शिवशंकर लाल जी त्रिपाठी मरका में थानेदार थे। उस समय उर्दू व अंग्रेजी का प्रचलन होने से श्री त्रिपाठी जी की प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू व फारसी भाषाओं में हुई। सन् १६२७ ई० में प्रयाग विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा पास करके आप सन् १६३० ई० में पुलिस-सबइन्स्पेक्टर हो गये और फैजाबाद, देहरादून, आजमगढ़, मुरादाबाद, वाराणसी तथा लखनऊ में काम करते हुए अगस्त सन् १६६२ में रिटायर्ड हो गये। इधर चीन के आक्रमण के प्रसंग में पुनः उत्तरप्रदेश सरकार ने आपको पुलिस के गुप्तचर विभाग की सुरक्षा-शाखा का काम देखने के लिये नियुक्त कर दिया है।

त्रिपाठी जी कौथुमीशाखीय, सामवेदी, सरया तिवारी, सरयूपारीण ब्राह्मण हैं। आपके प्रपितामह को प्रतापगढ़ के एक धार्मिक क्षत्रिय यज्ञ का आचार्य बनाने के लिये गोरखपुर जिले के सरया ग्राम से ले गये और वे यज्ञ के पश्चात् प्रतापगढ़ जिले के अझारा ग्राम में रहने लगे। उनकी सन्तानें प्रतापगढ़ जिले की कुंडा तहसील के कई ग्रामों में बस गई हैं। श्री त्रिपाठी जी का निवासस्थान ग्राम महेवा मलकिया, जिला प्रतापगढ़ है। आपके पूर्वज सामवेद और ज्योतिष शास्त्र के धुरन्धर विद्वान् थे। आपके चचेरे पितामह आचार्य श्री पंडित कौशिल्यानन्द तिवारी और चचा श्री पंडित सीताराम त्रिपाठी शास्त्री संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वानों में थे। त्रिपाठी जी के श्वशुर स्वर्गीय श्री पंडित श्यामसुन्दर ब्रह्मचारी जी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संस्कृत व्याकरण के अद्वितीय विद्वान् थे। उनको सम्पूर्ण महाभाष्य कण्ठ था। उनके पढ़ाये हुये बहुत से पंडित प्रयाग में हैं।

आहिताग्नि श्री पंडित यमुनाप्रसाद त्रिपाठी जी ने पुलिस विभाग में सराहनीय काम किया है। डाकुओं से मुकाबिला करके उनको पकड़ने के उपलक्ष्य में दो, और सराहनीय सेवाओं के लिये एक वीरता-पदक सरकार से आपको प्राप्त हैं। सन् १९४७ ई० से १९५१ ई० तक आप सीनियर सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस रहे। फिर सन् १९६२ तक तथा उत्तरप्रदेश पुलिस के गुप्तचर विभाग की सुरक्षा शाखा के अधीक्षक के रूप में देश की सेवा करते रहे। इस विभाग में आपकी सेवायें विशेष रूप से सराहनीय थीं। आपके स्थिर-गम्भीर व्यक्तित्व एवं प्रतिभा का इससे सहज ही अनुमान हो सकता है। पुलिस विभाग में सफल कार्यकारिता तथा वेदों के सफल स्वाध्याय की एकाधिकरणता के सम्भवतः आप ही एक उदाहरण हैं। आपके पाँच भाग्यवान् पुत्र और पाँच पुत्रियाँ हैं। आपके सबसे बड़े लड़के श्री दुर्गाप्रसाद त्रिपाठी प्रयाग में नायब तहसीलदार हैं, उनसे छोटे डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद त्रिपाठी उत्तरप्रदेश सरकार के मेडिकल विभाग में चिकित्सक हैं। आपके तीसरे लड़के कैप्टेन जगदीशप्रसाद त्रिपाठी भारत सरकार की फौज में कप्तान हैं। दो लड़के अभी शिक्षा पा रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शान्ता देवी भी सज्जनता और धर्म की मूर्ति हैं।

सन् १९५२ ई० में श्री त्रिपाठी जी का परिचय श्री सत्यदेव ब्रह्मचारी जी से हुआ। श्री सत्यदेव ब्रह्मचारी जी सावर्ण गोत्रीय, कौथुमी शाखी, सामवेदी, इटार पाण्डे हैं। श्री ब्रह्मचारी जी को बाल्यकाल से ही साधु-महात्माओं की सेवा, परोपकार और योगाभ्यास की लगन थी। १९३९ ई० में अपने सुखी, सम्पन्न परिवार व गृह को त्याग कर आप श्री १०८ स्वामी सालिग्राम दास जी, अधिष्ठाता पयोहारी आश्रम, उसका बाजार, की शरण में गये और उसी समय से तपस्यामय जीवन व्यतीत करने लगे। जनता व दीन-दुखियों की सेवा करना आपके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। आपने कई स्कूल, पाठशाला व अस्पताल आदि स्थापित करके उनके सुचारु रूप से संचालन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करने का प्रबन्ध किया है। लोक-कल्याणार्थ आपने कई यज्ञों का आयोजन कराया है। श्री अरविन्द आश्रम, पाण्डेचेरी से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध है। आप सर्वदा जनता की सेवा के लिये ही भ्रमण किया करते हैं। आपने देश और जनता की सराहनीय सेवा की है। आपका हेड क्वाटर डाक्टर श्री कमलादत्त त्रिपाठी के यहाँ रहता है जिनकी प्रतिष्ठा और कीर्ति बस्ती जिले में विख्यात है।

त्रिपाठी जी ने ब्रह्मचारी जी से जब एक योग्य सामवेदी से परिचय कराने की प्रार्थना की तो ब्रह्मचारी जी ने काशी निवासी आचार्य श्री पंडित ऋषिशङ्कर त्रिपाठी अग्निहोत्री से परिचय कराया जिन्होंने लखनऊ पधार कर त्रिपाठी जी को सामवेद पढ़ाया। सन् १९५९ ई० में भरथना (जिला इटावा) में विष्णु महायज्ञ के आयोजन की प्रेरणा श्री सत्यदेव ब्रह्मचारी जी ने ही श्री कृष्णकुमार गोयल डिप्टी कलेक्टर प्रयाग (जो उस समय भरथना में तहसीलदार थे) को दी थी। इस यज्ञ के यजमान सपत्नीक श्री त्रिपाठी जी थे और यज्ञ के आचार्य श्री पंडित ऋषिशङ्कर त्रिपाठी अग्निहोत्री थे।

इस ग्रन्थ के छपवाने का मुख्य श्रेय श्री सत्यदेव ब्रह्मचारीजी को ही है।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा, सं० २०१९
११ नवम्बर, सन् १९६२ ई०

ऋषिशङ्कर त्रिपाठी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

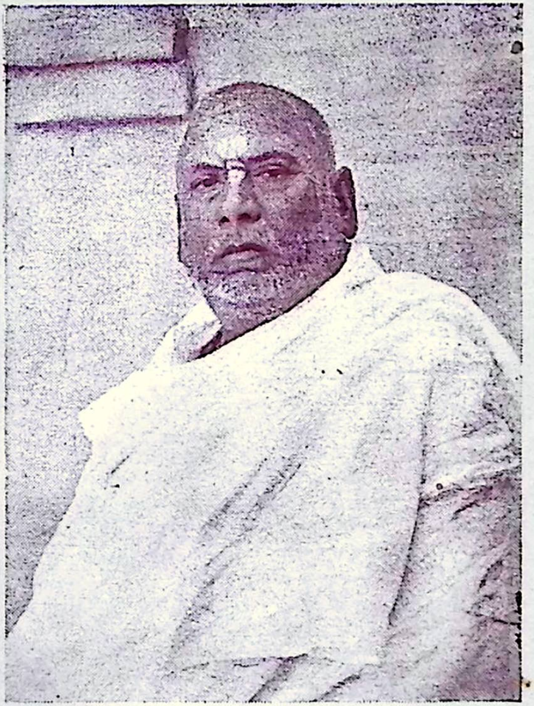

श्री १०८ स्वामी सालिग्रामदास जी

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
ज[illegible] २ २३६४
ब[illegible] (उ [illegible])

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

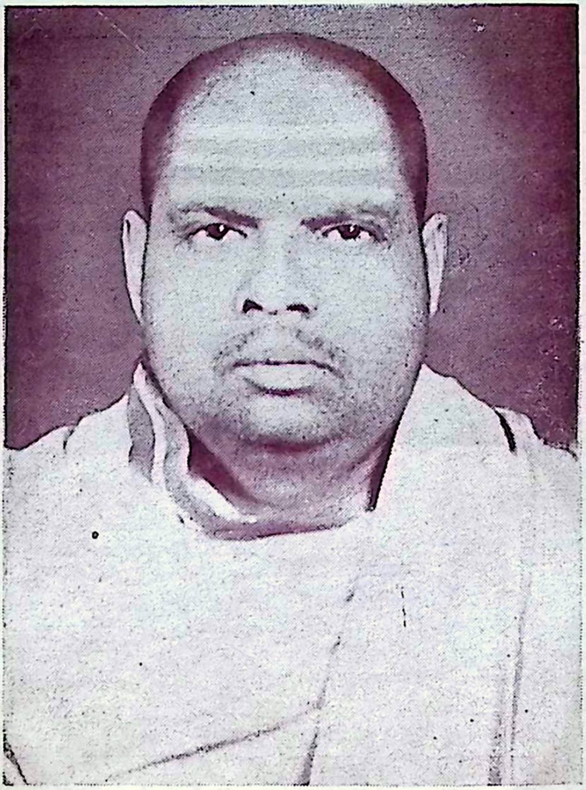

श्री पं० ऋषिशङ्कर अग्निहोत्री (चातुर्मास्ययाजी)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री कृष्णकुमार गोयल डिप्टी कलेक्टर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

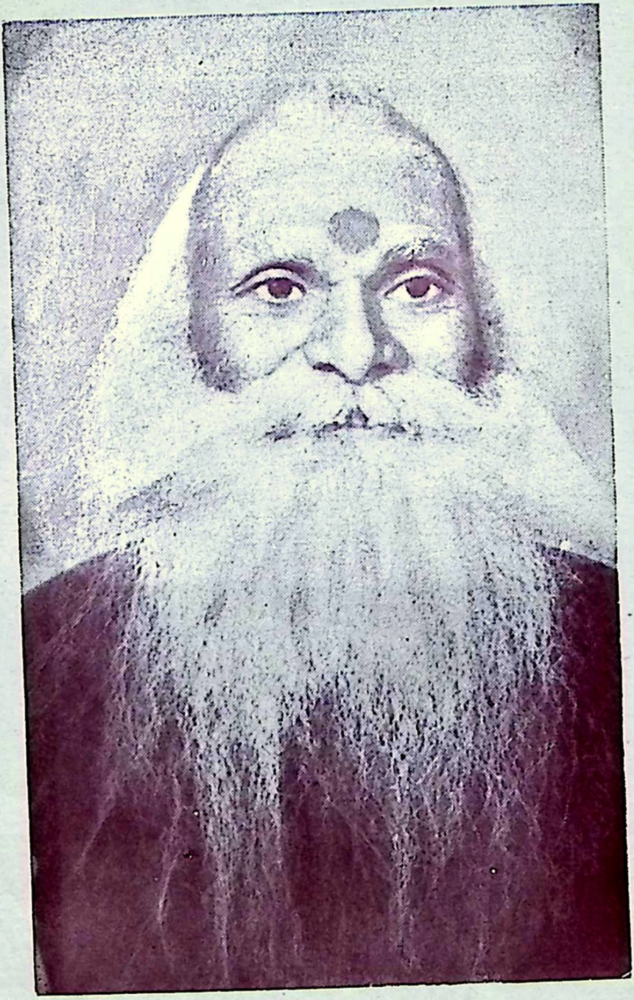

आहिताग्नि पं० यमुनाप्रसाद जी त्रिपाठी आई. पी. एस.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समर्पण

स्वर्गीय श्री पं० तेजोनारायण पाण्डेय जी शास्त्री

की

पुण्य स्मृति

में

सादर समर्पित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिका

सृष्टि के प्रारंभ में परमेश्वर ने वेद का उपदेश मनुष्य-जीवन को सफल बनाने के लिये अग्नि, वायु तथा सूर्य के द्वारा किया था। उस समय सब लोग मन्त्रों की पवित्रता स्थिर रखने के लिये गुरु परम्परा द्वारा कण्ठस्थ करके अपनी आत्मा, अन्तःकरण, मन और बुद्धि को पवित्र किया करते थे। धीरे-धीरे सृष्टि, क्रमानुसार, ह्रास को प्राप्त होती चली गई और इस ह्रास का प्रभाव मनुष्यों पर भी पड़ा, उनकी स्मरण शक्ति तथा बुद्धि कम होती गई। ऐसी दशा देख कर महर्षि वेदव्यास ने वेदों को विभाजित कर दिया तथा अन्य ऋषियों ने वेदों की शाखा प्रशाखायें कर दीं जिनको कि ब्राह्मणों में बांट दिया गया और प्रत्येक ब्राह्मण अपनी अपनी शाखाओं को कण्ठस्थ करके उनकी रक्षा में तत्पर हो गया। ब्राह्मण लोग जब और भी संसार के बन्धनों में पड़ गये, तब हमारे पूर्वजों ने प्रत्येक वेद की रुद्राष्टाध्यायी लिख कर यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को कण्ठस्थ कराने की प्रथा जारी की।

वेदों में तीन प्रकार के मन्त्र पाये जाते हैं—ऋक्, यजु और साम। ऋक् मन्त्र वे कहलाते हैं जिनकी व्यवस्था छन्दःशास्त्र के अनुसार पाद व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था पर निर्भर रहती है। यजुः वे मन्त्र कहलाते हैं जो कि गद्यात्मक विभागों में विभक्त होते हैं और उन गद्यभागों का प्रयोग (विनियोग) कर्मकाण्ड में होता है।

साम का अर्थ

साम—ऋचाओं पर गाया जाता है। साम शब्द (सा + आम) इन दो शब्दों से बना है। सा (वह ऋचा) आम (स्वर) अर्थात् स्वरों पर जो ऋचा गाई जाती है वह साम कहलाती है।

मंगल—ऋक् ज्ञानकाण्ड, यजुः कर्मकाण्ड और साम उपासना काण्ड है। सामवेद में वे ही उपासना के मन्त्र हैं, जिनका गायन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋषियों ने किया है। छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है कि 'ऋच्यधूढं साम गीयते' अर्थात् ऋचा के ऊपर साम-गान किया जाता है, बिना ऋचा के साम-गान नहीं हो सकता, यह बृहदारण्यक उपनिषद् में लिखा है—'सा च अमश्चेति तत् साम्नः सामत्वम्' बृ० १।३।२२।

साम संहिता के भेद:—साम संहिता दो प्रकार की होती है—एक छन्दः संहिता और दूसरी गान संहिता। छन्दः संहिता में गायत्री, अनुष्टुब्, त्रिष्टुब्, जगती, बृहती आदि छन्दों में ऋचायें लिखी होती हैं। इन सब छन्दों के लक्षण पिङ्गल सूत्र में महर्षि पिङ्गलाचार्य ने स्पष्ट किये हैं। इस छन्दः संहिता के मन्त्रों के ऊपर उदात्तादि वर्णों का संकेत १।२।३। लिख कर दिया जाता है, जैसा कि ऋग्वेद में केवल लकीर खींच कर दिया जाता है। यह स्वर तीन हैं—उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। ऋग्वेद में उदात्त का चिह्न कुछ नहीं अर्थात् अनुदात्त तथा स्वरित चिह्नों के अतिरिक्त जो वर्ण है वही उदात्त है। ऐसा समझना चाहिये। अनुदात्त का चिह्न अक्षर के नीचे एक आड़ी लकीर (अग्न॒) और स्वरित का चिह्न अक्षर के ऊपर खड़ी लकीर (आ या॑हि) होता है। इसी प्रकार सामवेद में उदात्त का चिह्न (१) अङ्क है (आ॒ या हि), सामवेद में स्वरित का चिह्न (२) का अङ्क है (आ या॑ हि) और अनुदात्त दिखाने के लिये सामवेद में (३) का अङ्क लिखा जाता है (वी॑ त ये)।

नीचे ऋक् और साम का प्रथम मन्त्र उदात्तादि ज्ञान के लिए दिया जाता है—

ऋग्वेद—ॐ अग्न॒ आया॑हि वी॒तये॑ गृणा॒नो ह॒व्य दा॑तये।
निहोता॑ सत्सि ब॒र्हिषि ॥ ऋग्वेद० ६। १६। १०।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ ३ १ २
सामवेद—अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये।
१ २र ३ १ २
निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ साम० १।१।१।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

साम में एक विशेषता और होती है—वह यह कि कहीं कहीं वर्णों के ऊपर (र) (क) और (उ) लिखा होता है—

(क) इन का रहस्य यह है कि—जब दो उदात्त इकट्ठे हो जाते हैं और तीसरा उनके आगे स्वरित आ जाता है तब—प्रथम उदात्त वर्ण पर (१) का अङ्क लगा दिया जाता है। तीसरे स्वरित वर्ण पर (रकार

१ २र
सहित २) का अङ्क लगाया जाता है। जैसे (नि हो ता)।

(ख) अनुदात्त वर्ण से परे यदि स्वरित हो तो उस पर भी (२ र) लगाया जाता है। परन्तु उस स्वरित वर्ण से पूर्व अनुदात्त पर (३ क)

३क २र
यह चिह्न लगाया जाता है। जैसे (त न्वा) सा० ५२।

(ग) जब दो उदात्त इकट्ठे हों और उनके आगे यदि अनुदात्त वर्ण हो तब प्रथम उदात्त पर (२ ३) का चिह्न लगता है और दूसरा उदात्त वर्ण चिह्न रहित रहता है। इस प्रकार (र, क, उ) का स्वर न्यास तथा छन्दःसंहिता का वर्णन समाप्त होता है।

अब गान संहिता के बारे में लिखते हैं—

गानसंहिता—साम गान ऋचाओं पर होता है यह पहले कह चुके हैं—उन उन ऋचाओं के गान, अनेक प्रकार से, अनेक ऋषियों ने किए हैं। जो गान जिस ऋषि ने किया है वह उसी ऋषि के नाम से प्रसिद्ध है। जैसे गायत्री मन्त्र का गान तवश्याव ऋषि ने किया है उसका नाम तवश्यावीय है, इत्यादि अनेक गान हैं जो कि संहिताओं में छपे हैं।

गान में स्वर—आठ विकार होते हैं जो कि गान में आते हैं।

विकार:—ऋचाओं का जब साम गान किया जाता है तब उस गान में आठ तरह के विकार किये जाते हैं। ये विकार अक्षरों में होते हैं। इनके नाम निम्नलिखित हैं और इनके उदाहरण भी नीचे दिये जाते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ विकार :—एक वर्ण के स्थान पर दूसरे वर्ण का प्रयोग जैसे अग्निम् की जगह । ओग्नाई ।

२ विश्लेष :—सन्धि विच्छेद करना जैसे (वीतये) की जगह (वो इ तो या ऽ २ इ)

३ विकर्षण :—(लंबा खींचना) जैसे (ये) की जगह = (तो या ऽ २ इ)

४ अभ्यास :—(बार बार पढ़ना) जैसे (तो$_2$ यायि, तो$_2$ यायि)

५ विराम :—(एक पद के मध्य में रुक जाना) जैसे (गृणानो हव्यदातये) की जगह (गृणानोह । व्यदातये)

६ स्तोभ :—निरर्थक कुछ वर्ण गान की सुन्दरता के लिए बढ़ा दिये जाते हैं जैसे—औहोवा, हाउ ।

७ आगम :—शब्द के अन्दर वर्णान्तर का प्रवेश करना जैसे (वरेण्यम्) की जगह (वरेणियोम्)

८ लोप :—मन्त्र के किसी वर्ण को न बोलना जैसे (प्रचोदयात्) की जगह प्र चो १ २ ऽ १ २ । हुंम् आ २ दायो आ ३ ४ ५ ।

स्वर, ग्राम, मूर्छना = नारदीय शिक्षा में स्वरों के सम्बन्ध में लिखा है—

सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामाः मूर्छनास्त्वेकविंशतिः ।
ताना एकोनपंचाशत् इत्येतत्स्वरमण्डलम् ॥ ४ ॥ प्र० द्वि० कं०
षड्जश्च ऋषभश्चैव गान्धारो मध्यमस्तथा ।
पञ्चमो धैवतश्चैव निषादः सप्तमः स्वराः ॥ ५ ॥

स्वर :—सात स्वर हैं । तीन ग्राम होते हैं । इक्कीस मूर्छनायें होती हैं ।

स्वरों के नाम—षड्ज ऋषभ गान्धार मध्यम पञ्चम धैवत निषाद
सा रे ग म प ध नि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्राम—षड्जग्राम, मध्यमग्राम और गान्धारग्राम। षड्जग्राम की उत्पत्ति भूलोक से, मध्यमग्राम की उत्पत्ति भुवः-लोक से, गान्धार ग्राम की उत्पत्ति स्वर्ग लोक से।

मूर्छना—षड्जग्राम में १४ मूर्छनायें होती हैं, मध्यम ग्राम में २० मूर्छनायें होती हैं तथा गान्धार ग्राम में १५ मूर्छनायें होती हैं।

गान के गुण:—गान के दश गुण होते हैं, वे ये हैं—रक्त, पूर्ण, अलङ्कृत, प्रसन्न, व्यक्त, विक्रुष्ट, श्लक्ष्ण, सम, सुकुमार और मधुर।

रक्त—जब वीणा, वेणु और गवैये का स्वर एक में मिल जाता है तब रक्त गुण होता है।

पूर्ण—जब मध्यमादि स्वर, स्वरों की श्रुति, छन्द, पाद के अक्षर पूरे होकर स्पष्ट रूप से बोले जाते हैं तब पूर्ण गुण होते हैं।

अलङ्कृत—जब कण्ठ से युक्त वाणी को नीचे हृदय में रखकर मूर्धा में जोर देकर गाते हैं तब अलंकृत गुण होता है।

प्रसन्न—प्रसन्न गुण वह होता है जिसमें कण्ठ के दबाने से गद्गद न होने का स्पष्ट ज्ञान होता है।

व्यक्त—जिसमें प्रकृति, प्रत्यय, लोप, आगम, वर्णविकार का ज्ञान होता रहता है, वह व्यक्त गुण कहलाता है।

विक्रुष्ट—जो जोर से बोला जाय, पद और पद के अक्षर व्यक्त हों, वह विक्रुष्ट गुण है।

श्लक्ष्ण—जिसमें न जल्दी न देर से, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित स्वर और हेला (दो तीन बार पदों को दुहराना) हो, वह श्लक्ष्ण गुण है।

सम—वह गुण है जिसमें गला दबाकर अव्यक्त वर्णों का मृदुतापूर्वक उच्चारण किया जाय।

सुकुमार—जिसमें कोमल प्रहृष्ट मुख से पद और अक्षरों के गुणों से परिपूर्ण, सुखकर गान हो, वह सुकुमार गुण है।

मधुर—जिसमें स्वभाव से ही ललित पद, अक्षर और गुणों की समृद्धि हो, वह मधुर गुण है। इन दशों गुणों वाला गान कहलाता है। इनसे विपरीत दूषित गान होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वरबोधक तालिका

संख्या	स्वर का नाम	स्वर बोधक वर्ण	स्वर से तृप्ति	स्वरों के रंग	स्वरों के वर्ण	स्वर कहां से आया है	स्वरों के उत्पत्ति स्थान	किस देवता नेगाया	स्वरों के देवता	विशेष
१	षड्ज	सा	देवों की	कमल के फूल का	ब्राह्मण	मोर से	कण्ठ	अग्नि	ब्रह्मा	षड्ज का उच्चारण ६ स्थानों से होता है अतः षड्ज कहलाता है। नासिका, कण्ठ, तालु, हृदय, जिह्वा, दन्त ये ६ स्थान हैं।
२	ऋषभ	रे	ऋषियों की	तोते के पंख का	क्षत्रिय	गौ से	शिर	ब्रह्मा	अग्नि	नाभि से उठा वायु कंठ और शिर में टक्कर लेता है। बैल की तरह शब्द होने के कारण ऋषभ कहलाता है।
३	गान्धार	ग	पितरों की	सुवर्ण का	आ. वै. आ. शू.	भेंड़े बकरी से	अनुनासिक	सोम	गौ	नाभि से उठा वायु कण्ठ और शिर में टक्कर लेकर जब नासिका के द्वारा प्रकट होता है तब गांधार कहलाता है।
४	मध्यम	म	गन्धर्वों की	कुन्द के फूल का	ब्राह्मण	क्रौंच से	हृदय	विष्णु	ब्रह्मा	नाभि से उठा हुआ वायु हृदय में लग कर फिर नाभि को प्राप्त कर जो नाद करता है वह मध्यम कहलाता है।
५	पंचम	प	देव, पितर, ऋषियों की	काला	ब्राह्मण	कोयल से	गला और हृदय	नारद	सोम	नाभि से उठा हुआ वायु उर और हृदय तथा कण्ठ और शिर में टकराने के कारण पंचम कहलाता है (यह पाँच स्थानों से निकलता है)।
६	धैवत	ध	यक्षों की	पीला	क्षत्रिय	अश्व से	मस्तक	तुम्बुरु	आदित्य	
७	निषाद	नि	भूत समुदाय की	सतरंगा	आ. वै. आ. शू.	हाथी से	सब सन्धियों से	तुम्बुरु	आदित्य	

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्राध्याय पाठ करने की विधि

पाठ करने वालों को अपना शरीर वीणा समझना चाहिए। जैसे गायक सितार पर गाना गाते हैं उसी प्रकार सामगान करने वालों का शरीर ही वीणा का काम करता है। इसमें स्वरों का बोध अंगुलियां और अंगूठे कराते हैं।

पूर्व की तरफ या उत्तर की तरफ मुख करके पद्मासन से शुद्ध कुशासन पर मृगछाला या ऊनी आसन बिछा कर बैठे और दोनों हाथों को अपने घुटनों पर रख लेवे।

पहिले ॐ का उच्चारण करके व्याहृतियों का उच्चारण करे (भूः भुवः स्वः ये व्याहृतियां हैं)। फिर गायत्री मन्त्र का उच्चारण करे। तब हाथ को गौ के कर्ण की तरह खोल कर रखे। वर्णों का उच्चारण हाथ और मुख दोनों से करना चाहिए और जिस प्रकार वर्णों का प्रारंभ करे उसी प्रकार उनकी समाप्ति करे।

साम गान में दोनों हाथों द्वारा स्वर लिये जाते हैं। दाहिना हाथ षड्ज आदि स्वरों के प्रयोग में काम आता है और बायां हाथ उदात्तादि स्वर के, जो मन्त्र के ऊपर चिह्न लगे रहते हैं, उनके प्रयोग में काम आता है। बांये हाथ की अंगुलियों का प्रयोग कम होता है। दाहिने हाथ की अंगुलियों का अधिक होता है। दाहिने हाथ के अंगूठे से—अंगुलियों के मध्य पर्व का स्पर्श करे। एक से लगाकर दस तक स्वरों के चिह्न साम गान में होते हैं। उन स्वरों को हाथ की अंगुलियों तथा अंगूठे से लेने का प्रकार नीचे दिया जाता है। इन दशों स्वरों के नाम तथा चिह्न नीचे दिये हुए हैं।

इसमें प्रमाण नारदीय शिक्षा का यह है—

अंगुष्ठस्योत्तमे क्रुष्टो ह्यङ्गुष्ठे प्रथमः स्वरः।
प्रदेशिन्यां तु गान्धारः ऋषभस्तदनन्तरम् ॥ १ ॥
अनामिकायां षड्जस्तु कनिष्ठिकायां च धैवतः।
तस्याधस्ताच्च योन्यास्तु निषदं तत्र विन्यसेत् ॥ २ ॥
अपर्वत्वादसंज्ञत्वादव्ययत्वाच्च नित्यशः।
मन्द्रो नहि भूतस्तु परिस्वार इति स्मृतः ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वर बोधक चिह्न

१ क्रुष्ट

२ गान्धार

३ ऋषभ

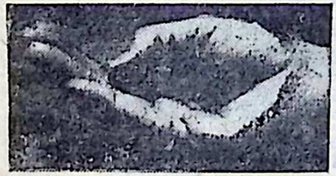

४ षड्ज

५ धैवत

६ निषाद

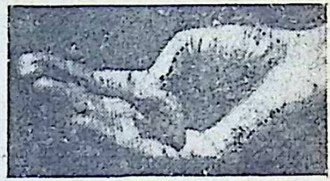

७ अभिगीत

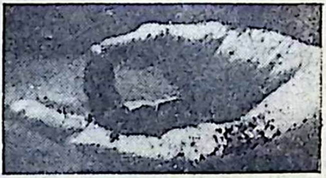

८ विनत

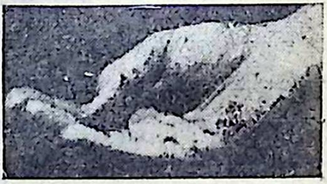

९ प्रणत

१० उत्स्वरित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वर-संख्या	मन्त्रपाठ-चिह्न	हाथों में अंगुलि-निवेश
	।१।	अंगूठा उठा रहे और दाहिना हाथ खुला गौ के कान की तरह रहे।
	।२।	तर्जनी अंगुली की मध्य रेखा पर अंगूठा रहे।
	।३।	मध्यमा अंगुली की मध्य रेखा पर अंगूठा रहे।
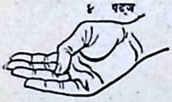	।४।	अनामिका अंगुली की मध्य रेखा पर अंगूठा रहे।
	।५।	कनिष्ठिका अंगुली की मध्य रेखा पर अंगूठा रहे।
	।६।	कनिष्ठिका अंगुली की मूल रेखा पर अंगूठा रहे।
	।७।	तर्जनी के नीचे से अंगूठे को ऊपर उठाना (जैसे रुपया बजाया जाता है)।
	२	अंगूठे को तर्जनी से कनिष्ठिका तक सब अंगुलिओं की मध्य रेखा पर घुमाना।
	विर ९	तर्जनी मूल से उसके अग्र भाग तक अंगूठा चलाना और ऊपर रोक देना।
	$\frac{१}{२}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{४}$ $\frac{१}{५}$	तर्जनी के ऊपर से अंगूठे को घुमाते हुए कनिष्ठिका तक ले आना।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नोट— जब दो, तीन, चार, पाँच या जो संख्या केवल लिखी रहती है तब गान्धार, ऋषभ, षड्ज, धैवत सब स्वरों पर अंगूठा रखा जाता है जैसे (ओ २ ३ ४ ५ ई डा । ३ ।)

वाम हस्त का प्रयोग

वाम हस्त का प्रयोग मन्त्रों के ऊपरी भाग पर लिखे हुए उदात्तादि चिह्न १ । २ । ३ के साथ आये हुए (र) के साथ होता है । प्रथम (र) पर कनिष्ठिका अंगुली मोड़ कर हाथ की गद्दी पर लगती है । दूसरे (र) पर अनामिका । तीसरे (र) पर मध्यमा । चौथे (र) पर तर्जनी । और पंचम (र) पर अंगूठा तर्जनी पर लग कर मुठ्ठी बंद हो जाती है और फिर खोल कर मुठ्ठी पूर्वोक्त क्रम से पुनः बन्द हो जाती है । इस प्रकार (रेफ) का प्रभाव उच्चारण पर पड़ता जाता है ।

नोट— जहाँ (२ ऽ) या (२̂) ऐसा चिह्न हो वहाँ गान्धार स्वर होता है और दीर्घ उच्चारण होता है ।

जहाँ ॥ ३ ॥ या (त्रिः) लिखा हो उस शब्द का तीन बार उच्चारण होता है ।

जहाँ ॥ २ ॥ (द्विः) लिखा हो वहाँ दो बार उच्चारण होता है ।

जहाँ ∧ ऐसा चिह्न होता है वहाँ दीर्घ उच्चारण होता है ।

जहाँ ३ इ ऐसा चिह्न होता है वहाँ इ का उच्चारण 'ऐ' हो जाता है । जो अक्षर अङ्क रहित होते हैं उनका उच्चारण द्रुत गति से होता है ।

इस प्रकार साम गान करने वाले और श्रद्धापूर्वक सुनने वाले स्वर्गलोक को अनन्तकाल के लिये प्राप्त करते हैं । यह साम गान विधिपूर्वक किया हुआ अपने स्वरों के द्वारा सबको तृप्त करता है । अत एव मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वेद का अध्ययन आजीवन करे । वेद के अभ्यास से मनुष्य को पूर्व जन्म की स्मृति होने लगती है और इस पूर्व जन्म की स्मृति से वेदाभ्यास में पुनः प्रवृत्ति हो जाती है । इसी प्रवृत्ति द्वारा मनुष्य को परम गति प्राप्त होती है । अतः हम सभी को इस आदर्श को आगे रख कर चलना चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सामवेद के मन्त्र यज्ञ के उद्गाता गायन करते हैं। छान्दोग्य उपनिषद् (१।१।२) में लिखा है 'ऋचः साम रसः' यानी ऋचाओं का रस साम है। साम के बिना ऋचायें नीरस हैं। साम गायन से ऋचाओं में रस आ जाता है।

कहा जाता है कि सामवेद की एक हजार शाखायें थीं। पातञ्जल महाभाष्य में लिखा है कि 'सहस्रवर्त्मा सामवेदः' अर्थात् सामवेद की एक हजार शाखायें हैं। इनमें सब शाखायें लुप्त होकर १६ शाखायें बची थीं लेकिन आज कल तो तीन ही कौथुम, राणायनीय और जैमिनीय उपलब्ध हैं। कौथुम शाखा का प्रचार गुजरात में, राणायनीय शाखा का प्रचार महाराष्ट्र में और जैमिनीय शाखा का प्रचार कर्नाटक में पाया जाता है। कौथुमी और राणायनीय शाखाओं के ब्राह्मण ग्रन्थ ८ हैं (१) ताण्ड्यब्राह्मण, (२) षड्विंश ब्राह्मण (३) मन्त्र ब्राह्मण, (४) साम विधान ब्राह्मण, (५) दैवत ब्राह्मण, (६) आर्षेय ब्राह्मण, (७) संहितोपनिषद् ब्राह्मण, (८) वंश ब्राह्मण। जैमिनीय शाखा का जैमिनीय ब्राह्मण।

साम वेद के दो उपनिषद् हैं (१) छान्दोग्य उपनिषद्, (२) केन उपनिषद्।

सामवेद के ७ श्रौत सूत्र ग्रन्थ हैं।

(१) माशक श्रौतसूत्र (२) लाट्यायन श्रौतसूत्र (द्रौह्यायण श्रौतसूत्र (४) अनुपद श्रौतसूत्र (५) कुसुम श्रौतसूत्र (६) निदान सूत्र (७) जैमिनि श्रौतसूत्र।

सामवेद के गृह्यसूत्र ४ हैं—

(१) गोभिल गृह्य सूत्र (२) खादिर गृह्य सूत्र (३) पितृमेघ गृह्य सूत्र (४) जैमिनि गृह्य सूत्र।

सामवेद मन्त्र-संख्या में सब से छोटा होते हुए भी ईश्वर की उपासना की दृष्टि से सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। सामवेद पर संस्कृत में सायण, माधव व भरत स्वामी आदि के भाष्य हैं। सामवेद के हिन्दी में स्वामी तुलसी राम, श्री जयदेव शर्मा, श्री वीरेन्द्र शास्त्री व पं० हरिश्चन्द्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जी आदि के भाष्य हैं। अंग्रेजी में Prof. Benfey and Dr. Griffith आदि के भाष्य हैं।

सामवेद की कौथुमी शाखा के ग्रामे गेय व आरण्यक गान, स्वाध्याय मण्डल, सतारा से श्री सातवलेकर जी ने छपवाये हैं जिनको श्री नारायण स्वामी दीक्षित जी सामवेदी, मैसूर ने संग्रह किया है।

सामवेदीय रुद्री के ग्रन्थ काशी के कई छापाखानों से छपे हैं लेकिन किसी रुद्री में संहिता के मन्त्र नहीं हैं। इस पुस्तक में संहिता मन्त्र, मन्त्र का हिन्दी भाष्य और अंग्रेजी भाष्य व मन्त्र का गायन एक ही स्थान पर संग्रह करने की चेष्टा की गई है। वेद की ऋचाओं के संस्कृत विद्वानों ने कई कई अर्थ किये हैं, लेकिन इस पुस्तक में ईश्वरोपासना को मूल मानते हुए सीधा अर्थ संग्रह करने का प्रयास किया गया है। अंग्रेजी भाष्य Dr. Griffith के भाष्य का ही संग्रह है। जिन मन्त्रों का अंग्रेजी भाष्य नहीं था, उनका भी भावार्थ अंग्रेजी में दे दिया गया है।

विजयदशमी, २०१७ वि०
लक्ष्मणपुरी (उ० प्र०)

यमुनाप्रसाद त्रिपाठी बी. ए.
आई. पी. एस.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोभिलोक्त 'महारुद्रपरिशिष्ट' ग्रन्थाधारेण

रुद्रस्वाहाकारः

१ ॐ अध्वराणां राज्ञे नमः स्वाहा।
२ ॐ रुद्राय नमः स्वाहा।
३ ॐ होत्रे नमः स्वाहा।
४ ॐ सत्ययजाय नमः स्वाहा।
५ ॐ अग्नये नमः स्वाहा।
६ ॐ हिरण्यरूपाय नमः स्वाहा।
७ ॐ पुरुहूताय नमः स्वाहा।
८ ॐ सत्वने नमः स्वाहा।
९ ॐ गवे नमः स्वाहा।
१० ॐ शाकिने नमः स्वाहा।
११ ॐ पुरुष्टुताय नमः स्वाहा।
१२ ॐ सत्वाय नमः स्वाहा।
१३ ॐ गोरूपाय नमः स्वाहा।
१४ ॐ शक्तिरूपिणे नमः स्वाहा।
१५ ॐ पुरुहूतनाम्ने नमः स्वाहा।
१६ ॐ सत्त्वरूपाय नमः स्वाहा।
१७ ॐ गोदेवाय नमः स्वाहा।
१८ ॐ शक्तिनाम्ने नमः स्वाहा।
१९ ॐ पुरन्दराय नमः स्वाहा।
२० ॐ सत्वननाम्ने नमः स्वाहा।
२१ ॐ गोनाम्ने नमः स्वाहा।
२२ ॐ शाकिनदेवाय नमः स्वाहा।
२३ ॐ आज्यदोहाय नमः स्वाहा।
२४ ॐ चिदोहाय नमः स्वाहा।
२५ ॐ चयोहाय नमः स्वाहा।
२६ ॐ ज्ञताय नमः स्वाहा।
२७ ॐ अधिपतये नमः स्वाहा।
२८ ॐ मित्रपतये नमः स्वाहा।
२९ ॐ क्षत्रपतये नमः स्वाहा।
३० ॐ स्वःपतये नमः स्वाहा।
३१ ॐ धनपतये नमः स्वाहा।
३२ ॐ वृत्रघ्ने नमः स्वाहा।
३३ ॐ स्वराजे नमः स्वाहा।
३४ ॐ मघोने नमः स्वाहा।
३५ ॐ वृषाय नमः स्वाहा।
३६ ॐ त्वष्ट्रे नमः स्वाहा।
३७ ॐ शचीपतये नमः स्वाहा।
३८ ॐ गयाय नमः स्वाहा।
३९ ॐ स्रृणिकाय नमः स्वाहा।
४० ॐ विश्वस्मै नमः स्वाहा।
४१ ॐ अभवाय नमः स्वाहा।
४२ ॐ विश्वप्रजारूपिणे नमः स्वाहा।
४३ ॐ अपवथानाय नमः स्वाहा।
४४ ॐ अर्घाय नमः स्वाहा।
४५ ॐ सोर्घाय नमः स्वाहा।
४६ ॐ सोमपाय नमः स्वाहा।
४७ ॐ परमेष्ठिने नमः स्वाहा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४८ ॐ दिविषद्भ्यो नमः स्वाहा।
४९ ॐ अन्तरिक्षसद्भ्यो नमः स्वाहा।
५० ॐ पृथिवीषद्भ्यो नमः स्वाहा।
५१ ॐ अप्सुषद्भ्यो नमः स्वाहा।
५२ ॐ दिक्षुसद्भ्यो नमः स्वाहा।
५३ ॐ आशासद्भ्यो नमः स्वाहा।
५४ ॐ धन्वद्भ्यो नमः स्वाहा।
५५ ॐ भुवनाधिपतये नमः स्वाहा।
५६ ॐ ब्रह्माधिपतये नमः स्वाहा।
५७ ॐ क्षत्राधिपतये नमः स्वाहा।
५८ ॐ स्वर्गाधिपतये नमः स्वाहा।
५९ ॐ स्वःपतिरुद्ररूपाय नमः स्वाहा।
६० ॐ उत्ततिभ्यो नमः स्वाहा।
६१ ॐ उत्तन्वानेभ्यो नमः स्वाहा।
६२ ॐ निषङ्गिभ्यो नमः स्वाहा।
६३ ॐ उपवीतिभ्यो नमः स्वाहा।
६४ ॐ अस्यद्भ्यो नमः स्वाहा।
६५ ॐ प्रतिदधानेभ्यो नमः स्वाहा।
६६ ॐ प्रविध्यद्भ्यो नमः स्वाहा।
६७ ॐ प्रव्याधिनेभ्यो नमः स्वाहा।
६८ ॐ त्सरद्भ्यो नमः स्वाहा।
६९ ॐ त्सारिभ्यो नमः स्वाहा।
७० ॐ श्रितेभ्यो नमः स्वाहा।
७१ ॐ श्रायिभ्यो नमः स्वाहा।
७२ ॐ तिष्ठद्भ्यो नमः स्वाहा।
७३ ॐ उपतिष्ठद्भ्यो नमः स्वाहा।
७४ ॐ यते नमः स्वाहा।
७५ ॐ वियते नमः स्वाहा।
७६ ॐ पथे नमः स्वाहा।
७७ ॐ विपथाय नमः स्वाहा।
७८ ॐ विश्वाधिपतिरुद्राय नमः स्वाहा।
७९ ॐ ब्रह्माधिपतये नमः स्वाहा।
८० ॐ राजन्याधिपतये नमः स्वाहा।
८१ ॐ स्वर्गरूपाय नमः स्वाहा।
८२ ॐ धनेश्वराय नमः स्वाहा।
८३ ॐ अन्नादाय नमः स्वाहा।
८४ ॐ अन्नपतये नमः स्वाहा।
८५ ॐ एकाक्षराय नमः स्वाहा।
८६ ॐ अवपन्नादाय नमः स्वाहा।
८७ ॐ रुद्राय नमः स्वाहा।
८८ ॐ तीरसदे नमः स्वाहा।
८९ ॐ स्थिराय नमः स्वाहा।
९० ॐ स्थिरधन्वने नमः स्वाहा।
९१ ॐ प्रतिपदाय नमः स्वाहा।
९२ ॐ पटरिणे नमः स्वाहा।
९३ ॐ त्र्यम्बकाय नमः स्वाहा।
९४ ॐ कपर्दिने नमः स्वाहा।
९५ ॐ आश्रायेभ्यो नमः स्वाहा।
९६ ॐ प्रत्याश्रायेभ्यो नमः स्वाहा।
९७ ॐ क्रव्येभ्यो नमः स्वाहा।
९८ ॐ विरिम्फेभ्यो नमः स्वाहा।
९९ ॐ संवृते नमः स्वाहा।
१०० ॐ विवृते नमः स्वाहा।
(शतधा वि० पक्षे० स्वा० कारः)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोभिलोक्त महारुद्रपद्धतौ एतानि नामानि उक्तानि ।

तत्रैव उक्तम्—

आवोराजादिभिर्मन्त्रैरथवा रुद्रनामभिः ।
तिलाज्येन (यवाज्येन) व्रीहियवैर्हव्येन येन केन च ॥
यथासंभवमेकेन द्वाभ्यां बहुभिरेव वा ।
इज्यते रुद्रइष्टेन पत्रपुष्पफलेन च ॥
यद् यदिष्टतमं लोके यच्चापि प्रियमात्मनः ।
तत्तद् रुद्राय होतव्यं सर्वं त्रिमधुसंयुतम् ॥
इत्येवं रुद्र इष्ट्वाथ रुद्राणां शक्तिरिज्यते ।
सिताज्यमधुयुक्तेन पायसेन तिलादिना ॥

इत्यादि तत्रैव द्रष्टव्यम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्रपीठ

१००	९०	८०	७०	६०	५०	४०	३०	२०	१०
९९	८९	७९	६९	५९	४९	३९	२९	१९	९
९८	८८	७८	६८	५८	४८	३८	२८	१८	८
९७	८७	७७	६७	५७	४७	३७	२७	१७	७
९६	८६	७६	६६	५६	४६	३६	२६	१६	६
९५	८५	७५	६५	५५	४५	३५	२५	१५	५
९४	८४	७४	६४	५४	४४	३४	२४	१४	४
९३	८३	७३	६३	५३	४३	३३	२३	१३	३
९२	८२	७२	६२	५२	४२	३२	२२	१२	२
९१	८१	७१	६१	५१	४१	३१	२१	११	१

अतः परं प्रवक्ष्यामि रुद्रस्थापनपूजनम्।
सुगुप्ते पुण्यदेशे च ईशाने मण्डपस्य च ॥ १ ॥
रुद्रैकशतरूपाणां वेद्यां वै स्थापनं बुधैः।
केचिदिच्छन्त्यति रुद्रे केचिदिच्छन्ति वै द्वयोः ॥ २ ॥
रेखा एकादश कार्याः पूर्वउत्तरदिग्गताः।
कोष्ठानां शतसम्पत्तिर्जायते रुद्रपीठके ॥ ३ ॥
रुद्रस्य शतनामानि वक्ष्येऽहं कर्मभेदतः।
अध्वराणां च राजानं रुद्रं होतारमेव च ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्ययजं तथाग्निं च हिरण्यरूपमेव च।
पुरुहूतं च वै तत्र सत्वनं गां च शाकिनम् ॥ ५ ॥
पुरुष्टुतं च सत्वं च गोरूपं शक्तिरूपिणम्।
पुरुहूतनामानं च सत्वरूपं च वै तथा ॥ ६ ॥
गोदेवं शकिनामानं पुरन्दरमथापि च।
तथा सत्वननामानं गोनामानमथापरम् ॥ ७ ॥
शाकिनदेवं तत्रैव स्थापयेन्नाम भेदतः।
तद्वो वर्गे रुद्रनाम्नां तथा देवव्रतेषु च ॥ ८ ॥
आज्यदोहं चिदोहं च च्योहं चैव तथाज्ञतम्।
अधिपतिं मित्रपतिं क्षत्रपतिं च स्वःपतिम् ॥ ९ ॥
धनपतिं च नामानं परयो नामभेदतः।
वृत्रहणं स्वराडं च मघवानं च वै वृषम् ॥ १० ॥
त्वष्टारं च शचीपतिं गयस्तृणिकमेव च।
विश्वं वै वाभवं विश्वाप्रजारूपिणमेव वा ॥ ११ ॥
अपवथानमर्द्धभाक् सोमपं परमेष्ठिनम्।
दिविषदोन्तरिक्षसदः पृथिवीषद एव च ॥ १२ ॥
अप्सुषदो दिक्षुसद आशासदश्च धन्वनः।
भुवनाधिपतिं चैव ब्रह्माधिपतिमेव च ॥ १३ ॥
क्षत्राधिपतिरुद्रं च स्वर्गाधिपतिमेव च।
स्वःपतिरुद्ररूपं च स्थापनं नामभेदतः ॥ १४ ॥
उत्तति न उत्तन्वानान् निषङ्गिणोपवीतिनः।
अस्यदः प्रतिदधानान् प्रविध्यदः शिवात्मकान् ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रन्याधिनः त्सरदश्च त्सारिणश्च श्रितावपि।
श्रायिणस्तिष्ठदश्चैव उपतिष्ठद् एव च॥ १६॥
यतं च वियतं चैव पन्थानं विपथं तथा।
विश्वाधिपतिरुद्रं च ब्रह्मणोऽधिपतिं तथा॥ १७॥
राजन्याधिपतिं चैव स्वर्गरूपं धनेश्वरम्।
अन्नादं चान्नपतिं च एकाक्षरं परं स्मृतम्॥ १८॥
अवपन्नादं च रुद्रं च तिरसदं तथा स्थिरम्।
स्थिरधन्वानं प्रतिरथं पटरिणं च त्र्यम्बकम्॥ १९॥
कपर्दिनं तथा श्रायात्प्रत्याश्रायांस्तथैव च।
क्रव्यांश्चैव, विरिंफांश्च संवृतं विवृतं तथा॥ २०॥

(महारुद्रपरि० ६ प्रपाठके—१-२०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सामवेद-स्वरूप

समुद्रवारिजातसन्निभितुल्यवक्त्रपुष्करान् ।
सरत्नशातकुम्भसत्पदस्थितान् मनोहरान् ॥
धृताक्षमाल्यकम्बुदक्षवामहस्तपङ्कजान् ।
सुकृष्णपङ्करुट्प्रभान् नमामि सामवेदकान् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ

सामवेदीयरुद्रजपविधिः

अथ सामवेदसाङ्गरुद्राध्यायजपः

इसके उपरान्त सामवेद रुद्राध्याय का जप कहा जाता है।

अविरलमदजलनिवहं भ्रमरकुलानीकसेवितकपोलम्।
अभिमतफलदातारं कामेशं गणपतिं वन्दे ॥ १ ॥

जिनके कपोलों पर बहुत से भौंरे गुंजार कर रहे हैं और जिनके मस्तक से निरन्तर मदजल की धारा बहती रहती है ऐसे कामनाओं के स्वामी तथा इच्छित फल के देने वाले, श्री गणेश जी की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

सम्पूजकानां परिपालकानां जितेन्द्रियाणाञ्च तपोधनानाम्।
देशे च राष्ट्रे च कुले च राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् महेशः ॥ २ ॥

भगवान् शंकर पूजा करने वाले, पालन करने वाले, जितेन्द्रिय तथा तपस्वी राजाओं के देश, राष्ट्र तथा कुल को शान्ति प्रदान करें ॥ २ ॥

तत्रादौ संकल्पपूर्वकाङ्गन्यासादिपूजाविधिः।

अब इसके पश्चात् संकल्पपूर्वक अङ्गन्यास इत्यादि पूजा की विधि कही जाती है।

तत्रानध्यायेष्वपि सांगस्य रुद्राध्यायस्य जपो भवति इतरे रुद्रीजपादयश्चत्वारो न भवन्ति।

उसमें अनध्याय होने पर भी साङ्ग रुद्राध्याय का जप होता है, इससे भिन्न रुद्री-जपादि चार नहीं होते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रक्षालितहस्तपादो बद्धशिखो यज्ञियदार्वासने कुशोत्तरे प्राङ्मुख उपविश्याचम्य अङ्गानि संस्पृश्य प्राणायामं कुर्यात् ।

इसके पश्चात् यजमान हाथ-पैर धोकर यज्ञ करने योग्य काठ की चौकी पर कुशासन पर पूर्व की तरफ़ मुँह करके बैठकर आचमन कर, शिखा को बाँधकर तथा इन्द्रियों को स्पर्श कर प्राणायाम करे ।

ततः गुरुभ्यो नमः । गणपतये नमः । श्रीसदाशिवाय नमः ।

इसके पश्चात् 'गुरुभ्यो नमः' 'गणपतये नमः' तथा 'सदाशिवाय नमः' का उच्चारण करते हुए गुरु, गणपति तथा सदाशिव को नमस्कार करे ।

इति नमस्कृत्य ताम्रपात्रे जलपुष्पाक्षतानि कृत्वा तत्पात्रं हस्तेनादाय अत्राद्य मासे पक्षे तिथौ वासर इति उच्चार्य श्रीशिवप्रीतये नित्यविधिरूपं श्रीमहादेवस्य पूजापूर्वकं साङ्गरुद्राध्यायस्य जपमहं करिष्ये । रुद्राभिषेकं वा । इति संकल्प्य—ॐ नमो भगवते रुद्राय । इति मन्त्रेण स्वात्मानं रुद्ररूपं भावयेत् ।

इस प्रकार यजमान नमस्कार करने के बाद ताँबे के वर्त्तन में जल, पुष्प तथा अक्षत को रखकर और उसके सहित उस बर्त्तन को हाथ में लेकर उस दिन, पक्ष, तिथि तथा महीने का नाम लेकर श्री महादेव जी की पूजा करने के बाद 'मैं शिव-प्रीत्यर्थ नित्यविधिस्वरूप साङ्ग (अङ्गोंसहित) रुद्राध्याय का जप अथवा रुद्राभिषेक करता हूँ' ऐसा संकल्प करे । तत्पश्चात् 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' इस मन्त्र से अपनी आत्मा को रुद्ररूप में भावित करे; जैसा कि शास्त्र-वाक्य है कि 'देवो भूत्वा देवं यजेत्' अर्थात् तद्रूप होकर उसकी उपासना या पूजा करे ।

ततोऽङ्गषडङ्गन्यासान् कुर्यात् । ते यथा—

तदनन्तर अङ्गभूत छै अङ्गों का न्यास करे । वे इस प्रकार हैं—

औंकारस्य ब्रह्मा ऋषिः दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता शिखायां न्यासे विनियोगः ॥ ॐ ॥

प्रस्तुत मन्त्र में शिखा के न्यास का विनियोग है, क्योंकि प्रत्येक मन्त्र का विनियोग, ऋषि, छन्द तथा देवता होता है । नीचे लिखे हुए मन्त्र का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मा ऋषि, दैवी और गायत्री छन्द तथा परमात्मा देवता है अतः इसे शिखा के न्यास का विनियोग मन्त्र समझना चाहिये।

व्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः। तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता। हिङ्कारस्य वसिष्ठ ऋषिः, दैवी गायत्री च्छन्दः, प्रजापतिर्देवता। शिरसि न्यासे विनियोगः।

यह शिर के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२उ ३कं २र १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २

ॐ भूर्भुवः स्वः॥ तत्सवितु र्वरेण्यं भर्ग्गो देवस्य धीमहि।

२ ३ १ २ ३ १ २

धियो यो नः प्रचोदयात्॥ १४६२॥

१ २ २ २ २

ॐ तत्सवितुर्वरेणियोम्। भार्गोदेवस्य धीमाही २।

२ १र र २ १ १ २

धियोयोनः प्रचो १ २ १ २। हुम्। आ २। दायो। आ

२ १ १

३ ४ ५॥ १॥

पद पाठः

२ ३ २ १२र १ २ ३ १ २ ३

तत्। सवितुः। वरेण्यम्। भर्गः। देवस्य। धीमहि।

१ २र ३ १ २ ३ १ २

धियः। यः। नः। प्रचोदयात्। प्र। चोदयात्॥ १४६२॥

जो पापों का नाश करता है और हमारी बुद्धि को शुद्ध करता है उसी भर्ग का हम ध्यान करते हैं।

May we attain that excellent glory of Savitar, the God: So may he Stimulate our prayers.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्त इति अग्निर्ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता ललाटन्यासे विनियोगः।

यह मस्तक के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४ ५ र ४ ५ ५ २ १ ३
ॐ नमस्तौ। होग्नाइ। ओजसा ३ इ। गृणा २ न्ता
५ १ ७ १ २ १ ३
२ ३ ४ इदे। वाकृष्टया २:। अमाये ३:। आ २ मा
५र र २ ३ १ १ १ १
२ ३ ४ औहोवा। त्रमर्दया २ ३ ४ ५॥ २॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः।
१ २३ १ २
अमैर मित्र मर्दय॥ ११॥

१ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
नमः। ते। अग्ने। ओजसे। गृणन्ति। देव। कृष्टयः।
२र ३ १ २ ३ १ २र ३
अमैः। अमित्रम्। अ। मित्रम्। अर्दय॥ ११॥

हे अग्ने! हे देव! मनुष्य-गण आपको बल के लिये नमस्कार करते हैं। आप बल से शत्रु को पीड़ित करें। (हे प्रकाशमय परमात्मन्! नमस्ते। मनुष्य अधिक बल पाने के लिए आप की स्तुति करते हैं। आप अपने बल तथा प्रभाव से बाहर और भीतर के शत्रुओं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, अहंकार आदि—को नष्ट कीजिये।)

O Agni., God, the people sing reverent praise to thee for strength:

with terrors trouble thou the foe!

रौरवयौधाजयोः साम्नो रुरुयुधाजिनौ ऋषी बृहती छन्दः सोमो देवता नेत्रयोर्न्यासे विनियोगः।

यह नेत्र के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२ र र १ ५ १ र
ॐ पुनानः सोमा ३ धारा २ ३ ४ या। आपोव-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र र र र र ३ २ १ २
सानोअर्षस्यारत्नधायोनिमृतस्यसा २ इदसाइ । ओहा
२ १ र र र २ १ २ २
३ उवा । उत्सोदेवोहिरा २ ३ हाइ । ओहा ३ उवा ।
२ १ २ ४ ५ ४ ५ ३ २
ण्यया । औ ३ होवा । हो ५ इ । डा ॥ ३ ॥ ॐ पुना
२ ४र ५ २ ३ ५ १ २
३ १ । ना ३ः सो । म । धारा २ ३ ४ या । आपो ३ ।
१ ३ २ ३ ५ २र १ २ १
वसा २ । नआ ३ ४ ५ । षा २ ३ ४ सो । आरात्नधाः ।
२र १ ३ २ ३ ५
यो । निमृता २ । स्यसा ३ ४ ५ इ । दा २ ३ ४ सी ।
२ १ ३ २ ३
उत्सा २ः । दाइवो २ । हिरा ३ ४ ५ । ण्या २ ३ ४
५
याः ॥ ४ ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
पु ना नः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
१ २ ३ १ २ र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आ रत्नधा योनि मृतस्यसीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः॥५११॥

३ २ ३ १ २र ३ २ १ २र ३ २
पुनानः । सोम । धारया । अपः । वसानः । अर्षसि । आ ।
३ १ २ ३ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
रत्नधाः । रत्न । धाः । योनिम् । ऋतस्य । सीदसि ॥ उत्सः । उत् ।
३ २ ३ १ २
सः । देवः । हिरण्ययः ॥ ५११ ॥

हे उपासक ! भक्ति से पवित्र होता हुआ तू कर्मों को करते हुए विराजमान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हो। रत्नों तथा श्रेष्ठ वस्तुओं को धारण करने वाला होकर ज्ञान के मूल कारण प्रभु को प्राप्त कर तथा देव बन कर सुख के साथ स्थित हो।

Cleansing thee, Soma, in thy stream, thou flowest in a watery robe.

Giver of wealth, sittest in the paee of Law, O God, a Fountain-made of Gold, 695.

प्राणापानयोः साम्नोर्वशिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता नासिकयोर्न्यासे विनियोगः।

यह नासिका के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र १र १र २ १ २
ॐ हाउ। ३। आयुः। ३। सात्यं। ३। इन्द्रन्नरो। ने
१ २र ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३
३ मधि। ताहवन्ताइ। यत्पारियाः। यूनज। ताइधि-
४ ५ २र १र २ १ २ ३ ४र ५ २र १र
यस्ताः। शूरोन्नृषा। ता ३ अव। सश्वकामाइ। आगो-
२१र २र ३ ४ ५ २र १र
मताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। हाउ। ३। आयुः। ३।
१र ३ २ ५र र ३ १ १ १ १
सात्यं। २। सत्या ३ ४। औहोवा। इ २ ३ ४ ५॥५॥
२र १र र २ र १ २ १
ॐ हाउ। ३। आनोहिय। ३। मनदोहं। ३। इंद्रन्नरो।
२ १ २र ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३
ने ३ मधि। ताहवन्ताइ। यत्पारियाः। यूनज। ताइधि-
४ ५ २र १र २ १ २ ३ ४र ५ २र १र
यस्ताः। शूरोन्नृषा। ता ३ अव। सश्वकामाइ। आगो-
२ १र २र ३ ४ ५ २र १र र २
मताइ। व्रजेभ। जातुवन्नाः। हाउ। ३। आनोहिय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ १ ३र २ ५र र
। ३ । मनदोहं । २ । मना २ ३ । दोहा ३ ४ । औहोवा ।
३ १ १ १ १
इ २ ३ ४ ५ ॥ ६ ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥
१ २र १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २र
इन्द्रम् । नरः । नेमधिता । नेम । धिता । हवन्ते । यत् । पार्याः ।
३ १ २ १ २र १ २र १ २र ३ १ २र ३
युनजते । धियः । ताः । शूरः । नृषाता । नृ । साता । श्रवसः । च ।
१ २र १ २र ३ २ ३ २ ३
कामे । आ । गोमति । व्रजे । भज । त्वम् । नः ॥ ३१८ ॥

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारम्भ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं । वही इन्द्र हमको अन्न, बल और यश (गौओं) की प्राप्ति करावे ।

Men call on Indra in the armed encounter that he may make the hymns they sing decisive.

Hero in combat and in love of glory, give us a protion of the stall of cattle.

बृहद्रथन्तरयोः साम्नोर्भरद्वाजवशिष्ठौ ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता कर्णयोर्न्यासे विनियोगः ।

यह कान के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

२र र र र २ २र १र र
ॐ औहोयित्वामिद्धिहवामहा ३ ए । सातौवाजा ।
१ २ ३ ५ १ २ ३र ४र ५ २ १
स्याकारा २ ३ ४ वाः । तुवा ३ ४ । औहोवा । वृत्रायिषु-
१ २ १ २ ३ ५ १र र २
वाइ । द्रासा ३ १ त् । पतिंन्ना २ ३ ४ राः । त्वाङ्काष्ठा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३र ४र ५ १ १ ५
३ ४ । औहोवा । सू २ अर्वा २ ३ ४ । ताः । उहुवा ६
५ १
हाउ । वा । हस् ॥ ७ ॥

१र २र ३ १ २र ३ १ २
त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥ २३४ ॥

२ १ २र ३ २ १ २र ३ १ २ २
त्वाम् । इत् । हि । ह वामहे । सातौ । वाजस्य । कारवः । त्वाम् ।
३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २र १ २र
वृत्रेषु । इन्द्र । सत्पतिम् । सत् । पतिम् । नरः । त्वाम् । काष्ठासु ।
१ २र
अर्वतः ॥ २२४ ॥

हे परमेश्वर ! ज्ञान, बल, धन तथा अन्न की प्राप्ति के लिए हम उपासक आप का ही स्मरण करते हैं। विघ्नों के समय श्रेष्ठ स्वामी तथा सज्जनों के पालक ! आपको मनुष्य स्मरण करते हैं। संग्रामों में अश्वारोही विजय के लिए आपको ही याद करते हैं।

That we may win us wealth and power we poets, verily, Call on thee!

In war men call on thee, rndra, the hero's Lord, in the steed's race-course call on thee.

२ऽ र र र १ १ २र र र
ॐ आभित्वाशूरनोनुमोवा । आदुग्धाइवधेनवई-
र २ २ १ र २ १
शानमस्यजगतः । सुवा २ ३ ईशाम् । आइशानमा २ ३
४ १ र ४र ५ ५
इन्द्रा ३ । तास्थू २ ३ ४ षा । ओवा ६ । हाउवा ।
१
अस् ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभित्वा शूर नो नुमोऽदुग्धा इव धेनवः ।
१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्रतस्थुषः ॥ २३३ ॥

३ २ ३ १ २र ३ ३ ३ १ २
अभि । त्वा । शूर । नोनुमः । अदुग्धाः । अ । दुग्धाः । इव । धेनवः ।
१ २र ३ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २र
ईशानम् । अस्य । जगतः । स्वर्दृशम् । स्वः । दृशम् । ईशानम् ।
३ ३ १ २
इन्द्र । तस्थुषः ॥ २२३ ॥

हे इन्द्र ! जैसे बिना दुही गायें अपने प्यारे वत्स को देखकर नम्र बनी हुई रंभाती हैं उसी प्रकार भक्ति से नम्र होकर हम आपको नमस्कार करते हैं । आप इस गतिशील तथा स्थिर दोनों प्रकार के जगत् के स्वामी हैं और सूर्य के समान स्वयं प्रकाशित तथा अन्यों को और सूर्य आदि को प्रकाशित करने वाले हैं ।

Like kine unmilked we call aloud, hero, to thee, and sing thy praise.

Looker on heavenly light, Lord of this moving world, Lord, Indra, of what moveth not !

सेतुषाम्णः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः परमात्मा देवता मुखे न्यासे विनियोगः ।

यह मुख के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

२र १र र २ २ १
ओँ हाउ । ३ । सेतूङ्स्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ ।
१र २र १र र २ २र २ र १
दानेनादानं । ३ । हाउ । ३ । अहमस्मिप्रथमजाऋता २ ३
२ १ १ १ १ २र १र र २ २ १
स्या २ ३ ४ ५ । हाउ । ३ । सेतूङ्स्तर । ३ । दुस्त । रान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ २र १र २ १ र २र १र २र

। ३ । अक्रोधेनक्रोधं । २ । अक्रोधेनक्रोधं । हाउ । ३ ।

र रर र १ २ १ १ १ १ २र

पूर्वन्देवेभ्यो अमृतस्यना २ ३ मा २ ३ ४ ५ । हाउ । ३ ।

१रर २ २ १ २ १ र २र

सेतूङ्स्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ । श्रद्धयाश्रद्धां । ३ ।

२र र र र र१ २ १ १ १ १

हाउ । ३ । योमाददातिसइदेवमा २ ३ वा २ ३ ४ ५

२र १र र २ २ १

त् । हाउ । ३ । सेतूङ्स्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ ।

२ १र र २ २र २ १

सत्येनानृतं । ३ । हाउ । ३ । अहमन्नमन्नमदन्तमा

२ १ १ १ १ २ऽ २र १र

२ ३ द्मी २ ३ ४ ५ । हाउ ३ वा । एषागतिः । ३ ।

२र १ २ १ १ २ १र २

एतदमृतं । ३ । स्वर्गच्छ । ३ । ज्योतिर्गच्छ । ३ ।

१र र र र २ १ १ १ १ १

सेतूङ्स्तीर्त्वाचतुरा २ ३ ४ ५ः ॥ ९ ॥

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वन् देवेभ्यो अमृतस्य नाम ।

२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २

यो मा ददाति स इदेवमा वदह मन्न मन्न मदन्त मद्मि ॥५९४॥

३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र

अहम् । अस्मि । प्रथमजाः । प्रथम । जाः । ऋतस्य । पूर्वम् ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र २ ३ १ २र २

देवेभ्यः । अमृतस्य । अ । मृतस्य । नाम । यः । मा । ददाति । सः ।

२ ३ २ ३ ३ ३ २ १ २र १ २र ३ १ २ ३

इत् । एव । मा । अवत् । अहम् । अन्नम् । अन्नम् । अदन्तम् । अद्मि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्म-(ईश्वर का) वाक्य है कि मैं (परमात्मा) इस जगत् की उत्पत्ति के पहले ही से हिरण्यगर्भ रूप में वर्त्तमान हूँ। सब देवों से भी पूर्व विद्यमान हूँ। मैं अमृत का स्वरूप हूँ। जो मुझको इस प्रकार जानकर अन्न आदि दान करता है वही सब की रक्षा करता है। मैं अन्न हूँ। प्राण को धारण करता हूँ। मैं ही कर्मफल भोग करने वाले प्राणी को अपने में लीन कर लेता हूँ।

I am the Eternal, existing long before creation and gods. I am Immortality—(without end). (Realising this) he who giveth in charity food etc. is subserving my purpose, as he helps in preserving life. I am life and the means of life both.

सन्ते पयाꣳसीति सोमऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता जिह्वायां न्यासे विनियोगः।

यह जिह्वा के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

१र २ १र २ १ २ ३
ओ३म् ओवा २। ३। सन्तेपया। सी ३ समु। यन्तु-
४ ५ २ १ ३ १ २र ३ ४ ५
वाजाः। संवृष्णिाया। नी ३ अभि। मातिषाहाः।
२र १र २ १ २र ३ ४ ५ २ १ २
आप्यायमा। नो ३ अमृ। तायसोमा। दिविश्रवा। सी
१ २ ३ ४ ५ १र १र ३
३ उत्त। मानिधिष्वा। ओवा २। २। ओ २। वा २
५र र १
३ ४। औहोवा। प्न्य। ३।॥ १०॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
सन्ते पयाꣳसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवाꣳस्युत्तमानि धिष्व॥६०३॥
२ ३ १ २र २ ३ ३ १ २र २
सम्। ते। पयाꣳसि। सम्। उ। यन्तु। वाजाः। सम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
वृष्ण्यानि । अभिमातिषाहः । अभिमाति । साहः । आप्यायमानः ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ ३ २
आ । प्यायमानः । अमृताय । अ । मृताय । सोम । दिवि ।
१ २र ३ १ २ ३
श्रवाꣳसि । उत्तमानि । धिष्व ॥ ६०३ ॥

हे सोम परमात्मन् ! अभिमानियों को दण्ड देने वाले आपके ज्ञान, रस, अन्न तथा समस्त बल हमें प्राप्त हों। परिपूर्ण आप अमृतस्वरूप उपासक जीवात्मा के लिए मोक्ष में उत्तम ज्ञान तथा सुखों को धारण कराइये।

Thou, O Lord Soma, who striketh low the presumptuous, bestow on us knowledge and strength to attain Salvation. Mayst thou help us in attaining it.

जराबोधेति अग्निर्ऋषिर्गायत्री छन्द रुद्रो देवता ग्रीवायां न्यासे विनियोगः।

यह ग्रीवा (गर्दन) के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

५ र र ४ ५ १ २ १ २ १
ॐ जराबोधोवा । ताद्विविड्ढाइ । विशाइवा २ ३
२ १र र ७ ४ ५ ३र २
इशो । यज्ञियाया । स्तोमाङ्रुद्रा २ ३ या । द । शीको ३
५
४ ५ इ । डा ॥ ११ ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय ।
१ २ ३ १ २ ३ २
स्तोमꣳ रुद्राय दृशीकम् ॥ १५ ॥

१ २र १ २र ३ २ ३ ३ १ २ ३ २ ३
जराबोध । जरा । बोध । तत् । विविड्ढि । विशेविशे । विशे । विशे ।
३ १ २ १ २ग ३ १ २ ३ २
यज्ञियाय । स्तोमम् । रुद्राय । दृशीकम् ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे स्तुति द्वारा जानने योग्य अग्ने परमात्मन् ! प्राणी मात्र के हित के लिए आप हमारे उस मन में प्राप्त होइये जहां यज्ञ के योग्य रुद्र की मनोहर स्तुति हो रही है ।

Help, thou who knowest lands, this work, a lovely Hymn in Rudra's praise.

व्रतपक्षयोः साम्नोः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता स्कन्धयोर्न्यासे विनियोगः ।

यह कन्धे के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

२र १ २ २र
ॐ हाउ । ३ । हङ् हङ् हङ् हङ् । ३ । हाउ ।३।
२ १ २ १ २र ३ ४ ५ २ १र २ १
इन्द्रन्नरो । ने ३ मधि । ताहवंताइ । यत्पारियाः । यूनज ।
२ ३ ४ ५ २र१र २ १ २ ३ ४र ५
तायिधियस्ताः । शूरोन्नृषा । ता ३ श्रव । सश्चकामाइ ।
२र १र २ १र २र ३ ४ ५ २र १
आगोमताइ । व्रजेभ । जातुवन्नाः । हाउ । ३ । हङ् हङ्
२ २ऽ २ ३ १ १ १ १
हङ् हङ् । ३ । हाउ ३ । वा ३ । ई २ ३ ४ ५ ॥ १२ ॥

२र १ २ २र
ॐ हाउ । ३ । इहा । हङ् हङ् हङ् । ३ । हाउ । ३ ।
२ १ २ १ २र ३ ४ ५ २ १र २ १
इन्द्रन्नरो । ने ३ मधि । ताहवन्ताइ । यत्पारियाः । यूनज ।
२ ३ ४ ५ २र २र २ १ २ ३ ४र ५
तायिधियस्ताः । शूरोन्नृषा । ता ३ श्रव । सश्चकामाइ ।
२र १र २ १र २र ३ ४ ५ २र १
आगोमताइ । व्रजेभ । जातुवन्नाः । हाउ । ३ । इहा ।
२ २ऽ ३ १ १ १ १
हङ् हङ् हङ् । ३ । हाउ ३ । वा ३ । ई २ ३ ४ ५ ॥ १३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्र न्नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आगोमति व्रजे भजा त्व न्नः ॥३१८॥

पूर्ववत् ३१८

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारंभ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। वही इन्द्र हम को अन्न, बल और यश (गौवों) की प्राप्ति करावें।

Men call on Indra in the armed encouter that he may make the hymns they sing decisive.

Here in combat and in love of glory, give us a protion of the stall of cattle.

अश्विनोर्व्रतयोः साम्नोरश्विनौ बृहत्यश्विनौ बाह्वोर्न्यासे विनियोगः।

यह बाहु के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र २ र २ र र
ॐ होइहा ३ । इहोइहा ३ । ३ । इमाउवांदिवि-
र १ २ र र र १ २ र
ष्टया ओहाउ । उस्राहवन्तेअश्विनाओहाउ । अयंवाम-
र र र र १ २ र १ २
ह्वेवसेशचीवसूओह्वाउ । विशांविशङ्हिगच्छथाओहाउ ।
२र २ र २र २ र ३
होइहा ३ । इहोइहा ३ । २ । होइहा ३ । इहो इहा २
५र र १ १ २र ३र २ १ ३ २
३ ४ । औहोवा । इ ५ हीहीहीहीही ॥ १४ ॥ ॐ होइहा ।
१ ३ २ २ र र र १ २ र र
इहोइहा । ३ । इमाउवांदिविष्टया होहाउ । उस्राहवन्ते
२ १ २ र र र र र १ २
अश्विनाहोहाउ। अयंवामह्वेवसेशचीवसूहोहाउ । विशांवि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २ १ ३ २ १ ३ २ १ ३ २
शाङ्हिगच्छथाहोहाउ । होइहा । इहोइहा । २ । होइहा ।
१ ३ २ ५र र १
इहोइहा ३ ४ । औहोवा । इ २ । ३ ॥ १५ ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इमा उ वा न्दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १२ ३ १ २र
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशꣳहि गच्छथः ॥ ७५३ ॥

३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३
इमाः । उ । वाम् । दिविष्टयः । उस्रा । उ । स्रा । हवन्ते ।
३२ ३ १२र ३ १ २
अश्विना । अयम् । वाम् । अह्वे । अवसे । शचीवसू । शची । वसू
१ २ १ २र १ २र ३ २ १ २र
इति । विशंविशम् । विशम् । विशम् । हि । गच्छथः ॥ ७५३ ॥

हे अश्विनी, प्राण व अपान, ये इन्द्रियां तुम्हारी महिमा को प्रकट करती हैं। मैं उपासक तुम्हारी रक्षा के लिए प्राणायाम द्वारा दूर तक तुम दोनों को शरीर के भीतर व बाहर ले जाता हूँ। अपने कर्म द्वारा जीवात्मा का शरीर में वास करानेवाले तुम दोनों प्रत्येक शरीर में गति कर रहे हो।

These morning sacrifices call you. Aṣvins, at the break of day.

For help have I invoked you, rich in power and might: for, house by house, ye visit all.

इमाः प्रजा इति प्रजापतिर्यजुः प्रजापतिः । मनोजयिदिति दिशोनुष्टु-ब्विश्वेदेवाः हृदि न्यासे विनियोगः ।

यह हृदय के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

२र १ र १र १ र२र १
ॐ हाउ । ३ । इमाः । ३ । प्रजाः ।३। प्रजापते । होइ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१र २र २र १ २
। २ । प्रजापते । हा ३ १ उ । वा २ । ए । हृदयम् । २ ।
२र १ २ १र र २र १ ३
ए । हृदया ३ १ उ । वा २ । प्रजारूपमजीजने ३ । इट्इ डा
१ १ १ १ २र १ र २
२ ३ ४ ५ ॥ १६ ॥❀ ॐ हाउ । ३ । मनोजयित् । ३ ।
१ २ १ र २ १ २र २र
हृदयमजयित् ।३। इन्द्रोजयित् ।३। अहमजैषम् ।३। हाउ
१ २र १ २ १ १ २र २ २र १ र २ १ २ १
। ३ । यद्वर्चोंहिरण्य । स्या । यद्वावर्चोंगवाम् । ता । सत्य-
२ १ २र १ र २र १ २र १ २र
स्यब्रह्मणोव । चाः । तेनमासङ्सृजाम । साइ । हाउ
१ र २ १ २ १ र २
। ३ । मनोजयित् । ३ । हृदयमजयित् । ३ । इन्द्रोजयित्
२ १ २र २ऽ २र १ र २
। ३ । अहमजैषम् । ३ । हाउ ३ । वा । ए । मनोजयिद्-
१ २ १ र २ १ २र २र २ १ र
धृदयमजयिदिंद्रोजयिदहमजैषम् । ३ । ए । अहङ्सुवर्ज्यो
३ १ १ १ १
ती २ ३ ४ ५ः ॥ १७ ॥

२उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
यद्वर्चों हिरण्यस्य यद्वा वर्चों गवामुत ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा सꣳसृजामसि ॥ ६२४ ॥

❀ अस्य मूलं न ऋक् अपि तु स्तोभः स चैषः—
३ २ ३ २ ३ २ १ २र १ २र ३ १ २र
इमाः । प्रजाः । प्र । जाः । प्रजापते । प्रजा । पते । हृदयम् ।
३ २ ३ २ ३ २ ३
प्रजाः । प्र । जाः । रूपम् । अजीजने ॥ (स्तोभ पद पाठे २–७)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २र १ २र २ ३ १ २र १ २र ३ २
यत् । वर्च्चः । हिरण्यस्य । यत् । वा । वर्च्चः । गवाम् । उत ॥
३ १ २ १ २र १ २ १ २र ३ २ ३
सत्यस्य । ब्रह्मणः । वर्चः । तेन । मा । सम् । सृजामसि ॥ ६२४ ॥

सूर्य का जो तेज है और जो तेज उसकी किरणों का है तथा सत्यस्वरूप ब्रह्म का जो तेज है उससे हम उपासक अपने को संयुक्त करें ।

We pray that the light of the Sun, and that of his Resplendent-beams, and that of the Brahma may illumine our own hearts. May we attain to that light of the Divine within ourselves.

पिबासुत इति जमदग्निर्बृहतीन्द्रः पृष्ठे न्यासे विनियोगः ।

यह पीठ के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

५ ४ २ ३ ४ ५ १ र र
ॐ पिबा ३ सुतस्यरसिनाः । मत्स्वानइन्द्रगोमता
१ २र १ र र र र १
२ ३ होइया । आपिर्नोबोधिसधमाद्येवृधा २ ३ होइया ।
२ १ २ २ १ २
अस्माङ्आ २ ३ वा । तुताइधा २ ३ या ३ ४ ३ः ।
१
ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ॥ १८ ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः ।
३ १ २ २ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ऽस्माँ अवन्तु ते धियः ॥२३९॥

१ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २र ३ २
पिब । सुतस्य । रसिनः । मत्स्व । नः । इन्द्र । गोमतः ॥ आपिः ।
३ ३ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३
नः । बोधि । सधमाद्ये । सध । माद्ये । वृधे । अस्मान् । अवन्तु ।
३ १ २र
ते । धियः ॥ २३९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे परमेश्वर ! आप जितेन्द्रिय तथा श्रेष्ठ वाणीवाले हम लोगों की रस से पूर्ण भक्ति को स्वीकार कीजिये और हम पर प्रसन्न होइये। सर्वव्यापक आप हमको ज्ञान दीजिये। योगरूपी यज्ञ में वृद्धि के लिए आपकी दी हुई बुद्धियां हमारी रक्षा करें।

Drink, Indra, of the savoury juice, and cheer thee with our milky draught!

Be, for our weal, our friend and sharer of the feast, and let thy wisdom guard us well.

वात आवात्विति काशीत ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता उदरन्यासे विनियोगः।

यह पेट के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४र ५ ४र ५र ४ ४ १ र २
वात आवातु। भा ५ इषजाम्। शाम्भूमयः।
२ १ ७ ३र २ १ र २ २
भूनोहृदा २ ३ ४ इ। हाहोइ। प्रन आयूँषी ३ ता
१ ४ ५ ४ ५
रिषात्। औ २ ३ होवा। इडा। ग्रा० ५।२।८॥

२ ३ १ २ ३२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
वात आवातु भेषजँ शम्भुमयोभुनो हृदे।
२ ३ १ २
प्र न आयूँषि तारिषत्॥ १८४॥

१ २र २ ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
वातः। आ। वातु। भेषजम्। शम्भु। शम्। भु। मयोभु।
३ २ ३ ३ २ २ ३ १ २र ३
मयः। भु। नः। हृदे॥ प्र। नः। आयूँषि। तारिषत्॥ १८४॥

वायु हमारे हृदय में रोगशान्तिकारक, सुखप्रद, ओषध (जल) को संवर्धित करे और हमारी आयु को बढ़ावे।

O wind, Mayst thou blow unto our hearts with thy benign and Salubrious air destroying ill-health and disease. Mayst thou lengthen our years.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आजुहोतेति श्यावाश्वस्त्रिष्टुबग्निः नाभौ न्यासे विनियोगः ।
यह नाभि के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

४र ५ र ४ २ १ र १
ॐ आजूहोता । हविषामर्जया २ ध्वाउवा २ ।
१ र र १ ३ २
निहोतारंगृहपतिंदधा २ इ । ध्वाउवा २ ३ ४ । इडा
३ २ १ र र २ १ १ २ १
३ ४ स्पदाइ । नमसारातहाव्या २ म् । सापर्यता ।
१ २ १ ४ ५ ४ ५
याजतंपा २ ३ । स्तियोवा । आ ५ नो ६ हाइ ॥ १९ ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम् ।
३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र
इडस्पदे नमसा रातहव्यꣳ सपर्यता यजतं पस्त्यानाम् ॥ ६३ ॥

२ ३ ३ १ २ ३ २ १ २र ३ १ २
आ । जुहोत । हविषा । मर्जयध्वम् । नि । होतारम् । गृहपतिम् ।
३ २ २ ३ ३ २ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ २
गृह । पतिम् । दधिध्वम् ॥ इडः । पदे । नमसा । रातहव्यम् । रात ।
३ ३ ३ २ ३क २र
हव्यम् । सपर्यत । यजतम् । पस्त्यानाम् ॥ ६३ ॥

हे उपासको ! तुम परमात्मा की अच्छी प्रकार उपासना करो । उसे ध्यान के द्वारा प्रसन्न करो तथा अपने आत्मा और शरीर को शुद्ध करो । सुख के देने वाले विश्व रूपी घर के स्वामी, परमात्मा की वाणी के स्थान, वेद के वचनों में व हृदय देश में तथा इडा नामक नाड़ी के अधिष्ठान में अच्छी प्रकार ध्यान करो । भक्ति को स्वीकार करने वाले गृहस्थों के लिए संगति करने योग्य पूजनीय परमात्मा की तुम अपने हृदय रूपी घरों के मध्य में नमस्कार के साथ पूजा करो ।

Present oblations, make him splendid : set ye as Hotar in his place the Home's Lord,...worshipped.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

With gifts and homage where they pour libations ! Honour him meet for reverence in our houses.

आतून इति प्रथमद्विकस्य गौरीवितिर्गायत्रीन्द्रः कट्योर्न्यासे विनियोगः ।

यह कमर के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

५र र २ १ २ १ २र १
ॐ आतूनआ । द्रक्षुमा २ ३ न्ताम् । चायित्रङ्ग्राभा
२ १ १ २ र ३ ५
२ ३ इ्हाइ । संगृ २ भाया । महाहस्तो २ ३ ४ हाइ ।
१ १ १ १ ३
दक्षा २ इणाइना । महा २ ३ । हा २ स्ता २ ३ ४
५र र १ २ २ १ १ १ १ ५र र
औहोवा । दंक्षिणे ३ ना २ ३ ४ ५ ॥ २० ॥ ॐ आतून-
४ ५ १ ३ ५ २ ३
इन्द्रक्षुमान्ताम् । चित्रा २ ङ्ग्रा २ ३ ४ भाम् । संगृभा
५ ६ २ १ ३ ५र र
२ ३ ४ या । मा ३ हा ३ । हा २ स्ता २ ३ ४ औहोवा ।
१ २र ३ १ १ १ १
दक्षिणेना २ ३ ४ ५ ॥ २१ ॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
आतू न इन्द्र क्षुमन्तङ्श्चित्रङ् ग्राभꣳसंगृभाय ।
३ १ २र
महाहस्ती दक्षिणेन ॥ १६७ ॥

२ ३ ३ १ २ ३ २ ३ २ २
आ । तू । नः । इन्द्र । क्षुमन्तम् । चित्रम् । ग्राभम् । सम् ।
३ ३ २ ३ २ १ २र
गृभाय । महाहस्ती । महा । हस्ती । दक्षिणेन ॥ १६७ ॥

हे इन्द्र, बड़े भारी हस्त वाले पानी हे धारक शक्तियों से युक्त महान् परमेश्वर आप हमारे लिये अन्न, निवास आदि विज्ञान से युक्त ग्रहण के योग्य अद्भुत आश्चर्यजनक ज्ञान उत्तम साधनों से अच्छे प्रकार ग्रहण कराइये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Indra, as one with mighty arm, gather for us with thy right hand. Manifold and nutritious spoil!

उत्तर द्विकस्य आकूपारो गायत्रीन्द्रः कुक्षौ न्यासे विनियोगः।

यह कांख के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४र ५र र ४ ५ ५ २ १ र
ॐ आतूनइ। द्रक्षुमा ६ न्ताम्। चित्रंग्राभङ्संगृभा
१ २ १ र १ २ २ ३
२ या। चित्रंग्राभङ्सम्। गृ। औ ३ होइ। भा २ ३ ४
५ २र १ र र १ २र १ ३र
या। ऐहोइ। महाहस्तीदक्षा २ ३ होइ। औहो। वाहो
५ ४ ५ ५र र
२ ३ ४ वा। णा ५ इनो ६ हाइ ॥ २२ ॥ ॐ आतू-
५ २ १ र र २ १
नइन्द्रक्षुमा ६ न्ताम्। चित्रंग्राभङ्संगृभाया। चित्रं-
र १ ३ ५ ३ ५
ग्राभङ्सम्। गृ २ ३। इ २ ३ ४ हा। भा २ ३ ४ या।
२र १ र र १ २र १ ३र
ऐहोइ। महाहस्तीदक्षा २ ३ होइ। औहो। वाहो २
५ ४ ५
३ ४ वा। णा ५ यिनो ६ हाइ ॥ २३ ॥

सफपौष्कलयोर्देवाः प्रजापतिरुष्णिक् सोमः। वृषणयोर्न्यासे विनियोगः।

यह वृषण के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२ १ २ ४ ५ २ ३ ५ २ १र २
ॐ पवस्वा ३ मधु। मत्ता २ ३ ४ माः। इन्द्राय-
१ २ १ २ ४ २ ५
सोमा २। क्रतुवाइत्ता ३ मो ३। मा ३ २ ३ ४ दाः।
२ १ २ ४ २ ५
महाइ। द्युक्षाता ३ मो ३। मा ३ ४ ५ दो ६ हाइ ॥२४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २
महि द्युक्षतमो मदः ॥ ५७८ ॥

१ २र १ २र १ २र ३ १ २ ३
पवस्व । मधुमत्तमः । इन्द्राय । सोम । क्रतुवित्तमः । क्रतु ।
१ २र १ २र १ २र ३ १ २ ३ १ २र १ २र
वित्तमः । मदः ॥ महि । द्युक्षतमः । द्यु । क्षतमः । मदः ॥ ५७८ ॥

सब से अधिक ज्ञान-सम्पन्न, ज्ञान प्राप्त कराने वालों में श्रेष्ठ, आनन्दस्वरूप हे परमात्मन् सोम ! आप उपासक जीवात्मा के लिये प्रकट होइये और पवित्र कीजिये। आप हर्ष की मूर्त्ति और महान् हैं।

For Indra flow, thou soma, on, as most inspiring drink, exceeding rich in sweets;

Great, most celestial, gladdening drink !

२ १ २ ४ ५ २ ३ ५ २ १ २ १
ॐ इन्द्रमा ३ च्छसु। ताइ २ ३ ४ माइ। वृषाणंया।
१ २ ३ ५ २ १ र १ ० ३
तूहारा २ ३ ४ याः। श्रुष्टाइजाता। सइ २ न्दा २ ३ ४
२ १ ३ १ १ १ १
५ वा ६ ५ ६ः। सुवर्विदा २ ३ ४ ५ : ॥ २५ ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः ।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ ५६६ ॥

१ २र १ २ ३ २ ३ २ १ २र ३ १२र ३ २
इन्द्रम् । अच्छ । सुताः । इमे । वृषणम् । यन्तु । हरयः ॥ श्रुष्टे ।
३ १ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
जातासः । इन्दवः । स्वर्विदः । स्वः । विदः ॥ ५६६ ॥

शीघ्र सुन्दर रीति से सिद्ध हुये पात्रों में झरते हुये सर्वज्ञ, हरे रंग के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्क खींच कर निकाले हुये ये सोम अभिलाषों की वर्षा करने वाले इन्द्र को प्राप्त हों।

To Indra, to the mighty one, let these gold-coloured juices go,

Drops born as Law prescribes, that find the light of heaven !

श्यावाश्वांधीगवयोः श्यावाश्वोऽनुष्टुप् सोमः । ऊर्वोर्न्यासे विनियोगः ।

यह जंघा के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

ॐ पुरो ३ १ । जी ३ तो । वोअ । धा ३ सः । एहिया । सू । तायमादा । यि । त्वा २ इ । एहिया २ । अपश्वानाङ्श्ना ३ थी ३ । ष्टा २ ३ ४ ना । ऐहा २ इ । एहिया २ । सखायोदाइर्घा ३ जी ३ । ह्वा ३ ४ ५ यो ६ हाइ ॥ २६ ॥ ॐ पुरोजितीवो ४ न्धासाः । सुताय । मादा २ ३ या । हुम्मा २ १ २ । त्वेअपश्वानङ्श्नथिष्टन । साखा ३ उवा । यो २ दी । घा २ ३ जी । ह्वियाम् । औ २ ३ होवा । हो ५ इ । डा ॥ २७ ॥

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्वे । \
अपश्वानंश्नथिष्टन सखायो दीर्घ जिह्वयम् ॥ ५४५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
पुरोजिती । पुरः । जिती । वः । अन्धसः । सुताय । मादयित्नवे ।
१ २र १ २र ३ १ २र ३
अप । श्वानम् । श्नथिष्टन । श्नथिष्ट । न । सखायः । स । खायः ।
३कं २र ३ ३क २र
दीर्घ जिह्वयम् । दीर्घ । जिह्वयम् ॥ ५४५ ॥

हे मित्रो ! उपासको ! सभी वस्तुएँ तुम्हारे लिये मिल सकती हैं। यदि तुम आनन्दित करने वाली भक्ति (सोम) की रक्षा के लिये लम्बी जीभ वाले कुत्ते के समान अपने लालची मन को सांसारिक विषयों से दूर रक्खो।

For first possession of your juice, for the exhilarating drink.

Drive ye away the dog, my friends, drive ye the long-tongued dog away !

राजनरौहिणयोरिन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः। जान्वोर्न्यासे विनियोगः।
यह घुटनों के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

१ १ १ ३र २र
ॐ हुम् । ३ । हो । ३ । हङ् । ३ । ओहा । ३ ।
३र २र २ १ २ १ २र ३ ४ ५
औहोइ । ३ । इन्द्रन्नरो । ने ३ मधि । ताहवंताइ । ३ ।
१ र ३।१ १ र २ र १ २ र २ १र
वयोबृहत् । ३ । विभ्राष्टयेविधर्मणे । ३ । यत्पारियाः ।
२ १ २ ३ ४ ५ २ १ र १
युनज । तायिधियस्ताः । ३ । सत्यमोजः । ३ । रजः
२र १र २ १ २ ३ ४र ५
सुवः । ३ । शूरोन्टषा । ता३श्रव । सश्वकामाइ । ३ ।
२ १ र २ १ र १ र १ र
भद्रङ्सुधा । २ । भद्रङ्सुधे । षमूर्ज । इषमूर्ज । २ ।
२र १र २ १र २र ३ ४ ५ २ १
आगोमताइ । व्रजेभ । जातुवन्नाः । ३ । बृहद्यशः । ३ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २ १ २ १ २ २ऽ १र र र
दिविदधे ३ हस्। २। दिविदधे ३। हाउवा। वागीडा-
र रर२ ३ १ १ १ १ २र
सुवोबृहद्भा २ ३ ४ ५ः ॥ २८॥ ॐ हाउ । ३।
१ २ १ २ १ २ १ २
आइही। ३। आइहीया। ३। आसाउ। ३। आयाम्
१ २ १ रर र
। ३। नामाः। ३। किट्। २। इन्द्रन्नरोनेमधिताहवा
१ रर र १ रर र र
२ न्ताइ। यत्पार्यायुनजतेधिया २ स्ताः। शूरोनृषाता-
१ र र र र १
श्रवसश्चका २ माइ। आगोमतिव्रजेभजातुवा २ न्नाः।
१ १ र १ १
मना २ ३ होइ। प्राणा २ ३ होइ। चक्षू २ ३ होंइ।
र १ र १
श्रोत्रा २ ३ ॐ होइ। घोषा २ ३ होइ। व्रता २ ३ ॐ
र १ र १
होइ। भूता २ ३ ॐ होइ। पाना २ ३ ॐ होइ।
१ र १
चित्ता २ ३ ॐ होइ। धीता २ ३ ॐ होइ। सुवा
१ र १ ३ ५र र
२ ३ होंइ। ज्योता २ ३ इहों २। वा २ ३ ४ औहोवा।
३ १ १ १ १
ऊ २ ३ ४ ५॥ २९॥

२३ १२ ३१२ ३१ २र ३१२३ २३ २
इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः।
३१२३ १२ ३ २३ १ २र ३ १२ ३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥३१८॥

पूर्ववत् ३१८

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारम्भ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। वही इन्द्र हमको अन्न, बल और यश (गौओं) की प्राप्ति करावें।

Men call on Indra in the armed encounter that he may make the hymns they sing decisive.

Here in combat and in love of glory, give us a protion of the stall of cattle.

प्रथेति दिशोऽनुष्टुब्विश्वेदेवाः। प्रतिष्ठासीति द्यौर्जगतीद्यावापृथिव्यौ। पादयोर्न्यासे विनियोगः।

यह पैरों के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र १२ १ २र २र
ॐ हाउ। ३। प्रथे। ३। प्रत्यष्ठां। ३। हाउ। ३।
१ २र १ २ १ २र १ २र १ र २ १ २ १ २
यद्धर्चोहिरण्य। स्या। यद्वावर्चोगवामू। ता। सत्यस्य-
१ २र १ र २र १ २र १ २र
ब्रह्मणोव। चाः। तेनमासङ्सृजाम। साइ। हाउ। ३।
१ र १ २र २ऽ २र १ र २र
प्रथे। ३। प्रत्यष्ठां। ३। हाउ ३। वा। ए। प्रथेप्रत्यष्ठां
२र १ र ३ १ १ १ १
। ३। ए। अहङ्सुवर्ज्योती २ ३ ४ ५ः॥ ३०॥

२उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
यद्धर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा सँसृजामसि॥ ६२४॥

पूर्ववत्॥ ६२४॥

जो तेज सूर्य का है, जो तेज उसकी किरणों का है और जो तेज सत्यस्वरूप ब्रह्म का है उससे हम उपासक अपने को संयुक्त करें।

We pray that the light of the Sun, and that of his Resplendent-beams, and that of the Brahma may illumine our own hearts. May we attain to that light of the Divine within ourselves.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १र २ १ २ र र र र
ॐ प्रतिष्ठासिप्रति । ष्ठा । ३ । वर्चोसिमनोसिऐही ।
र र र र र र र र र र र
मन्येवांद्यावापृथिवीसुभोजसावैही । येअप्रथेथाममितम-
र र र र र र र र र र र र र
भियोजनास्मैही । द्यावापृथिवीभवतङ्स्योनाऐही । तेनो-
र र र २ १र २ १ २ र
मुञ्चतमङ्हसाऐही । प्रतिष्ठासिप्रति । ष्ठा । ३ । वर्चोसि-
र र २ऽ २र १
मनोसिऐही ३ । हाउवा । ए । भूतम् । ३ । ॥ ३१ ॥

१ २ ३ १२ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
मन्ये वां द्यावा पृथिवी सुभोजसौ ये अप्रथेथाममित मभि योजनम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
द्यावा पृथिवी भवतꣳ स्योने ते नो मुञ्चत मꣳहसः ॥ ६२२ ॥

१ २र ३ ३ ३ ३ १ २ ३ १ २
मन्ये । वाम् । द्यावा पृथिवी । द्यावा । पृथिवी इति । सुभोजसौ ।
३ १ २र १ २ १ २र १ २र २ ३
सु । भो जसौ । ये इति । अप्रथेथाम् । अमीतम् । अ । मीतम् ।
३ २ १ २र १ २र १ २र ३ १ २ १ २
अभि । योजनम् ॥ द्यावा पृथिवी । द्यावा । पृथिवी इति । भवतम् ।
३ १ २ १ २ ३ ३ १ २र
स्योने इति । ते इति । नः । मुञ्चतम् । अꣳहसः ॥ ६२२ ॥

हे सूर्य के समान प्रकाशक परमात्मन् ! और हे पृथिवी के समान विस्तृत प्रकृति ! मैं आप दोनों को उत्तम पालक मानता व जानता हूँ । आप दोनों पुरुष और प्रकृति हमारे लिए सुखकारक हों । दोनों हमें पाप से मुक्त करें ।

O God, luminous like the Sun, and O thou Nature, embracing the entire cosmos, you are our peotectors. May both of you as Spirit and Matter (Purush and Prakriti), give us weal and joy, and wean us from sin.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एषोउषेति-उषागायत्र्यश्विनौ कवचे न्यासे विनियोगः ।

यह भुजा के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

५र र १ र २ र १ २ १ २
ॐ एषोउषाः । आपूर्विया । व्युच्छति । होवा ३

२ २ १र २ ३ २ ३र २
हाइ । प्रियादा २ ३ इवा ३ ४ः । स्तुषा ३ ४ इवामा ३ ।

२ १ ५ ४ ५
श्विनो २ ३ ४ वा । बृ ५ हो ६ हाइ ॥ ३२ ॥

३ २ ३ १ २र ३ क २र ३ २ ३ २
एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवंः ।

३ १ २ ३ २
स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ १७८ ॥

३ २ ३ ३ २ १ २ २ ३ २ ३
एषा । उ । उषाः । अपूर्व्या । अ । पूर्व्या । वि । उच्छति ।

३ २ ३ २ ३ २ ३ ३ ३ २
प्रिया । दिवः ॥ स्तुषे । वाम् । अश्विना । बृहत् ॥ १७८ ॥

अपूर्व सिद्धि देने वाली बड़ी प्यारी यह उषा की बेला आकाश में फैल रही है । मुक्ष उपासक के मस्तिष्क को पूर्ण करने वाली ज्योतिष्मती प्रज्ञा उदय हो रही है । अतः प्राण अपान का मैं गुण वर्णन करता हूँ । हे अध्यापको तथा शिष्यो ! तुम महान् परमात्मा की स्तुति करो ।

Now morning with her earliest light shines forth, dear daughter of the sky,
High Aṣvins, I extol your praise.

आक्रन्दयेति शर्वऋषिस्त्रिष्टुपछन्दः इन्द्रो देवता अस्त्रन्यासे विनियोगः ।

यह अस्त्र (घेरा) न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

२र १ २ १ र १
ॐ आक्रन्दयोवा । कुरुघोषं महा २ । आन्ता २

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र र र १ र १
म् । हरीइन्द्रस्याभियोजया २ । आशू २ । मर्माविधन्द-

र १ २ १र र र
दतामन्यो २ । आन्या २ म् । शल्यात्मापततुश्लोकमा

१ ३ २र र १
२ ३ । आ २ । छा २ ३ ४ । औहोवा । अस् ॥ ३३ ॥

१ २ ३ १ २र३ २ ३ २ ३१ २ ३ १ २ ३ २
आक्रन्दय कुरुघोषंमहान्तꣳहरीइन्द्रस्याभियो जयाशू ।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
मर्म्माविधन्द दतामन्यो अन्यꣳशल्यात्मा पततु श्लोकमच्छ ।

(आ० गा० ७८)

२ ३ ३ २ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २ १ २
आ । क्रन्दय । कुरु । घोषम् । महान्तम् । हरि इति । इन्द्रस्य ।

३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
अभि । योजय । आशू इति ॥ मर्माविधम् । मर्म । विधम् । ददताम् ।

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
अन्यः । अन् । यः । अन्यम् । अन् । यम् । शल्यात्मा । शल्य ।

३ १ २र १ २र
आत्मा । पततु । श्लोकम् । अच्छ ॥ (आ. गा. ७९)

हे संकट को हरने वाले प्रभु ! आप शत्रु के हृदय को भेद डाले ऐसा महान् शब्द करें, शत्रुओं को परस्पर संहार करने वाला कीजिये। शत्रुओं को रुदन कराइए और सब दिशाओं में निवास करने वाले इन्द्र के शत्रुओं का शीघ्र नाश होवे।

O Lord that destroyeth all our woes, Kill all our foes with thy awe-inspiring thunder. May the Shrieks of our vanquished adversaries fill the quarters all around, and may the enemies of Indra that abide all around be soon extirpated.

मानस्तोकेति कुत्सो जगती रुद्रः । दिग्बन्धने विनियोगः ।
यह दिग्बन्धन का विनियोग मन्त्र है ।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानआयौमानोगोषुमानोअश्वेषु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रीरिषः। वीरान्मानोरुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे ॥३४॥ (छा० मं० ब्रा० २) इत्यङ्गन्यासः।

यह अंगन्यास का मन्त्र है।

अथ षडङ्गन्यासः

भ्राजेति सूर्यो गायत्र्यग्निः। हृदये न्यासे विनियोगः।

यह हृदय के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र १ २र १ २ १र र

ॐ भ्राजा। २। भ्राजा ३ १ उ। वा २। अग्नआयू-

२ र १र २ १र २ १ २ २र १र र २ १ र

ङ्षिपवसे। आसूवोर्जमिषञ्चनः। आरेबाधस्वदुच्छुनाम्।

२र १ २र २र १र

भ्राजा। २। भ्राजा ३ १ उ। वा २। ए। भ्राज। ३।

॥ १ ॥ इति हृदयाय नमः।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २

अग्न आयूꣳषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः।

३ १ २ ३ १ २

आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ ६२७ ॥

हे अग्नि! ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! हमें बल, आयु और अन्न प्रदान कीजिये। बुरे, लोभी तथा क्रोधान्ध जनों को हम से दूर रख कर पीडित कीजिये (या दुखदायी पीडा व दुख को दूर कीजिये)।

Agni, thou purest life, send down upon food and vigorous strength.

Drive thou misfortune far away.

अबोध्यग्नेः प्रजापतिस्त्रिष्टुबग्निः। शिरसि न्यासे विनियोगः।

यह शिरोन्यास का विनियोग मन्त्र है।

४ ५र ४ १ २ १ २र १ ९र ७६ र

ॐ अबोधिया। ग्राइः समिधाजना २ नाम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ २ २ १२ २ २ १ २ २ १ ९२
प्रताइधे ३ नूम् । इवायतीमुषासम् । यहाइ ३ वा । प्रवा
१२ २ १ २२ २ १२ २ २ १२ २ १ २
२ यामुज्जिहानाः । प्रभाना २ ३ वाः । सस्रते नाकमच्छ ।
१ २ १
इडा २ ३ भा ३ ४ ३ । ओ २ ३ ४ ५ इ । डा । २ ॥
इति शिरसे स्वाहा ।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायती मुषासम् ।
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
यह्वा इव प्रवया मुज्जिहानाः प्रभानवः सस्रते नाकमच्छ ॥ ७३ ॥

लोगों की लगाई हुई लकड़ी से जिस प्रकार अग्नि, दुधार गाय के समान आते हुए, प्रत्येक उषःकाल में प्रदीप्त होता है उसी प्रकार परमात्मा उपासकों की आत्मा में योगानुष्ठान के साधन द्वारा प्रबुद्ध किया जाता है। जिस प्रकार अग्नि की बड़ी बड़ी ज्वालायें शाखा को ऊपर उठाने वाले वृक्षों के समान अन्तरिक्ष की ओर फैलती हैं उसी प्रकार उपासक के प्राण व आत्मा परमेश्वर की ओर और आनन्दमय मोक्ष की ओर अच्छे प्रकार फैलती है।

Agni is wakened by the people's fuel to meet the dawn who cometh like a... milch-cow. Like young trees shooting up on high their branches, his flames are mounting to the vault of heaven.

अदर्द्दरुदिति उरुक्षय ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता शिखायां न्यासे विनियोगः।

यह शिखा (चोटी) के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४ ५ ४ २ २ १ २ २ १
ओ३म् अदर्द्दरुत् । समसृजोविश्वानि । त्वमर्णा २ ३ ४
५ २ २ २ १ २ २२ ५
वान् । बद्बधानाङ्अरारम्णाः । महांता २ ३ ४ सी ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २ २ १ ५ १ २ १ २ १
द्रपर्वतंवियाद्धः । सृजाद्धा २ ३ ४ राः । अवयद्दान् । वा
२ २
२ ३ न्हा ३४ ३ न् । ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ॥ ३ ॥
इति शिखायै वषट् ।

३ २ ३ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अ... त् समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्धधानाꣳ अरम्णाः ।
२ ३ १ २ ३ २उ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्धारा अव यद् दानवान् हन् ॥

हे इन्द्र ! आप ऊर्ध्वं स्थान मूर्धा भाग को विदीर्ण करते हैं और इन्द्रिय द्वारों को रचते हैं। आप गतिशील आघात-प्रतिघात करने वाले प्राणों को व्यवस्थित करते हैं। आप हमारे महान् पर्वों (पोरुओं) वाले शरीर को विशेष रूप से प्रकट करते हैं और ज्ञान देने वाले प्राणों को प्रेरित करते हैं तथा ज्ञान स्मृति रूप धाराओं को विशेष रूप से प्रेरित करते हैं। आप ही अज्ञान आदि को नष्ट करते हैं।

The well thou clavest, settest free the fountains and gavest rest to floods that were...obstructed.

Thou, Indra, laying the great mountain open, slaying the Dānava, didst loose the torrents.

आमन्द्रैरिति वाम्रो ऋषि बृंहती छन्दः इन्द्रो देवता कवचे न्यासे विनियोगः ।

यह कवच के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

५र र २ र र र १ २
ॐ आमन्द्रैरा । द्रहरिभाइर्याहिमयूरा ३ रोमाभा
४ ५ ४ ५ २ ३ ५ २ र
३ इः । मात्वाकाइचीत् । नियेमू २ ३ ४ रीत् । नपा-
१ २ १ २ १ १ ३
शिनाः । अतिधान्वे २ । वता २ ३ ङ् । आ २ इहा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५र र ३ ५
२ ३ ४ औहोवा । वा २ ३ ४ याः ॥ ४ ॥ इति
कवचाय हुम् ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
आमन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूर रोमभिः ।
३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
मा त्वा के चिन्नियेमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥२४६॥

हे इन्द्र परमेश्वर ! आप मोर के शब्दों के समान उत्तम हर्षप्रद स्वरों से स्तुति किये जाने पर अपनी हर्षप्रद शक्तियों से हमारे अन्तःकरण में प्रत्यक्ष होइये । पाशधारी मनुष्यों के समान कोई भी आप को बाँध नहीं सकता । शस्त्रधारी के समान आप उन जाल रचने वालों का निग्रह करते हैं ।

Come hither, Indra, with bay seeds, joyous, with tails like peacock's plumes !

Let no men check thy course as fowlers stay the bird : Pass over desert lands ! 246.

इदं विष्णुरिति विष्णुर्गायत्री विष्णुः । नेत्रयोर्न्यासे विनियोगः ।
यह आँख के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

५ ५ १ ३ २ ३ ५
ॐ इदा ६ मे । विष्णू २ः । विचक्रा २ ३ ४ माइ ।
१ र २ १ २ १ १
त्राइधानि । दधाइपा १ दा २ म् । समू २ हो १ । ढा
२ १ ३ ५र र २
२ ३ मा ३ । स्या २ पा २ ३ ४ औहोवा । ए ३ ।
२
सुले १ ॥ ५ ॥ इति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि दधे पदम् ।
१ २ ३ २
समूढमस्य पाꣳसुले ॥ २२२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वव्यापक परमेश्वर इस जगत् में सर्वत्र गति कर रहा है, वह अपनी शक्ति को पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ, इन तीनों लोकों में स्थापित किये हुए है। इस जगत् के धूल के कण-कण तक में उसका स्वरूप और शक्ति व्याप्त है।

Through all this world strode Vishṇu : thrice his foot he planted, and the whole was gathered in his foot. step's dust. 222.

आवोराजेति वामदेवस्त्रिष्टुब् रुद्रः। अस्त्रे न्यासे विनियोगः।

यह घेरे के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४र ५र र ४ ३ २ ३ २ ३ ४ ५ १ २र

ॐ आवोराजा। नमध्व। रस्यरुद्राम्। हो। ता।

१ २ २ २र ३ ४ ५ २ १

राम्। स। त्ययजा ३ म्। रोदसीयोः। अग्निंपु। रा।

२ ३ २ ३ ४ ५ १ २ १ २ १

तनयि। तारचित्तात्। हिरण्य। रू। पा ३ मव।

२ २ ४

सा ३ ४ ३ इ। का ३ र्णू ५ ध्वा ६ ५ ६ म्॥ ६॥

इति-अस्त्रायफट्॥ इति षडङ्गन्यासः॥

२ ३ १ २ ३१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २

आ वो राजान मध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २

अग्निं पुरा तनयित्नो रचिताद्धिरण्य रूप मवसे कृणुध्वम्॥ ६९॥

हे मनुष्यो! तुम सब हिंसारहित यज्ञ के स्वामी, कर्मफल प्राप्त करने वालों, दुष्टों के सन्तापक द्यौ तथा पृथिवी के बीच सच्चा यज्ञ करने वाले, ज्योतिर्मय, हितकारी तथा रमणीय प्रकाश वाले परमेश्वर की—अपनी रक्षा के लिये बिजली के समान अकस्मात् आ जाने वाली अचेतन, ज्ञानरहित मृत्यु के आने से पहले ही उपासना कर लो।

Win to Protect you, Rudra, Lord of worship, priest of both worlds, effectual sacrificer,

Agni, invested with his golden colours, before the thunder strike and lay you senseless! 69.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ दशाक्षरन्यासः

ॐ दशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिर्विराट् रुद्रः । न्यासे विनियोगः ।

अब इसके पश्चात् दश अक्षर वाले मन्त्र (ॐ नमो भगवते रुद्राय) का न्यास आरम्भ होता है ।

यह दशाक्षर मन्त्र के न्यास का विनियोग मन्त्र है ।

ॐ ॐ नमो मूर्ध्नि । ॐ नं नमो नासिकायाम् । ॐ मों नमो ललाटे । ॐ भं नमो मुखे । ॐ गं नमः कण्ठे । ॐ वं नमो हृदये । ॐ तें नमो दक्षिणकरे । ॐ रुं नमो वामकरे । ॐ द्रां नमो नाभौ । ॐ यं नमः पादयोः । इति दशाक्षरन्यासः ॥

इस प्रकार यजमान को चाहिये कि वह दशाक्षर मन्त्र का विनियोग पढ़ कर उस मन्त्र के एक-एक अक्षर का उच्चारण कर मूर्धा आदि अङ्गों का स्पर्श करे । जैसे ॐ नमः कह कर शिर का स्पर्श करे । ॐ नं नमः से नाक का । ॐ मों नमः से मस्तक का । ॐ भं नमः से मुख का । ॐ गं नमः से कण्ठ का । ॐ वं नमः से हृदय का । ॐ तें नमः से दाहिने हाथ का । ॐ रुं नमः से बाँयें हाथ का । ॐ द्रां नमः से नाभि का और ॐ यं नमः से दोनों पैरों का ।

अथ ध्यानम्

इसके पश्चात् यजमान को रुद्ररूप शङ्कर भगवान् का ध्यान करना चाहिये । ध्यान के श्लोक निम्नलिखित हैं—

अथात्मानं रुद्ररूपं ध्यायेत्पञ्चमुखं शिवम् ।
प्रतिवक्त्रं त्रिनेत्रञ्च दशहस्तन्दशायुधम् ॥ १ ॥

अपनी आत्मा का रुद्ररूप में ध्यान करे । वह रुद्र रूप पाँच मुखों वाला, प्रति मुख में तीन नेत्र वाला, दस हाथ और दस आयुध वाला है ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कमण्डल्वक्षसूत्राहिबाणशूलधरं हरम् ।
दण्डडमरुखट्वाङ्गाभयपात्रपिनाकिनम् ॥ २ ॥

कमण्डलु, जपमाला, सर्प, वाण, त्रिशूल, दण्ड, डमरू, खट्वाङ्ग, अभयपात्र और पिनाक को वह धारण किये हुए है ॥ २ ॥

अष्टसिद्धियुतं सौम्यं सर्वाऽऽभरणभूषितम् ।
नीलग्रीवं शशाङ्कार्द्धशेखरं स्मितसुन्दरम् ॥ ३ ॥

वह आठों सिद्धियों से युक्त, सौम्य, संपूर्ण आभरणों से निभूषित, नीलग्रीवा वाला, आधे चन्द्र से विभूषित शेखर वाला, मन्द मुस्कान से सुन्दर ॥ ३ ॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशं नागयज्ञोपवीतिनम् ।
गजचर्मपरीधानं व्याघ्रचर्मोत्तरीयकम् ॥ ४ ॥

शुद्ध स्फटिक के समान गौर वर्ण, सर्पों का यज्ञोपवीत, गजचर्म का वस्त्र तथा व्याघ्रचर्म का दुपट्टा धारण किये हुये है ॥ ४ ॥

वृषस्कन्धसमारूढमुमादेहार्धधारिणम् ।
दुर्दन्तङ्कपिलजटँशिखामुद्योतकारिणम् ॥ ५ ॥

वह बैल के ऊपर बैठा उमारूप अर्धाङ्गधारी, भयंकर दाँत वाला, पीली जटा वाला और ऊपर खड़ी हुई चोटी वाला है ॥ ५ ॥

अमृतेनाप्लुतं हृष्टं दिव्यभोगसमाकुलम् ।
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरैर्नमस्कृतम् ॥ ६ ॥

वह अमृत से आप्लावित, हृष्ट, दिव्य भोगों से युक्त, दिक्पालों से युक्त और देव-दानवों से नमस्कृत है ॥ ६ ॥

शाश्वतं सच्चिदानन्दं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ।
अजेयममृतन्नित्यं सर्वव्यापिनमीश्वरम् ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह ईश्वर शाश्वत, सच्चिदानन्द, ध्रुव, अक्षर, अव्यय, अजेय, अमृत, नित्य और सर्वव्यापक है ॥ ७ ॥

एवं रुद्रतनुं सर्वे यक्षराक्षसपन्नगाः ।
डाकिनीशाकिनीभूतपिशाचा जृम्भका ग्रहाः ॥ ८ ॥

इस प्रकार रुद्र के शरीर को सब यक्ष, राक्षस, पन्नग, डाकिनी, शाकिनी, भूत, पिशाच, जृम्भक और ग्रह ॥ ८ ॥

ज्वलन्तं ते प्रपश्यन्ति प्रलयानलसन्निभम् ॥ ९ ॥

ज्वलन्त (जलती हुई) प्रलय काल की अग्नि के समान देखते हैं ॥ ९ ॥

इति श्रीमहादेवं स्वहृदि ध्यात्वा पञ्चमानसोपचारैः पूजयेत् ।

अथ मानसिकपूजा

इस प्रकार यजमान श्री महादेव जी का अपने हृदय में ध्यान कर के फिर पञ्चोपचार से श्री शङ्कर जी की मानसिक पूजा करे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय । श्रीमहादेवाय मानसिकं चन्दनं समर्पयामि ।

यह मन्त्र पढ़कर श्री महादेव जी को मानसिक चन्दन अर्पित करे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय । श्रीमहादेवाय मानसिकं पुष्पं समर्पयामि ।

इस मंत्र से मानसिक फूल अर्पित करे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय । श्रीमहादेवाय मानसिकं धूपमाघ्रापयामि ।

इस मंत्र से मानसिक धूप देवे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय । श्रीमहादेवाय मानसिकं दीपं दर्शयामि ।

इस मंत्र से मानसिक दीप प्रदर्शित करे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय । श्रीमहादेवाय मानसिकं नैवेद्यं निवेदयामि ।

इस मन्त्र से मानसिक नैवेद्य अर्पित करे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं सम्पूज्य क्षणं तद्गतमनास्तिष्ठेत् ।

इति मानसिकपूजा ।

ततो बाह्यपूजां कुर्यात् ।

अथ बाह्यपूजा

इस प्रकार शिव की मानसिक पूजा करके क्षणमात्र तन्मय होकर स्थित रहे । इस तरह से मानस पूजा समाप्त कर बाहरी पूजा करे ।

तत्रादौ कलशवरुणावाहनादिघटपूजनान्तमुक्तवत्कृत्वा स्वाग्रे साधारं ताम्रपात्रं संस्थाप्य । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । इति रुद्रगायत्र्या शुद्धोदकेनापूर्य तत्र गन्धादीन् निक्षिप्य । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । इति रुद्रगायत्र्या तज्जलमभिमन्त्र्य तेनोदकेन पूजासामग्रीं सम्प्रोक्ष्य । ॐ नमो भगवते रुद्राय । इति दशाक्षर-मन्त्रेण स्वपुरोवर्त्तिपीठे लिङ्गं संस्थाप्य तस्मिन् । ॐ नमो भगवते रुद्राय । श्रीमहादेवमावाहयामि । इत्यावाह्य दशाक्षरमन्त्रेणैवोपचा-रान् कुर्यात् ।

बाह्य पूजा में सर्वप्रथम यजमान कलशस्थापन तथा वरुण-आवाहनादि से घट-पूजन तक कहे हुए विधान से पूजन करके अपने आगे आधार के सहित ताँबे का वर्त्तन स्थापित कर 'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे०' इस रुद्रगायत्री के द्वारा शुद्ध जल से उस वर्त्तन को भरकर उसमें गन्धाक्षत आदि छोड़कर रुद्रगायत्री के ही द्वारा उस जल को अभिमंत्रित कर तथा उस जल से पूजन-सामग्री को पवित्र कर 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' इस दश अक्षर वाले मन्त्र से अपने सम्मुख विद्यमान आसन पर शिवलिङ्ग तथा प्रतिमा स्थापित कर 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' यह दशाक्षर मन्त्र पढ़कर आवाहन कर दशाक्षर मन्त्र से ही षोडश उपचारों से पूजन करे ।

षोडशोपचार पूजन की विधि इस प्रकार है—

'ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवायासनं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से महादेव जी को आसन देवे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय पाद्यं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से पाद्य देवे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय अर्घ्यं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से अर्घ्य देवे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से आचमन के लिये जल समर्पित करे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय स्नानं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से स्नानार्थ जल दें ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से आचमन के लिये जल चढ़ावे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय वस्त्रं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से वस्त्र चढ़ावे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से आचमन के लिये जल चढ़ावे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय उपवीतं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से जनेऊ अर्पित करे (पहना दे) ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से आचमन के लिये जल चढ़ावे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय चन्दनं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से चन्दन लगावे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय पुष्पं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से फूल चढ़ावे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय धूपमाघ्रापयामि ।
इस मन्त्र से धूप (अगरबत्ती) चढ़ावे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय दीपं समर्पयामि ।
इस मन्त्र से दीप दिखावे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय नैवेद्यं निवेदयामि ।

इस मन्त्र से नैवेद्य अर्पित करे ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से आचमन के लिये जल चढ़ावें ।

एवं नैवेद्यान्तैरुपचारैः सम्पूज्य षडङ्गस्य रुद्राध्यायस्य ऋष्यादीन् संस्मृत्य पठेत् ।

इस प्रकार आसन से लेकर नैवेद्य तक षोडशोपचारों के द्वारा शङ्कर जी का पूजन करके ऋषि आदि (ऋषि-गणों) का स्मरण करते हुए छह अङ्गों वाले रुद्राध्याय का पाठ करे ।

अथ ऋष्यादयः

ऋषिगणों के नाम इस प्रकार हैं—

भ्राजाभ्राजेति द्वयोः सूर्यो गायत्र्यग्निः ।

भ्राजा भ्राजेति० इन दोनों साम के सूर्य ऋषि, गायत्री छन्द और अग्नि देवता हैं ।

शुक्रचन्द्रेति द्वयोः प्रजापतिर्गायत्री वायुः ।
आद्यस्य द्वितीयस्य त्वष्टा रश्मिश्चन्द्रमसः ।

शुक्रचन्द्रेति० इन दोनों साम के प्रजापति ऋषि, गायत्री छन्द, और पहले साम के वायु देवता तथा, दूसरे साम के चन्द्रमा-देवता हैं ।

राजनरौहिणयोरिन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

राजनरौहिणयोः० इन दोनों साम के इन्द्र ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता हैं ।

अग्नेर्व्रतस्याग्निर्गायत्र्यग्निः ।

अग्नेर्व्रतस्य० इस साम का अग्नि ऋषि, गायत्री छन्द और अग्नि देवता है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वायोर्व्रतस्य वायुरत्यष्टिः सोमः ।

वायोर्व्रतस्य० इस साम का वायु ऋषि, अत्यष्टि छन्द और सोम देवता है।

श्लोकानुश्लोकानां प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

नवस्तेत्यस्य त्वष्टा ।

श्लोकानुश्लोकानां० इस साम का प्रजापति ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता है।

सेतुसाम्नः प्रजापतिस्त्रिष्टुबात्मा ॥ १ ॥

सेतुसाम्नः० इस साम का प्रजापति ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और आत्मा देवता है।

अबोध्यग्नेरिति प्रजापतिस्त्रिष्टुबग्न्युषसौ ।

अवोध्यग्निः० इस साम का प्रजापति ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और अग्नि उषस् देवता है।

महित्रीणामिति द्वयोः पृष्ठवाड् गायत्रीन्द्रः ।

महित्रीणाम्० इन दोनों साम के पृष्ठवाड् ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता हैं।

त्वावत इति धुरासाकमश्वो गायत्रीन्द्रः ।

त्वावतः० इस साम का धुरासाकमश्व ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता है।

इन्द्रन्नरो इति गौरीवितिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

इन्द्रन्नरः० इस साम का गौरीविति ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता है।

त्यमूष्विति द्वयोस्तार्क्ष्यस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

त्यमूषु० इस साम का तार्क्ष्य ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता है।

त्रातारमितीन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

त्रातारम्० इस साम का इन्द्र ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सोमः पुनान इति प्रजापतिरुष्णिक् सोमः ।

सोमः पुनानः० इस साम का प्रजापति ऋषि, उष्णिक् छन्द और सोम देवता है ।

ससुन्वेत्यस्य प्रजापतिरुष्णिक् सोमः ।

ससुन्वे० इस साम का प्रजापति ऋषि, उष्णिक छन्द और सोम देवता है ।

विश्वतो दावन्निति प्रजापतिर्विष्टारपंक्तिरिन्द्रः ।

विश्वतोदावन्० इस साम का प्रजापति ऋषि, विष्टारपङ्क्ति छन्द और इन्द्र देवता है ।

उदुत्तममिति वरुणगौतमौ त्रिष्टुब् वरुणादित्यौ ॥

उदुत्तमम्० इस साम के वरुण और गौतम ये दो ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और वरुण तथा आदित्य ये दो देवता हैं ।

अदर्दरुदिति द्वयोरुरुक्षयस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

अदर्दरुत्० इन दोनों साम के उरुक्षय ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता हैं ।

सुष्वाणास इति द्वयोः पृथुस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

सुष्वाणास० इन दोनों साम के पृथु ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता हैं ।

आतून इति पूर्वद्वयोर्गौरीवितिरुत्तरयोराकुपारो गायत्रीन्द्रः ।

आतून० इन पहले दोनों साम के गौरीविति ऋषि, इसके बाद के दोनों साम के आकुपार ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता हैं ।

मृज्यमानः सुहस्त्येति पूर्वस्य उक्ष्णोरन्ध्रः ।
षष्ठस्याग्निर्बृहती सोमः ॥ ३ ॥

मृज्यमानः० पहले साम का उक्ष्णोरन्ध्र ऋषि, दूसरे का अग्नि ऋषि, बृहती छन्द और सोम देवता है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आमन्द्रैरिति वाम्रो बृहतीन्द्रः ।

आमन्द्रैः० इन तीनों साम के वाम्र ऋषि, बृहती छन्द और इन्द्र देवता हैं ।

आनोविश्वेति त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः ।

आनोविश्वा० इन तीनों साम के वसिष्ठ ऋषि, बृहती छन्द और इन्द्र देवता हैं ।

प्रसेनानीरिति त्रयाणां कुत्सस्त्रिष्टुप् सोमः ।

प्रसेनानीः० इन तीनों साम के कुत्स ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और सोम देवता हैं ।

पवित्रन्त इति द्वयोरादित्यो जगती ब्रह्मणस्पतिः ॥

पवित्रन्ते० इन दोनों साम के आदित्य ऋषि, जगती छन्द और ब्रह्मणस्पति देवता हैं ।

इदं विष्णुरिति विष्णुर्गायत्री विष्णुः ।

इदं विष्णुः० इस साम का विष्णु ऋषि, गायत्री छन्द और विष्णु देवता है ।

प्रक्षस्यविष्णोरिति विष्णुर्जगती वैश्वानरः ।

प्रक्षस्य० इस साम का विष्णु ऋषि, जगती छन्द और वैश्वानर देवता है ।

प्रकाव्यमिति वराहस्त्रिष्टुब् वराहः ।

प्रकाव्यम्० इस साम का वराह ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और वराह देवता है ।

सहस्रशीर्षेत्यादिपञ्चानां नारायणोऽनुष्टुप् पुरुषः ।

सहस्रशीर्षा० इन पांच साम के नारायण ऋषि, अनुष्टुप् छन्द और पुरुष देवता हैं ।

षष्ठस्य नारायणो गायत्र्यात्मा ॥ ८ ॥

षष्ठ साम का नारायण ऋषि, गायत्री छन्द और आत्मा देवता है ।

आवोराजेति वामदेवस्त्रिष्टुब्रुद्रः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आवोराजा० इस साम का वामदेव ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और रुद्र देवता है।

तद्वोगायेति पूर्वद्वयो रुद्र उत्तरद्वयोर्मृगयुर्गायत्रीन्द्रः।

तद्वोगाय० इन चारों साम के मृगयु ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता हैं।

आज्यदोहत्रयाणामग्निर्वैश्वानरस्त्रिष्टुबग्निर्वैश्वानरः।

आज्यदोहः० इन तीनों साम के अग्निवैश्वानर ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और अग्निवैश्वानर देवता हैं।

देवव्रतानां देवा उत्कृती रुद्रः॥ ६॥

देवव्रतानां० इन तीनों साम के देवा ऋषि, उत्कृती छन्द और रुद्र देवता हैं।

श्रीमहारुद्रप्रीतये जपे विनियोगः।

(अभिषेकपक्षे—अभिषेके विनियोगः। हवनात्मकपक्षे—होमे विनियोगः।) इति—ऋष्यादयः॥

श्रीमहारुद्रप्रीत्यर्थं जप-अभिषेक-हवन करने में इन सब सामों का विनियोग है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ रुद्रारम्भः

२उ ३क २र १ २३१ २र ३ १ २३१२
ॐ भूर्भुवः स्वः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
२ ३ १ २ ३ १ २
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ १४६२ ॥

१ र र र र
ॐ तत्सवितुर्वरेणियोम् । भार्गोदेवस्य धीमाही २ ।
२ १र र २ १ १ २
धियोयोनः प्रचो १ २ १ २ । हुम् । आ २ । दायो । आ
२ १ १
३ ४ ५ ॥ १ ॥

पदपाठः

२ ३ २ १२र १ २ ३ १ २ ३
तत् । सवितुः । वरेण्यम् । भर्गः । देवस्य । धीमहि ।
१ २र ३ १ २ ३ १ २
धियः । यः । नः । प्रचोदयात् । प्र । चोदयात् ॥ १४६२ ॥

जो पापों का नाश करता है और हमारी बुद्धि को शुद्ध करता है उसी भर्ग का हम ध्यान करते हैं ।

May we attain that excellent glory of Savitar, the God : So may he Stimulate our prayers ! 1462.

२र १ २र १ २ १र र
ॐ भ्राजा । २ । भ्राजा ३ १ उ । वा २ । अग्नआयू-
२ र १र २ १र २ १ २ २र १र र २ १ र
ंषिपवसे । आसूवोर्जमिषञ्चनः । आरेबाधस्वदुच्छुनाम् ।
२र १ २र २र १र
भ्राजा । २ । भ्राजा ३ १ उ । वा २ । ए । भ्राज । ३ ॥१॥

(आ० गा० २५५)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आयूꣳषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः ।
३ १ २ ३ १ २
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ ६२७ ॥

१ २र १ २र ३ २ ३ १ २र १ २र ३
अग्ने । आयूꣳषि । पवसे । आ । सुव । ऊर्जम् । इषम् । च ।
३ २ ३ ३ १ २
नः ॥ आरे । बाधस्व । दुच्छुनाम् ॥ ६२७ ॥

हे अग्नि ! ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! हमें बल, आयु और अन्न प्रदान कीजिये । बुरे, लोभी तथा क्रोधान्ध जनों को हम से दूर रख कर पीडित कीजिये (या दुखदायी पीडा व दुख को दूर कीजिये)।

Agni, thou purest life, send down upon us food and vigorous strength.

Drive thou misfortune far away. 627.

१ र २ २ र र १ २
ॐ आ । भ्राज । ३ । अग्निर्मूर्द्धादी ३ वाः का १
२ र १ २
कू २ त् । पतिः पृथिवी ३ या आ १ या २ म् ।
र रर १ २ १ र २
अपाꣳरेताꣳसी ३ जाइन्वा १ ती २ । आ । भ्राज । २ ।
१ र ९ २ २र १र र २
आ । भ्राजा ३ उ वा । ए । आ भ्राज । ३ ॥ २ ॥
(आ० गा० २५६)

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २
अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
३ १ २र
अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति ॥ २७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ १ २र ३ २ ३ २
अग्निः । मूर्द्धा । दिवः । ककुत् । पतिः । पृथिव्याः । अयम् ॥
३ २ १ २ ३
अपाम् । रेताᳪसि । जिन्वति ॥ २७ ॥

वह अग्नि सब का शिरोमणि, द्यौ लोक या सूर्य का ककुद् अर्थात् सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि भाग के समान वहन करने वाला, सर्व-आश्रय और पृथिवी का आश्रय है। वही सब लोगों के वीजभूत समस्त स्थावर और जंगम प्राणियों को तृप्त करता, उत्पन्न करता तथा जीवन देता है।

Agni is head and height of heaven, the master of the earth is he :
He quickeneth the water's seed. 27.

२र १ २ १ २ ३ २
हाउ । ३ । शुक्रम् । ३ । शुक्रᳪशुक्रम् । ३ । शुक्रᳪ-
१ २ २ र र १ २
शूक्रम् । ३ । नियुत्वान्वाया ३ वागा १ ही २ ।
२ र १ २ र
अयᳪशुक्रोआ ३ यामा १ इता २ इ । गन्तासिसुन्वा
१ २ २र १ २ १
३ तोगृ १ हा २ ३ म् । हाउ । ३ । शुक्रम् । ३ । शुक्रᳪ-
२ ३ २ १ २ ३ २ १ ३
शुक्रम् । ३ । शुक्रᳪशूक्रम् । २ । शुक्रम् । शू २ । क्रा
५र र २र १
२ ३ ४ । औहोवा । ए । शुक्रम् । ३ ॥ ३ ॥

(आ० गा० १४८)

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
नियुत्वान् वायवा गह्य यᳪशुक्रो अयामिते ।
१ २ ३ २ ३ २
गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥ ६०० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ ३ २ ३ २
नियुत्वान् । नि । युत्वान् । वायो । आ । गहि । अयम् । शुक्रः ।
३ ३ १ २र १ २र ३ २ ३ २
अयामि । ते ॥ गन्ता । असि । सुन्वतः । गृहम् ॥ ६०० ॥

हे शक्तिसम्पन्न गतियुक्त प्रभो ! आप हमें प्राप्त होइये । यह कान्तिमान् सूर्य आप के नियम में है । आप साधक, उपासक, योगी के हृदय रूपी घर में प्रकट होते हैं ।

O Lord, endowed with power and high speed, Be thou near us. This radiant Sun is obedient to thy law. Thou revealest thyself in the heart of thy true devotee that adoreth thee with firm faith and meditation. 600.

२र २ १ २ १ २ ३ २
हाउ । ३ । चन्द्रम् । ३ । चन्द्रश्चन्द्रम् । ३ । चन्द्र-
१ २ र र १ २ र
श्चान्द्रम् । ३ । अत्राहगोरा ३ मान्वा १ ता २ । नाम-
र १ २ र १ २
त्वष्टुरा ३ पाइचा १ या २ म् । इत्थाचन्द्रमा ३ सोगृ
२र १ २ १ २
१ हा २ ३ इ । हाउ । ३ । चन्द्रम् । ३ । चन्द्रश्चन्द्रम् । ३ ।
३ २ १ २ ३ २ १ ३
चन्द्रश्चान्द्रम् । २ । चन्द्रम् । चा २ । द्रा २ ३ ४ ।
५र र २र १
औहोवा । ए । चन्द्रम् । ३ ॥ ४ ॥

(आ० गा० १४२)

२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् ।
३ २ ३ १ २ ३ २
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ १४७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र १ २र ३ १ २र १ २र ३क २
अत्र । अह । गोः । अमन्वत । नाम । त्वष्टुः । अपीच्यम् ॥
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ २
इत्था । चन्द्रमसः । चन्द्र । मसः । गृहे ॥ १४७ ॥

तेजस्वी, दीप्तमान् सूर्य की गमनशील किरणों के तेज का कुछ गुप्तांश चन्द्रमा के बिम्ब में है। इसी तरह सूर्यनाड़ी यानी सुषुम्ना का कुछ न ढका हुआ अंश भृकुटी के बीच वाम भाग में अथवा तालु के बीच में ऊपर की ओर मूर्धास्थान में गया है और वहीं परमेश्वर यानी आत्मा, ब्रह्म व परमात्मा का साक्षात्कार होता है। जगत् विधाता का गुप्त तेज ही सब को प्रकाशित करता है जैसे सूर्य का गुप्त प्रकाश चन्द्रमा को प्रकाशित करता है।

Then straight they recognized the mystic name of the creative steer.

There in the mansion of the moon. 147.

१ १ १ ३र २र ३र २र
ॐ हुम् । ३ । हो । ३ । हऽ । ३ । ओहा । ३ । औहोइ
२ १ २ १ २र ३ ४ ५ १ र
। ३ । इन्द्रन्नरो । ने ३ मधि । ताहवन्ताइ । ३ । वयो-
२ १ र २ र १ २ र २ १र
बृहत् । ३ । भिश्राष्टयेविधर्मणे । ३ । यत्यारियाः ।
२ १ २ ३ ४ ५ २ १ र १
यूनज । ताइधियस्ताः । ३ । सत्यमोजः । ३ । रजः
२र १ २ १ २ ३ ४र ५
सुवः । ३ । शूरोन्नृषा । ता ३ अव । सश्वकामाइ । ३ ।
२ १ र २ १ र १र १ र
भद्रऽसुधा । २ । भद्रऽसुधे । षभूर्जम् । इषमूर्जम् । २ ।
२र १र १ १र २र ३ ४ ५ २ १ २ १
आगोमताइ । व्रजेभ । जातुवन्नाः । ३ । बृहद्यशाः । ३ । दिवि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २ १ २ ३ऽ १र र र
दधे ३ हस् । २ । दिविदधे ३ । हाउवा । वागीडा-
र रर२ ३ १ १ १ १
सुवोबृहद्भा २ ३ ४ ५: ॥ ५ ॥

(आ० गा० २०५)

२र १ २ १ २ १ २
ॐ हाउ । ३ । आइही । ३ । आइहीया । ३ । आसाउ
१ २ १ २ १ १
। ३ । आयाम् । ३ । नामाः । ३ । किट् । २ । इन्द्रन्न-
रर र _ १ र र र _
रोनेमधिताहवा २ न्ताइ । यत्पार्यायुनजतेधिया २
१ रर रर _ १ र र र
स्ताः । शूरोन्नृषाताश्रवसश्चका २ माइ । आगोमतिव्रजे-
र _ १ १ १ र १
भजातुवा २ न्नाः । मना २ ३ होइ । प्राणा २ ३ होइ ।
र १ र १ र
चक्षु २ ३ होंइ । श्रोत्रा २ ३ ऽहोइ । घोषा २ ३
१ र १ र १ र
होइ । व्रता २ ३ ऽहोइ । भूता २ ३ ऽहोइ । पाना
१ र १ र १
२ ३ ऽहोइ । चित्ता २ ३ ऽहोइ । धीता २ ३ ऽहोइ ।
र १ र १ ३
सुवा २ ३ होंइ । ज्योता २ ३ इ हों २ । वा २ ३ ४ ।
५र र ३ १ १ १ १
औहोवा । ऊ २ ३ ४ ५ ॥ ६ ॥

(आ० गा० २०६)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पं० ... जहांगीराबाद ... बुलन्दशहर (उ०प्र०) ...३६४

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३
इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः॥३१८॥

१ २र १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २र
इन्द्रम् । नरः । नेमधिता । नेम । धिता । हवन्ते । यत् । पार्याः ।
३ १ २ १ २र १ २र १ २र ३ १ २र ३
युनजते । धियः । ताः । शूरः । नृषाता । नृ । साता । श्रवसः । च ।
१ २र १ २र ३ २ ३ २ ३
कामे । आ । गोमति । व्रजे । भज । त्वम् । नः ॥ ३१८ ॥

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारम्भ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं । वही इन्द्र हमको अन्न, बल और यश (गौओं) की प्राप्ति करावे ।

Men call on Indra in the armed encounter that he may make the hymns they sing decisive.

Here in combat and in love of glory, give us a portion of the stall of cattle. 318.

२र २र ३र २र ३र र २ र र
ॐ हाउ । २ । हाउ । भ्राजाओवा । ३ । अग्निर्मूर्धादी
१ २ २ र १ २
३ वाःका १ कू २ त् । पतिः पृथिवी ३ याआ १ या
र र र २ २र
२ म् । अपाꣳरेताꣳसी ३ जाइन्वा १ ती २ ३ । हाउ ।
२र ३र २र ३र र ३र २ ४
२ । हाउ । भ्राजाओवा । २ । भ्राजा ३ ओ ५ वा ६
२र १ २ १ २र १र ३ १ १ १ १
५ ६ । ए । विश्वस्यजगतोज्योती २ ३ ४ ५ः ॥ ७ ॥

(आ० गा० २५१)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
३ १ २र
अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति ॥ २७ ॥

पूर्ववत् ॥ २७ ॥

वह अग्नि सबका शिरोमणि, द्यौलोक या सूर्य के सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि भाग के समान वहन करने वाला, सब का आश्रय और पृथिवी का स्वामी है। वही सब लोकों का बीजभूत, समस्त स्थावर-जङ्गम और जलों की वीचि को उत्पन्न करता है और तृप्त करता तथा जीवन देता है। वही परमात्मा ही सबको रचता और तृप्त करता है।

Agni is head and height of heaven, the master of the earth is he.

He quickeneth the water's Seed. 27.

२र १ २र १र २ १र
ॐ आजा। २। आजा ३ १ उ। वा २। अयारुचा-
२र २ १ २र १र र २ १ २ १र २र
हरिण्यापुनानः। विश्वाद्वेषाꣳसितरतिसयुग्वभिः। सूरो-
१ २ १ २ १र र २ १ २र र र १र २ १र
नसयुग्वभिः। धारापृष्ठस्यरोचते। पुनानोअरुषोहरिः।
१ २र १ २ १र २ १र २ १र र २ १ २
विश्वायद्रुपापरियास्यृक्वभिः। सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः।
२र १ २र २र १ २र १ २र
आजा। २। आजा ३ १ उ। वा २। ए। विश्वस्मैजगते-
१र २ १ ३ ५र र १
ज्योतिः। ज्यो २। ता २ ३ ४ औहोवा। इड्इडा
१ १ १ १
२ ३ ४ ५ ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २
अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषाꣳसि
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः
२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥ ४६३ ॥

३ २ ३ २ १ २र ३ २ १ २र १ २र ३
अया । रुचा । हरिण्या । पुनानः । विश्वा । द्वेषाꣳसि । तरति ।
३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २ ३ १ २र
सयुग्वभिः । स । युग्वभिः । सूरः । न । सयुग्वभिः । स । युग्वभिः ।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २र १ २र
धारा । पृष्ठस्य । रोचते । पुनानः । अरुषः । हरिः । विश्वा । यत् ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २ ३ २
रूपा । परियासि । परि । यासि । ऋक्वभिः । सप्तास्येभिः । सप्त ।
३ १ २र
आस्येभिः । ऋक्वभिः ॥ ४६३ ॥

शूरवीर उपासक इस अज्ञान को हरनेवाली ज्योति से अपनी सहायक इन्द्रियों तथा योग-साधनों के द्वारा पवित्र होकर सब द्वेषों को तथा द्वेष करने वालों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से पवित्र करता हुआ गन्दगी को दूर करता है और जिस प्रकार वीर नेता अपने सहायकों के द्वारा सब दुष्टों को पराजित करता है। धारण करनेवाले परमात्मा की धारने की शक्ति सब जगह प्रकाशित हो रही है। पवित्र, सबका प्रेरक, प्रकाशमान, सर्वव्यापक परमात्मा वह है जो सब रूप वाली वस्तुओं तथा आकाश में स्थित पिण्डों को प्रकाशज्ञानयुक्त, शिर में स्थित सात प्राणों द्वारा व ब्रह्माण्ड में नक्षत्रों को चलाने वाली सात वायुओं द्वारा घेरे हुए सब ओर व्याप्त हो रहा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Even as the Sun by its rays dispels the gloom and purifies the air by removing all impurities; even as the warrior hero by vanquishing all adversaries and evil doers establisheth law;

Even so the mighty worshipper becoming pure in heart with his devotional illumination conquers over his senses and thus subdues all that defy and oppose him.

The all-pervading might of the Divine, that upholds the universe, manifests itself all-round.

Pures the cause of all, immanent and luminous–so is our lord whose will controls all shapes and forms in the universe, and whose law alone moves all the planets in firmament and in whom abides all living beings with its seven airs. 463.

यह मन्त्र 'श्लोके द्वे' नाम का गायन है—

५र २ १ १ २ १
ॐ हाउस्वरता । ब्रह्माणा २ः। इन्द्रम् । आ । महया
३ ५ १ १ २ र ३ २
२ न्तो २ ३ ४ । कैः । अवा २ र्द्धयान् । अहयेह । तवा
२र १ ३ १ १ १ १
३ ४ ५ इ । ऊ ६ ५ ६ । श्लोकयता २ ३ ४ ५ः ॥ ९ ॥

(वे० गा० ७७२)

५ २ १र
ॐ हाउ । अभि । स्वरता । ब्रह्माणआइन्द्रा २ म् ।
२ १ ३ ५ २ १ २ र
महया २ न्तो २ ३ ४ । कैः । अवर्द्धाया २ न् । अहयेह
१ ३ ५
न्तवा २ ३ ४ ५ ऊ ६ ५ ६ । श्लो २ ३ ४ काः ॥ १० ॥

(वे० गा० ७७३)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२३ २ ३ १ २
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ ॥ ४३९ ॥

३ १ २ १ २र ३ १ २ ३ २ १ २र १ २र २
ब्रह्माणः । इन्द्रम् । महयन्तः । अर्कैः । अवर्द्धयन् । अहये । हम् ।
३ २ ३
तवै । उ ॥ ४३९ ॥

वृत्रासुर को मारने के निमित्त प्रशंसा योग्य स्तोत्रों से पूजते हुए ब्राह्मण इन्द्र को प्रसन्न करते हैं।

The Brahmans with their hymns exalting Indra increased his strength that he might slaughter Ahi. 439.

यह मन्त्र 'अनुश्लोके द्वे' नाम का गायन है—

५र २ १ २ १ २ १ २र
ॐ हाउस्वरता । स्वरतस्वरा २ ३ ता । आनवस्ते-
१ २ र १ २ ५र २ १
रथम् । श्वायाता १ क्षू २ ३ः । हाउस्वरता । स्वरतस्वरा
२ १ २र १ २ १ २ १ ७
२ ३ ता । त्वष्टावज्रंपुरुहु । ताद्युमान्ता २ ३ ४ म् ।
५र २ १ ३ ५र र
हाउस्वरता । स्वरतस्व । रा २ । ता २ ३ ४ । औहोवा ।
२ १ १ १ १
स्वरा ३ ता २ ३ ४ ५ ॥ ११ ॥

(वे० गा० ७७४)

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षुस्त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ॥ ४४० ॥

१ २र ३ १ २र १ २र ३ १ २र १ २र ३
अनवः । ते । रथम् । अश्वाय । तक्षुः । त्वष्टा । वज्रम् । पुरुहूत ।
३ १ २
पुरु । हूत । द्युमन्तम् ॥ ४४० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे इन्द्र ! मनुष्य तथा देवताओं ने तुम्हारे घोड़े के लिये रथ का निर्माण किया। हे अनेकों से पुकारे गये इन्द्र ! विश्वकर्मा ने तुम्हारे वज्र को प्रकाशयुक्त किया।

Anavas wrought a chariot for thy courser, and Tvashtar, much-invoked ! the bolt that glitters : 440.

३ᴿ २ ३ ४ ५ २ १ २
ॐ औहोइ। सम्पदाम्। मघꣳरया ३ १ २ ३ ४
१ र र र २ २ ३
इ। षिणाइ। नकाममव्रतोहिनोतिनस्पृशात्। रयिमो
२ ३ ४ ५ इ। डा॥ १२॥

(वे० गा० ७७५)

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
शं पदं मघꣳरयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम्॥

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ २ ३
शम्। पदम्। मघम्। रयीषिणे। न। कामम्। अव्रतः। अ।
२ ३ २ ३ ३ २
व्रतः। हिनोति। न। स्पृशात्। रयिम्॥ ४४१॥

कल्याणकारी और शान्तिकारक स्थान, ज्ञान और धन-धान्य, अपने धन व ज्ञान को परोपकार में लगानेवाले और ऐश्वर्याभिलाषी को ही प्राप्त होता है। व्रत तथा नियम से रहित, निकम्मा, मूर्ख मनुष्य यथेष्ट फल को नहीं प्राप्त कर पाता। न कामना ही पूरी कर पाता है और धन का स्पर्श भी नहीं कर पाता।

Rest, wealth to him who longs for wealth ! the riteless stirs not his love nor wins his way to riches. 441.

सेतुषाम नाम का गायन—

२र १र र २ १
ॐ हाउ। ३। सेतूꣳस्तर। ३। दुस्त। रान्। ३।
१र२र १र र २ २र र १
दानेनादानम्। ३। हाउ। ३। अहमस्मिप्रथमजाऋता २ ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ १ १ २र १र र २ १
स्या ३ ४ ५ ॥ हाउ । ३ । सेतूंःस्तर । ३ । दुस्त । ३ ।
१ र २र १र २ १ र २र १र २र
रान् ।३। अक्रोधेनक्रोधं । २ । अक्रोधेनक्रोधं । हाउ । ३ ।
र र र र १ २ १ १ १ २र
पूर्वन्देवेभ्योअमृतस्यना २ ३ मा ३ ४ ५ ॥ हाउ । ३ ।
१र र २ १ २ १ र २र
सेतूंःस्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ । श्रद्धयाश्रद्धाम् । ३ ।
२र र र र र १ २ १ १ १
हाउ । ३ । योमाददातिसइदेवमा २ ३ वा ३ ४ ५
२र १र र २ १
त् ॥ हाउ । ३ । सेतूंःस्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ ।
२ १ र २ २र २ १
सत्येनानृतम् । ३ । हाउ । ३ । अहमन्नमन्नमदन्तमा
२ १ १ १ २ऽ २र१र
२ ३ द्मी ३ ४ ५ ॥ हाउ ३ वा । एषागतिः । ३ ।
२र १ २ १ १ २ १र २
एतदमृतं । ३ । स्वर्गच्छ । ३ । ज्योतिर्गच्छ । ३ ।
१र र २र १र २ १ १ १ १
सेतूंःस्तीर्त्वाचतुरा २ ३ ४ ५ः ॥ १२ ॥❀

(आ० गा० ८९)

❀ आजाआजे शुक्र चन्द्रे राजनरौहिणके शुक्रियाद्ये हाउस्वरतादीनि चत्वारि सेतुषाम चैषा पवित्रवर्ग एतेषामेकमनेकं वा सर्वाणि वा प्रयुञ्जानः पूतो भवति ॥ इति पवित्रवर्गः ॥ (सामवि० ब्रा० २।१)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम।
२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २र ३ १ २ ३ १ २
यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्न मन्न मदन्त मद्मि ॥५९४॥

पूर्ववत् ॥ ५९४ ॥

ब्रह्म (ईश्वर) का वाक्य है कि मैं (परमात्मा) इस जगत् की उत्पत्ति के पहले से वर्त्तमान हूँ। सब देवों से भी पूर्व विद्यमान हूँ। मैं अमृत का स्वरूप हूँ। जो मुझको इस प्रकार जान कर अन्न आदि का दान करता है वही सब की रक्षा करता है। मैं अन्न हूँ। प्राण को धारण करता हूँ। मैं ही कर्मफल भोग करनेवाले प्राणी को अपने में लीन कर लेता हूँ।

I am the Eternal, existing long before creation and gods. I am Immortality—(without end). (Realising this) he who giveth in charity food etc. is subserving my purpose, as he helps in preserving life. I am life and the means of life both. 594.

४ ५र ४ १ २ १ २र १ ९र र
ॐ अबोधिया। ग्नाइः समिधाजना २ नाम्।
१ २ २ र १र र २ १ ९ २
प्रताइधे ३ नूम्। इवायतीमुषासम्। यह्वाई ३ वा।
१ ९र १र २ १ २र र १ र २ र १र
प्रवा २ यामुज्जिहानाः। प्रभाना २ ३ वाः। सस्रतेना-
२ १ २ १ २ १
कमच्छ। इडा २ ३ भा ३ ४ ३। ओ २ ३ ४ ५
इ। डा ॥ १ ॥

(वे० गा० १२०)

३ २ ३ ५ १ १
ॐ महाइत्रा २ ३ ४ इणाम्। अवा २ रस्तू।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ ५ १ १ ३ २ ३

द्युक्षंमा २ ३ ४ इत्रा। स्या २ र्यम्णाः। दुराधा २ ३

५ २ १र ५ ५

४ र्षाम्। वरौहो २ ३ ४। वा। णा ५ स्यो ६ हाइ ॥२॥

(वे० गा० ३३३)

५ र र ५ २ १ र

ॐ महित्रीणामवरस्तू ६ ए। द्युक्षंमित्रस्यार्यम्णाः।

२ १र २ १र १ २ १

दुराधा २ ३ र्षाम्। वरौहो २। हुम्मा २। ण। स्यो

३ ५र र २र १ २ १ ३ १ १ १ १

२। या २ ३ ४। औहोवा। हा ओवा। ओवा २ ३ ४ ५॥

(वे० गा० ३३४)

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २

महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः।

३ २ ३ १ २

दुराधर्षं वरुणस्य ॥ १९२ ॥

१ २र ३ २ २ ३ १ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २

महि। त्रीणाम्। अवरिति। अस्तु। द्युक्षम्। द्यु। क्षम्। मित्रस्य।

३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ ३ १ २ १ २र

मि। त्रस्य। अर्यम्णः॥ दुराधर्षम्। दुः। आधर्षम्। वरुणस्य॥१९२॥

हे परमेश्वर ! मित्र, न्यायकारी तथा स्वीकार करने योग्य आप की रक्षा और असह्य तेज हमें प्राप्त हो।

Great, unassailable must be the heavenly favour of the Three. Varuṇa, Mitra, Aryaman. 192.

१र २ ९ २ र २

ॐ त्वावतो ३। हौ ३ हो ३ १ इ। पुरूवसो ३।

९ २ १ २ ९ २

हौ ३ हो ३ १ इ। वयमिन्द्रा ३। हौ ३ हो ३ १ इ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र २ १ २ १ २र १
प्रणेता ३ः। हौ ३ हो ३ १ इ। स्मसिस्थाता ३ः। हौ
२ १ र २ १ २
३ हो ३ १ इ। हरीणा ३ म्। हौ ३ हो ३ १ २ ३
४ ५ इ। डा॥ ४॥

(वे० गा० ३३५)

१ २ ३ १ २
त्वावतः पुरुवसो वयमिन्द्र प्रणेतः।
१ २
स्मसि स्थातर्हरीणाम्॥ १९३॥

१ २र ३ ३ ३ ३ २ ३ ३ ३
त्वावतः। पुरूवसो। पुरू। वसो। वयम्। इन्द्र। प्रणेतः। प्र।
३ १ २ १ २र ३ ३
नेतरिति। स्मसि। स्थातः। हरीणाम्॥ १९३॥

हे बहुधन सम्पन्न, सर्वव्यापक और मनुष्यों तथा इन्द्रियों के प्रेरक तथा अधिष्ठाता इन्द्र परमेश्वर! हम सब आप के समान स्वामी के ही सेवक हैं।

we, Indra, Lord of ample wealth, our guide. depend on one like thee,
Thou driver of the tawny steeds! 193.

२ ३ ५ २ ३ ५
ॐ इन्द्रन्ना २ ३ ४ रो। नेमाधा २ ३ ४ इता।
२ १ २ ३ ५ २ ३
हवन्ता २ ३ इ। यत्पारा २ ३ ४ याः। यूनाजा २ ३
५ २ १ २ ३ ५
४ ताइ। धियास्ता २ ३ः। शूरोना २ ३ ४ षा।
२ ३ ५ २ १ २ ३
ताश्रावा २ ३ ४ साः। चकामा २ ३ इ। आगो मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५ २ ३ ५ १ ९ २
२ ३ ४ ती । व्रजाइभा २ ३ ४ जा । त्वन्ना ३ उ वा
२ १र ३ १ १ १ १
३ । ए ३ । आयू २ ३ ४ ५ः ॥ ५ ॥

(वे० गा० ५४०)

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्र न्नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आगोमति व्रजे भजा त्व न्नः ॥३१८॥

पूर्ववत् ॥ ३१८ ॥

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारंभ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। वही इन्द्र हम को अन्न, बल और यश (गौवों) की प्राप्ति करावे।

Men call on Indra in the armed encounter that he may make the hymns they sing decisive.

Here in combat and in love of glory, give us a portion of the stall of Cattle ! 318.

५ र २र ३ १ १ १ १ २र ३
ॐ त्यमूषू । वाजि । ना २ ३ ४ ५ म् । देवजूता
५ र ३र २ १ २ २ ३ ४ ५
२ ३ ४ म् । सहोवानन्ता । रुता ३ । र२ँरथानाम् ।
२ ३ ५ २ २ ३र ५
अरिष्टना २ ३ ४ इमीम् । पृंतना ३ ४ ३ जमाशुम् ।
२ १ र २ ३ २ २ ३
स्वस्त । याइ । तार्क्ष्यमिहा ३ ४ ३ । हू ३ वा ५
इमा ६ ५ ६ ॥ ६ ॥

(वे० गा० ५६३)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ २ र र ४ २ ३र
ओ३म् ईयइया २ हाइ । त्यमूषुवाजिना ३ न्दे ३ वजू-
५ ३ ५४५र ३ ५ र ३र २ १ २
तम् । इ ४ यइया । हा २ ३ ४ इ । सहोवानन्ता । रुता
२ ३ ४ ५ २ २ २ १
३ । रंऽरथानाम् । ईयइया २ हाइ । अरिष्टा ३ । नाइ ।
२ १ २ ३ ४र ५ २ ५ ४ ५र ३ १ १ १ १
मी ३ म्पृत । नाजमाशूम् । इ ४ यइया । हा २ ३ ४ ५
२ १ १र २ ३ २ २ ४
इ । स्वस्त । याइ । ताक्ष्यमोहा ३ ४ ३ । हू ३ वा ५
इमा ६ ५ ६ ॥ ७ ॥

(वे० गा० ५६४)

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
त्यमूषु वाजिनं देवजूतंऽसहोवानं तरुतारंऽरथानाम् ।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुंऽस्वस्तये ताक्ष्यमिहा हुवेम ॥३३२॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १
त्यम् । ऊ । सु । वाजिनम् । देवजूतम् । देव । जूतम् । सहोवा·
२ ३ १ २ १ २र १ २र १ २र ३
नम् । तरुतारम् । रथानाम् ॥ अरिष्टनेमिम् । अरिष्ट । नेमिम् ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २र ३ २ ३
पृतनाजम् । आशुम् । स्वस्तये । सु । अस्तये । ताक्ष्यम् । इह । हुवेम ॥

हम ज्ञान तथा वेग से युक्त, धनदाता, विद्वानों से पूजित, स्वयं बलशाली, प्राणों, शरीरों, नक्षत्रों आदि को गति देने वाले, अहिंसक, आत्मिक शत्रुओं—काम-क्रोध आदि—को जीतने वाले, सर्वव्यापक, कर्मफलदाता और अत्यन्त वेगवान् उस परमेश्वर का अपने अन्तःकरण में आह्वान करते हैं और कल्याण के लिये स्मरण करते हैं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

This vigorous one whom deities commission, the conqueror of cars, the strong and mighty,

Swift, fleet to battle, with uninjured fellies, even Târkshya for our weal will we call hither. 332.

२र १र ७ २ १र
ॐ त्रातारमिन्द्रमविता। रमी २ ३ न्द्राम्। हवे-
र ७ २ १
हवेसुहवꣳशू। रमी २ ३ न्द्राम्। हुवाइनुशक्रंपुरुहू।
७ २ २१ २ १ र २१र २
तमी २ ३ न्द्राम्। इदꣳस्वस्तिनो मघवा। वा ३ ४ ३ इ।
२ ४
तू ३ वा ५ इन्द्रा ६ ५ ६ः ॥ ८ ॥

(वे० गा० ५६५)

३ २३ १ २ ३२३ २ ३ १२ ३२३ २३ १ २
त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्रꣳहवेहवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्।
३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३२ ३ २३१२ ३ १ २
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदꣳहविर्मघवा वेत्विन्द्रः॥३३३॥

३ १ २ १ २र ३ १ २ १ २र १ २र १ २र ३
त्रातारम्। इन्द्रम्। अवितारम्। इन्द्रम्। हवेहवे। हवे। हवे।
३ १ २ ३ १ २ १ २र १ २र ३ २ ३ २ ३ २
सुहवम्। सु। हवम्॥ शूरम्। इन्द्रम्॥ हुवे। नु। शक्रम्। पुरुहुतम्।
३ २ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
पुरु। हुतम्। इन्द्रम्। इदम्। हविः। मघवा। वेतु। इन्द्रः॥३३३॥

अन्न आदि से पालन करने वाले तथा शत्रुओं से बचाने वाले, प्रत्येक प्रार्थना तथा संग्राम में सरलता से प्रसन्न होनेवाले, शूर, शक्तिशाली तथा प्रजाओं से पूजित इन्द्र का मैं आह्वान और स्मरण करता हूँ। मेरी इस स्तुति को इन्द्र स्वीकार करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Ṣakra I call, Indra invoked of many. May Indra maghavan accept our Presents. Indra whose right hand wields the bolt we worship, driver of bay steeds seeking sundened courses. 333.

३र ४ ५ र २ ३ ४र ५ ५ १ र
ॐ सोमः पुना । हो । नऊर्मिणा ६ ए । अव्यंवा-
२ २ २ २ ३ ३ १ १ १
रंविधा १ वा ३ ती । अग्रे वा २ ३ ४ ५ । चा २ ३ ४
१ २ १ २ १ ३ ५र र
५: । पवमा २ ३ ना ३: । का २ ना २ ३ ४ औहोवा ।
२ ३ १ १ १ १
क्रदद २ ३ ४ ५ ॥ ९ ॥

(वे० गा० ११५४)

१ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ ५७२ ॥
१ २र ३ २ ३ १ २ १ २र १ २र ३
सोमः । पुनानः । ऊर्मिणा । अव्यम् । वारम् । वि । धावति ॥
१ २र १ २ १ २र १ २र
अग्रे । वाचः । पवमानः । कनिक्रदत् ॥ ५७२ ॥

सोम, स्वच्छ कान्तिमान् आनन्दरस या मल आदि से रहित अन्तःकरण-वाला, शम आदि गुणों से सम्पन्न योगी वा प्रभु ऊर्ध्व गति से अज्ञान के आवरण को पार करता है। वह और अधिक उज्ज्वल, पवित्र सर्वप्रथम वेदवाणी का उपदेश करता है।

Soma, while filtered, with his wave flows through the long wool of the sheep, roaring, while purified, before the voice of song. 572.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४ ५ १र र २ १ १
ॐ सासू। न्वेयोवसू २ ३ नाम्। योरा २ यामा
र र १ २ १ २ १ २ १
२। नेतायइडा २ ३ नाम्। सो २ ३ माः। यः सुक्षिता
५ ५
२ ३ ४ इनो ६ हाइ ॥ १० ॥

(वे० गा० ११८४)

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
स सुन्वेयो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्।
२ ३ १ २ ३ २
सोमो यः सुक्षिती नाम् ॥ ५८२ ॥

२ ३ २ १२र ३ २ ३ २ ३ २
सः। सुन्वे। यः। वसूनाम्। यः। रायाम्। आनेता। आ। नेता।
१ २र १ २र ३ २ ३ २
यः। इडानाम्। सोमः। यः। सुक्षितीनाम्। सु। क्षितीनाम् ॥५८२॥

जो धनों का, जो दुग्ध आदि देने वाली गायों का, जो भूमियों का, जो श्रेष्ठ मनुष्यों का लानेवाला है, वह सोम ऋत्विजों द्वारा अर्क निकाल कर खींचा गया।

Soma that is pure and shining, full of joy and without any impurity, and that inspires us and endows us with self-control, removes the veil of darkness and ignorance (from before us).

It is He who utters the voice of the Vedas first of all, the purest truth. 582.

२ऽ १ २र र १ र २ १र २ २ऽ
ॐ हाउ ३ वा। विश्वतोदावन्विश्वतोनआभर। हाउ
१ र २ १र २र २ऽ १र २ऽ
३ वा। यन्त्वाशविष्ठमीमहे। हाउ ३ वा। आयुः। हाउ

५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१र २ऽ १र २ऽ
३ वा। सूवः। हाउ ३ वा। ज्योतिः। हाउ ३ वा ३।
३ १ १ १ १
ई २ ३ ४ ५॥ ११॥

(आ० गा० १२४)

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर यं त्वा शविष्ठमीमहे ॥४३७॥

१ २र १ २र ३ ३ १ २ ३ २ ३
विश्वतोदावन्। विश्वतः। दावन्। विश्वतः। नः। आ। भर।
२ ३ १ २र १ २र
यम्। त्वा। शविष्ठम्। ईमहे॥ ४३७॥

हे सब ओर से दान करने वाले तथा प्रलय काल में सब का संहार करने-वाले परमेश्वर बलवान् आप से प्रार्थना करते हैं कि हमें सब ओर से सुख से पूर्ण कीजिये।

Giver from all sides, bring to us from every side, thou whom as strongest we entreat! 437.

२र १र र २र १ २ १ २
ॐ हाउ। ३। आयुश्चक्षुर्ज्योतिः। औहोवा। ईया।
१ र २ १ २ १ र
उदुत्तमम्वरुणपाशमा २ ३ स्मात्। अवाधमम्विमध्यमꣳ-
२ १ २ १ र र २ १ २ २ र
श्रथा २ ३ या। अथादित्यव्रतेवयन्ता २ ३ वा। अना-
१ र र २ १ २ २र १र
गसोअदितयेसिया २ ३ मा ३। हाउ। ३। आयुश्चक्षु-
र २र १ २ १ ३ ५र र
ज्योतिः। औहोवा। इ २। या २ ३ ४। औहोवा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ १ १ १
ई २ ३ ४ ५ ॥ १२ ॥ २ ॥❀ इत्यरिष्टवर्गः ॥

(आ० गा० ४०)

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय ।
१ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
अथादित्यव्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम ॥ ५८९ ॥

२ ३ २ ३ १ २र ३ २ १ २र ३ २ २
उत् । उत्तमम् । वरुण । पाशम् । अस्मत् । अव । अधमम् । वि ।
३ २ ३ १ २र ३ ३ २ ३ २
मध्यमम् । श्रथाय ॥ अथ । आदित्य । आ । दित्य । व्रते । वयम् ।
१ २र ३ १ २ ३ ३ १ २ १ २र ३
तव । अनागसः । अन् । आगसः । अदितये । अ । दितये । स्याम ॥

हे वरणीय विघ्ननिवारक परमात्मन् वरुण ! प्रकृति के सात्विक तेजोमय वन्धनों को ऊपर से ही उत्तम भोगों द्वारा शिथिल कर दीजिये । निकृष्ट तामस वन्धन काम, मोह आदि के वन्धन नीचे, निम्न कोटि के भोगों द्वारा गिरा कर ढीला कर दीजिये और मध्यम राजस बन्धन आवेश, क्रोध, लौकैषणा को अनेक प्रकार से विशेष रूप से शिथिल कीजिये । हे अखण्ड, अदीन, सबको अपने भीतर लेने में समर्थ तेजस्विन् प्रभो ! आप के नियम व्यवस्था में हम निरपराध, निष्पाप होकर दीनतारहित होने के लिए समर्थ हों ।

O Lord who destroyeth all our impediments and whom we adore !

❀ अबोध्यग्निर्महित्रीणामिति द्वे त्वावत इन्द्रज्वरो ग्रामे गेयमायुरिति चास्य निधनं कुर्यात्-त्यमूषु द्वे त्रातारमिन्द्रꣳहविरित्येतस्य स्थाने स्वरितन इति सोमः पुनान्त्यꣳससुप्रथमं विश्वतोदावन्निति पूर्वं रहस्य उदुत्तमं वरुणपाश मित्येपोऽरिष्ट वर्ग एतेषामेकमनेकं वा सर्वाणि वा प्रयुञ्जानः शतं वर्षाणि जीवति जरयैव विस्रꣳसते ॥ सामवि० ब्रा० २ । १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Release thy bright and Satvika power from above; likewise let our darkness like greed and selfishness be abated;

Mayst thou also help us in overcoming anger, attachment and desire form worldly gain.

Thou, O Lord ! one indivisible and without a peer, all-embracing and luminous, may we become faultless and sinless may we suffer from no want. 589.

अथ विनायकसंहिता

४ ५ ४ २ २ १ २ १
ओ३म् अदर्दरूत् । समसृजोविखानि । त्वमर्णा २ ३ ४
५ २ २ २ १ २ २ १२ ५
वान् । बद्धधानाँ३अरारमणाः । महांता २ ३ ४ मी ।
२ १ २ १ ५ १ २ १ २ १
द्रपर्वतंवियाद्धः । सृजाद्धा २ ३ ४ राः । अवयद्दान । वा
२ १
२ ३ न्हा ३ ४ ३ न् । ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ॥ १ ॥

(वे० गा० ५३१)

४ ५ ४ ५ ४ ५ ४ १ २ १ २
ओ३म् अदर्दरूत्समसृजाः । विखानि । त्वमर्णवान्-
२ २ २ १ २ १२ २ १
बद्धधानाँ३अरा २ ३ मणाः । महान्तमिन्द्रपर्वतंविया
२ १ २२ १ १२ १ २२ १
२ ३ द्धाः । सृजाद्धारा २ः । अवा २ यद्दान । वा २ ।
३ ५२ २ ३ १ १ १ १
यां २ ३ ४ औहोवा । हा २ ३ ४ ५ न् ॥ २ ॥

(वे० गा० ५३२)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

अदर्दरुत् समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्धधानाँ२ अरम्णाः ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २

महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्धारा अव यद् दानवान् हन् ॥

१ २र १ २र २ ३ १ २र २ १ २र २

अदर्दः । उत्सम् । उत् । सम् । असृजः । वि । खानि । त्वम् ।

३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र २

अर्णवान् । बद्धधानान् । अरम्णाः ॥ महान्तम् । इन्द्र । पर्वतम । वि ।

३ १ २ ३ २ १ २र १ २र २ ३ १ २ २

यत् । वरिति । सृजत् । धाराः । अव । यत् । दानवान् । हन् ॥ ३१५ ॥

हे इन्द्र ! आप ऊर्ध्व स्थान मूर्धा भाग को विदीर्ण करते हैं और इन्द्रिय द्वारों को रचते हैं। आप गतिशील आघात-प्रतिघात करनेवाले प्राणों को व्यवस्थित करते हैं। आप हमारे महान् पर्वों (पोरुओं) वाले शरीर को विशेष रूप से प्रकट करते हैं और ज्ञान देनेवाले प्राणों को प्रेरित करते हैं तथा ज्ञान, स्मृति रूप धाराओं को विशेष रूप से प्रेरित करते हैं। आप ही अज्ञान आदि को नष्ट करते हैं।

The well thou clavest, settest free the fountains and gavest rest to floods that were obstructed.

Thou, Indra, laying the great mountain open, slaying the Dānava, didst loose the torrents. 315.

४ ५ ४ ५ ३ २ ३ २ ३ ५ ४ ३ ४

ॐ सूष्वाणासाः । इन्द्रस्तु । मसित्वा । सनिष्यन्त-

५ ३ ५ र ३ ? ३

श्चित्तुविन्न । म्णावा २ ३ ४ जाम् । आनः । भराओ २

५ ४ ५ र ४ ५ ४ ५ २ र

३ ४ वा । सुवितंयस्यको । ना । तानात्माना । सह्या ।

२ २ ४

मा ३ ४ ३ । तू ३ वो ५ ता ६ ५ ६ः ॥ ३ ॥

(वे० गा० ५३३)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ २ २̂ ३ ५ १र
ॐ ओ ३ हो ३ होइ । सू २ ३ ४ ष्वा । णासाः ।
३ २ ३ २ ३ ५ २ २ २̂ ३
इन्द्रस्तु । मसित्वा । ओ ३ हो ३ होइ । सा २ ३ ४
५ १ २ १ २̂ ३ ४ ५ २ २
नी । ष्यन्ताः । ची ३ त्तुवि । नृम्णवाजाम् । ओ ३ हो
२̂ ३ ५ १ २ २ ३
३ होइ । आ २ ३ ४ नाः । भरा । सुविता ३ म् । यस्य-
४ ५ २ २ २̂ ३ ५ १
कोना । ओ ३ हो ३ होइ । ता २ ३ ४ ना । त्मना ।
२ १र २ २ ४ ५
सह्यिया । मा ३ ४ ३ । तू ३ वो ५ ता ६ ५ ६ः ॥ ४ ॥

(वे० गा० ५३४)

३ १२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिश्यन्तश्चित् तु विनृम्ण वाजम् ।
१ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
आ नो भर सुवितं यस्य कोना तना त्मना सह्यामा त्वोताः ॥३१६॥

३ १ २ ३ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३
सुष्वाणासः । इन्द्र । स्तुमसि । त्वा । सनिष्यन्तः । चित् ।
३ ३ ३ १ २र २ ३ ३ ३ १ २
तुविनृम्ण । तुवि । नृम्ण । वाजम् ॥ आ । नः । भर । सुवितम् ।
१ २र १ २ १ २र १ २र ३ १ २र २ ३
यस्य । कोना । तना । त्मना । सह्याम । त्वोताः । त्वा । उताः ॥३१६॥

हे इन्द्र ! भक्ति करते हुए तथा अन्नादि भोग्य पदार्थ का सेवन करते हुए तेरे आनन्द रसों का सम्पादन करते हुए हम उपासक आप से बहुत धन सम्पन्न करने की स्तुति करते हैं। आप से रक्षित हम जिस की कामना करते हैं, उस उत्तम व कल्याणकारी बल, धन, ऐश्वर्य को हमें प्रदान कीजिए। हम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वयं अपने आप विस्तृत अनुभव तथा धनों को प्राप्त करें। हमें ऐसा पुत्र दीजिये जिससे हम शत्रुओं को जीत सकें और हमें ऐसा ज्ञान दीजिये जिससे हम काम, क्रोध आदि को नष्ट कर सकें।

When we have pressed the juice we laud .thee, Indra, most valorous ! even about to win the booty.

Bring us prosperity, and by thy great wisdom, under thine own protection, may we conquer ! 316.

५र र २ १ २ १ २र १
ॐ आतूनआ। द्रक्षुमा २ ३ न्ताम्। चायित्रङ्ग्राभा
२ १ १ १ २र ३ ५
२ ३ ४ हाइ। संगृ २ भाया। महाहस्तो २ ३ ४ हाइ।
१ १ १ १ ३
दक्षा २ इणाइना। महा २ ३ । हा २ स्ता २ ३ ४
५र र १ २ १ १ १ १ १
औहोवा। दक्षिणे ३ ना २ ३ ४ ५॥ ५॥

५र र ४ ५ १ ३
ॐ आतूनइन्द्रक्षुमान्ताम्। चित्रा २ ग्रा २ ३ ४
५ २ ३ ५ १ २ १ ३
भाम्। संगृभा २ ३ ४ या। मा ३ हा ३। हा २ स्ता
५र र १ २ र ३ १ १ १ १
२ ३ ४ औहोवा। दक्षिणेना २ ३ ४ ५॥ ६॥

४र ५र र ४ ५ ५ २ १ र
ॐ आतूनइ। द्रक्षुमा ६ न्ताम्। चित्रंग्राभङ्संगृभा
१ २ १ र १ २ २ ३
२ या। चित्रंग्राभङ्सम्। गृ। औ ३ होइ। भा २ ३ ४
५ २र १ र र १ २र १ ३र
या। ऐहोइ। महाहस्तीदक्षा २ ३ होइ। औहो। वाहो
५ ४ ५
२ ३ ४ वा। णा ५ इनो ६ हाइ ॥ ७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५र र ५ २ १ र
ॐ आतूनइन्द्रक्षुमा ६ न्ताम् । चित्रंग्राभ ँ संगृ-
र २ १ र १ ३ ५ ३
भाया । चित्रंग्राभ ँ सम् । गृ २ ३ । इ २ ३ ४ हा । भा
५ २र १ र र १ २र १
२ ३ ४ या । ऐहोइ । महाहस्तीदक्षा २ ३ होइ । औहो ।
३र ५ ४ ५
वाहो २ ३ ४ वा । णा ५ यिनो ६ हाइ ॥ ८ ॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
आतू न इन्द्र क्षुमन्तश्चित्रङ् ग्राभँसंगृभाय ।
३ १ २र
महाहस्ती दक्षिणेन ॥ १६७ ॥

२ ३ ३ १ २ ३ २ ३ २ २
आ । तू । नः । इन्द्र । क्षुमन्तम् । चित्रम् । ग्राभम् । सम् ।
३ ३ २ ३ २ १ २र
गृभाय । महाहस्ती । महा । हस्ती । दक्षिणेन ॥ १६७ ॥

हे इन्द्र, बड़े भारी हस्तवाले यानी हे धारक शक्तियों से युक्त महान् परमेश्वर, आप हमारे लिये अन्न, निवास आदि विज्ञान से युक्त ग्रहण के योग्य अद्भुत आश्चर्यजनक ज्ञान उत्तम साधनों से अच्छे प्रकार ग्रहण कराइये ।

Indra, as one with mighty arm, gather for us with thy right hand.

Manifold and nutritious spoil ! 167.

५ र २ १ २ ४ ५
ॐ मृज्यमानाः । सुहस्तिया ३ । सामू ३ द्रायिवा ।
२ १ २ ४ ५ २
चमिन्वसा ३ इ । रायी ३ स्पाइशा । गंबहला ३ म ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ ३ ५ १ २र १ २ २
पूरू २ स्पृ २ ३ ४ हाम् । पवमा । ना । औ ३ हो ।
२ १ ५ ४ ५
भियो २ ३ ४ वा । षा ५ सो ६ हाइ ॥ ९ ॥

(वे० गा० ९८९)

४ र ४ १ १
ॐ मृज्यमाना ५ः सुहस्तिया । समू २ द्राइवा २ ।
१ १ १ २ २
चमा २ इन्वासी २ । रयिंपिशंगंबहुलंपुरुस्पृहा औ ३ हो ।
१ २ २ १ ५ ४ ५
पवमा २ ३ ना ३ । भियो २ ३ ४ वा । षा ५ सो ६ हाइ
॥ १० ॥ ३ ॥ ❀इति विनायसंहिता ॥

(वे० गा० ९९४)

३ १ २ ३ १ २र
मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २३ २३ १२ ३क २र
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥ ५१७ ॥

३ १ २ ३ ३ ३ ३ २ ३ ३ २ १ २र
मृज्यमानः । सुहस्त्य । सु । हस्त्य । समुद्रे । सम् । उद्रे । वाचम् ।
३ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र
इन्वसि ॥ रयिम् । पिशङ्गम् । बहुलम् । पुरुस्पृहम् । पुरु । स्पृहम् ।
१ २र ३ २ ३
पवमान । अभि । अर्षसि ॥ ५१७ ॥

हे उत्तम हाथ की उंगलियों के समान दश प्राण साधनों से युक्त !

❀ अदर्हः सुष्वाणास भातून इति वर्गा मृज्यमानः सुहस्त्येति प्रथम षष्ठे चैषा वैनायकी नाम सा्ँहितै तां प्रयुञ्जन् विनायकं प्रीणाति ॥ साम वि० ब्रा० १।४।३३, ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पवित्र करनेवाले सुन्दर प्रकाश युक्त पवमान प्रभो, सोम आत्मन् अन्वेषण किये जाते हुए आप आनन्द रस के भण्डार हृदय में वेदवाणी को प्रेरित करते हैं। हे हृदय को पाप से शून्य एवं पवित्र करने वाले आप पीले, और स्पृहणीय सुवर्ण आदि सुन्दर लोकप्रिय ऐश्वर्य को सब ओर प्राप्त कराते हैं।

Deft-handed ! thou when purified—liftest thy voice amid the sea. Thou, Pavamâna, makest riches flow to us, yellow, abundant, much desired. 517.

अथ स्कन्दसंहिता

५र र २ र र र १ २
ॐ आमन्द्रैरा। द्रहरिभाइर्याहिमयूरा ३ रोमाभा
४ ५ ४ ५ २ ३ ५ २ र
३ इः। मात्वाकाइचीत्। नियेमू २ ३ ४ रीत्। नपा-
१ २ १ २ १ १ ३
शिनाः। अतिधान्वे २। वताङ् २ ३। आ २ इहा
५र र ३ ५
२ ३ ४ औहोवा। वा २ ३ ४ याः ॥ ४ ॥

(वे० गा० ४१५)

४र ५ ४र ५ ४ ४ २र १ २ १र
ॐ आमन्द्रैरिन्द्र। हा ५ रिभाइः। याहिमयूररोम-
र र २ १ र २ १र
भाइः। मात्वाका २ ३ इचीत्। नाइयेमुरित्। नपाशा
२ १ २ १ १
२ ३ इनाः। अताइधा २ ३ न्वे। वता ॱ २ ३। आ
३ ५र र २ १ १ १ १ १
२ इहा २ ३ ४ औहोवा। वयो ३ भी २ ३ ४ ५ः ॥ २॥

(वे० गा० ४१६)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४र ५ ४र ५ ४ ४ २र १ २ १र
ॐ आमन्द्रैरिन्द्र। हा ५ रिभीः। याहिमयूररोम-
१ _ १ _ १र र २ १र
भाउ। वा २। मात्वा २। केचिन्नियेमुरिन्नपाशिनाउ।
१ _ १ _ १ र२
वा २। आतो २। धन्वेवता ३ १ उवा २ ३। ई २
५
३ ४ हो॥ ३॥

(वे० गा० ४१७)

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
आमन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूर रोमभिः।
३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
मा त्वा के चिन्नियेमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि॥२४६॥

२ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आ। मन्द्रैः। इन्द्र। हरिभिः। याहि। मयूररोमभिः। मयूर।
३ २ ३ २ ३ २ ३ २ २ ३ १ २
रोमभिः॥ मा। त्वा। के। चित्। नि। येमुः। इत्। न। पाशिनः।
१ २र १ २र ३ २ ३
अति। धन्व। इव। तान्। इहि॥ २४६॥

हे इन्द्र परमेश्वर! आप मोर के शब्दों के समान उत्तम हर्षप्रद स्वरों से स्तुति किये जाने पर अपनी हर्षप्रद शक्तियों से हमारे अन्तःकरण में प्रत्यक्ष होइये। पाशधारी मनुष्यों के समान कोई भी आप को बाँध नहीं सकता। शस्त्रधारी के समान आप उन जाल रचनेवालों का निग्रह करते हैं।

Come hither, Indra, with bay steeds, joyous, with tails like peacock's plumes!

Let no men check thy course as fowlers stay the bird: Pass o'er desert lands! 246.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४र ५ ४ ५ २ १ — १ २
ॐ आनः । एविश्वा । सुहाव्या २ म् । आइन्द्रꣳसम ।
१ २ २̂ ३ ५ २ ३ १ २र
त्सुभू १ षाता । ऊ २ ३ ४ पा । हा ३ हाइ । ब्रह्माणि-
१ २र ३ २ १ २ १ २ १ २ २
सवना । निवृत्रहान् । परमा २ ३ ज्याः । आर्चा ३ हाइ ।
१ २̂ ४ ५ ४
षमा । औ ३ होवा । हो ५ इ । डा ॥ ४ ॥

(वे० गा० ४६३)

५र र र र ४ ५ १ र र
ॐ आनोविश्वासुहाहाव्याम् । इन्द्रꣳसमत्सुभूषतो ।
१ २ १ २ १ २ १
पब्रा २ ३ ह्मा । णिसवना । निवृत्रहान् । परमा २ ३
२ १ २ २ २ १ २ ४ ५ ४
ज्याः । आर्चा ३ हाइ । षमा । औ ३ होवा । हो ५
इ । डा ॥ ५ ॥

(वे० गा० ४६४)

५र र र ४ ५ १
ॐ आनोविश्वासुहाव्याम् । इन्द्राम् । समत्सु-
र २ १ २ — २ र १ २
भूषत । उपाब्रा १ ह्मा २ । णिसवनानिवृत्रहन् । परामा
— २ १र २ १
१ ज्या २ः । ऋचीषा २ ३ मा ३ ४ ३ । ओ २ ३ ४ ५
इ । डा ॥ ६ ॥

(वे० गा० ४६५)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आनो विश्वासु हव्यमिन्द्रꣳ समत्सु भूषत ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥२६९॥

२ ३ १ २र १ २र १ २र ३ १ २र ३ १ २र
आनः । विश्वासु । हव्यम् । इन्द्रम् । समत्सु । भूषत । उप ।
१ २र १ २र ३ ३ ३ २ ३
ब्रह्माणि । सवनानि । वृत्रहन् । वृत्र । हन् । परमज्याः । परम ।
२ ३
ज्याः । ऋचीषम ॥ २६९ ॥

मनुष्यो ! सब आनन्द-उत्सवों के अवसर पर तथा संग्रामों में हमारे पूज्य इन्द्र, ईश्वर की उपासना व गुणगान करो। हे विघ्नों के दूर करनेवाले शत्रुओं को जीतनेवाले स्तुति के योग्य परमात्मन् ! आप हमारे स्तोत्रों तथा यज्ञों को शोभायुक्त कीजिये ।

Come, thou most mighty vṛita-slayer, meet for Praise, Come to libations and to hymns ! 269.

३ ४ ३ २ ४ ५ २ १र २र १
ॐ हो ४ वा । उहुवा ३ । होवा । प्रसेनानाइः ।
र र २ २ ३ ४ ५ २ १ २र १ १ २
शूरोआ ३ । ग्राइरथानाम् । गव्यन्नेताइ । हर्षता ३ इ ।
२ ३ ४ ५ २ १र २ १ १ २ २र ३ ४ ५
अस्यसेना । भद्रान्कृण्वान् । इन्द्रहा ३ । वान्त्सखिभ्याः ।
२र १र २र १ २ १ २ ३ ४ ५ ३ ५
आसोमोवा । स्त्रा ३ रभ । सानिदत्ताइ । हो ४ वा ।
३ २ ४ ५ ५
उहुवा ३ । होवा ६ । हाउवा ॥ ७ ॥

(वे० गा० १०३५)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५र ४ २ १ १ १ १ २ १र २र १ र र २
ॐ औहो ३ वा २ ३ ४ ५ । प्रसेनानाइः । शूरोआ
२ ३ ४ ५ २ १ २र १ १ २ २ ३
३ । ग्राइरथानाम् । गव्यन्नेताइ । हर्षता ३ इ । अस्य-
४ ५ २ १र २ १ १ २ २ ३ ४ ५
सेना । भद्रान्कृण्वान् । इन्द्रहा ३ । वान्तसखिभ्याः ।
५र ४ २ १ १ १ १ २र १र २र १ २ १
औहो ३ वा २ ३ ४ ५ । आसोमोवा । स्त्रा ३ रभ ।
२ २ ४
सा ३ ४ ३ । नी ३ दा ५ त्ता ६ ५ ६ इ ॥ ८ ॥

(वे० गा० १०३६)

५र ४ २ १ १ १ ३ र २र १ र र २
ॐ ओहो ३ वा ३ ४ ५ । प्रसेनानाइः । शूरोआ ३ ।
२ ३ ४ ५ ३ २र १ १ २ २ ३ ४ ५
ग्राइरथानाम् । गव्यन्नेताइ । हर्षता ३ इ । अस्यसेना ।
३ र २ १ १ २ २ ३ ४ ५ ५र ४
भद्रान्कृण्वान् । इन्द्रहा ३ । वान्तसखिभ्याः । ओहो ३
२ १ १ १ ३र र २र १ २ १ २
वा ३ ४ ५ । आसोमोवा । स्त्रा ३ रभ । सा ३ ४ ३ ।
२ ४ ३ १ १ १ १
नी ३ दा ५ । ता २ ३ ४ ५ इ ॥ ९ ॥

(वे० गा० १०३६)

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रसेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ २ १ २
भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान्तसखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ ३ २ ३ २ १२ १२र १२र ३२
प्र । सेनानीः । सेना । नीः । शूरः । अग्रे । रथानाम् । गव्यन् ।
३ १२र ३ १२र ३२ ३२ ३ २ ३
एति । हर्षते । अस्य । सेना ॥ भद्रान् । कृण्वन् । इन्द्रहवान् । इन्द्र ।
२ १२र ३ २ १२र १२र ३ १ २
हवान् । सखिभ्यः । स । खिभ्यः । आ । सोमः । वस्त्रा । रभसानि ।
३
दत्ते ॥ ५३३ ॥

सेना का नायक, बलवान् , शूरवीर सेनापति जिस प्रकार रथों, रथारोही सैनिकों के आगे पृथिवी की विजय के लिये बढ़ता है और उसकी सेना उत्साह से प्रसन्न होती है। वह वीर राजा अपने मित्रों के लिये अति कल्याणकारी, सुखदायक, ऐश्वर्ययुक्त राजोचित आज्ञा वचन करता हुआ अति उत्तम वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार सोम यानी आत्मा इन्द्रियों का नेता शरीरों के आगे इन्द्रियों की वृद्धि चाहता हुआ आगे आगे चलता है। इसकी सेना यानी इन्द्रियाँ प्रसन्न होती हैं। वह भक्त सौम्य उपासक अपने मित्रों यानी इन्द्रियों के लिये परमेश्वर के आह्वानों को कल्याणकारी करता हुआ अति चञ्चल आच्छादक आवरणों को हटा लेता है।

In forefront of the cars forth goes the hero, the leader, seeking spoil : his host rejoices.

Soma endues his robe of lasting colours, and blesses for his friends, their calls on Indra. 533.

२ १ २र १ २ १ २ १
ॐ पवित्रन्तेविततंब्रह्मणस्पते ३। हुवे २ ३। २।
१ २ २ २ १ र २र १ २र १
होवा ३ हा ३। हाइ। प्रभुर्गात्राणिपर्येषिविश्वता २
१ १ २ २ २ १ २ र१
३ः। हुवे २ ३। २। होवा ३ हा ३ हाइ। अतप्ततनूर्न-
१र १र २ १ १ २ २
तदा २ मोअश्नुते ३। हुवे २ ३। २। होवा ३ हा ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १र २ १ २ १ ९र १
हाइ । ऋतासइद्धहन्तःसन्तदा २ शत । हुवे २ ३ । २ ।
१ २̂ २̂ २̂ ५र र २ १र र र ९र
होवा ३ हा ३ । हा ३ ४ । औहोवा । अर्कोदेवाना २
१र ९र ३ १ १ १ १
म्परमेवियो २ मा २ ३ ४ ५ न् ॥ १० ॥

(वे० गा० ११२२)

२ १ २र १ २ १ २ १ २र १
ॐ पवित्रन्तेविततंब्रह्मणस्पते ३ । हुवाइ । औहोवा
२ १ र २र १ २र १ १
२ । प्रभुर्गात्राणिपरियेषिविश्वता २ ३ः । हुवाइ ।
२र १ १ २ र १ ९र १र २ १
औहोवा २ । अतप्ततनूर्नतदा २ मोअश्नुते ३ । हुवाइ ।
२र १ १र २ १ २ १ ९र १
औहोवा २ । ऋतासइद्धहन्तःसन्तदा २ शत । हुवाइ ।
२र १ ३ २र र २ १ २ र १र २
औ । हो २ । वा २ ३ ४ । औहोवा । अर्कस्यदेवाःपर-
१र ९र ३ १ १ १ १
मेवियो २ मा २ ३ ४ ५ न् ॥ ११ ॥ ४ ॥ *इति
स्कन्दसंहिता ॥

(वे० गा० ११२३)

* आमन्द्रैरिन्द्र हरिभिरानो विश्वासु हव्यम्प्रसेनानीरिति वर्गाः पवित्रन्त इति द्वे एषा स्कन्दस्य सꣳहितैताम् प्रयुञ्जन् स्कन्दं प्रीणाति ॥ साम वि० ब्रा० ४।१।३५, ३६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १२ ३ १२ ३१ २र ३ १२ २१२
पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभु र्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
१२ ३३उ ३ १ २ ३२३१ २र ३ १ २र
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सं तदासत ॥५६५॥

३१२ ३ १२र २ ३ ३ ३ ३२ ३
पवित्रम् । ते । विततम् । वि । ततम् । ब्रह्मणः । पते । प्रभुः । प्र ।
२ १२र १२र ३ ३१२ १२र २ २
भुः । गात्राणि । परि । एषि । विश्वतः ॥ अतप्ततनूः । न । तत् ।
३२ ३ ३१२ २ १२र २ २ ३
आमः । अश्नुते । शृतासः । इत् । वहन्तः । सम् । तत् । आशत ॥

हे ब्रह्मणस्पति ! ज्ञान रूप ब्रह्म और महान् ब्रह्माण्ड के स्वामिन् आपका पवित्र ज्ञान, सामर्थ्य, प्रभाव सर्वत्र फैला हुआ है, आप शरीरों में अन्दर बाहर सर्वत्र व्याप्त हैं। इस शरीर को तपस्या द्वारा तप्त न करने वाला, तपोहीन कच्चा पुरुष आप के ज्ञानमय स्वरूप व भक्ति को नहीं पा सकता। तपोमय उपासना में परिपक्व मनुष्य ही आप की भक्ति रूपी परम सुख को पाकर भोग सकते हैं।

Spread is thy cleansing filter, Brahmaṇaspati ! as Prince thou enterest its limbs from every side. The raw, whose mass hath not been heated, gains not this : they only which are dressed, which bear attain to it. 565.

अथ विष्णु-संहिता

५ ५ १ ३२३ ५
ॐ इदा ६ मे । विष्णू २ः । विचक्रा २ ३ ४ माइ ।
१ र २ १ २ १ १
त्राइधानि । दधाइपा १ दा २ मू । समू २ हो १ । ढा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ ३ ५र र २
२ ३ मा ३ । स्या २ पा २ ३ ४ औहोवा । ए ३ ।
२
सुले १ ॥ ८ ॥

(गे० गा० ३६५)

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि दधे पदम् ।
१ २ ३ २
समूढमस्य पांसुले ॥ २२२ ॥

३२ १ २र २ ३ ३ २ २ ३ ३ २
इदम् । विष्णुः । वि । चक्रमे । त्रेधा । नि । दधे । पदम् ॥
१ २र २ ३ ३ ३ १ २
समूढम् । सम् । ऊढम् । अस्य । पांसुले ॥ २२२ ॥

सर्वव्यापक परमेश्वर इस जगत् में सर्वत्र गति कर रहा है। वह अपनी शक्ति को पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौ इन तीनों लोकों में स्थापित किये हुए है। इस जगत् की धूल के कण-कण तक में उसका स्वरूप और शक्ति व्याप्त है।

Through all this world strode Vishṇu : thrice his foot he planted, and the whole was gathered in his foot step's dust. 222.

२र १ १ २ २
ॐ हाउ । ३ । ऊ २ । २ । ऊ २ । वा ३ । हाउवा
१ २१ २ १ र र २ १ र
३ । हसूहहसू । अर्चिःशोचिस्तपोहरः । प्रक्षस्यवृष्णो-
२ १र २ १ र र र र २ १र
अरुषस्यनूमा २ ३ हाः । प्रनोवचोविदथाजातवेदा २ ३
२ २र र १र २ १र २ १र
साइ । वैश्वानरायमतिर्नव्यसेशु २ ३ चीः । सोमइव-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ २ २१ २ २२ १
पवतेचारुरग्ना २ ३ या ३ इ। हाउ। ३। ऊ २। २।
१ २ २ ३ १ १ १ १
ऊ २। वा ३। हाउवा ३। इ २ ३ ४ ५॥ २॥
(आ० गा० १९३)

३२ ३ १ २ ३२ ३ २उ ३ २ ३ १ ३ ३ १ २ ३ १ २
प्रणस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः प्रनोवचोविदथाजातवेदसे।
३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः सोम इव पवते चारुरग्नये॥६०९॥

३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २ २ १ २र २ ३ १ २र
प्रक्षस्य। प्र। क्षस्य। वृष्णः। अरुषस्य। नु। महः। प्र। नः। वचः।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ ३ १ २
विदथा। जातवेदसे। जात। वेदसे॥ वैश्वानराय। वैश्व। नराय।
३ २ १ २र १ २र १ २र ३ ३ १ २र ३ १ २
मतिः। नव्यसे। शुचिः। सोमः। इव। पवते। चारुः। अग्नये॥६०९॥

हे वैश्वानर! सर्वत्र व्याप्त अथवा हविरूप अन्नवाले, कामनाओं की वर्षा करनेवाले दीप्यमान तुम्हारे पूजनीय बल या तेज की शीघ्र ही स्तुति करता हूँ। इसीलिये हम लोगों का वचन याग में सब मनुष्यों के अभिलाषों की वर्षा करने वाले अग्निदेव के लिये प्राप्त होता है अर्थात् स्तुति करता है। अत्यन्त नवीन अर्थात् हवि से अत्यन्त प्रदीप्त हुये प्राणिमात्र को जाननेवाले अग्निदेव के लिये निर्मल अथवा स्तुति करनेवालों के लिये शोधन करनेवाली, कल्याणकारिणी मनन करने योग्य अथवा स्तुति जैसे सोम दशा पवित्र से झरता है वैसे ही मेरे हृदय में से स्वयं ही निकलती है।

The all-pervading Lord is present everywhere. 609.

५र र १ २ १र २ १ र २ ३ ४ ५
ॐ हाउहाउ। हुप्। प्रकावियाम्। उशने। वब्रुवाणाः।
२र १र र २ १ २ ३ ४ ५ २ १
देवोदेवा। ना ३ ञ्जनि। माविवक्ती। महिव्रताः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ २ ३ ४ ५ र र १ २ १र
शुचिबा ३। धुःपवाकाः। हाउहाउ। हुप्। पदावरा।
२ १ २ २ ४
हो ३ अभि। आ ३ ४ ३ इ। ती ३ रा ५ इभा ६
५ ६ न्॥ ३॥

(वे० गा० १०१९)

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति।
१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र ३ १ २
महि व्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येतिरेभन्॥५२४॥

२ १ २र ३ १ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र
प्र। काव्यम्। उशना। इव। ब्रुवाणः। देवः। देवानाम्। जनिमा।
३ १ २र १ २र ३ १ २र १ २र ३
विवक्ति। महिव्रतः। महि। व्रतः। शुचिबन्धुः। शुचि। बन्धुः।
३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
पावकः। पदा। वराहः। अभि। एति। रेभन्॥ ५२४॥

उशना के समान काव्य (स्तोत्र) को कहता हुआ स्तोता इन्द्रादि देवों के अवतारों का विशद वर्णन करता है। बहुत से कर्मोंवाला, दीप्त तेजोंवाला पापों का शोधन करनेवाला श्रेष्ठ दिन में निर्मित सोम शब्द करता हुआ पात्रों में आ रहा है।

It is He whose might keeps going this Earth and sky, and preserves the three worlds.

In every particle of dust abides His own self. 524.

२ १ २ १ र र २
ॐ उहुवाहाउ। ३। सहस्रशीर्षाःपुरु २ ३ षाः।
र १ २ १ २ र २ १र
सहस्राक्षः सहस्रा २ ३ पात्। सभूमिंसर्वतोवा २ ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २ १र २ १ २
र्वा। अत्यतिष्ठद्दशांगू २ ३ लाम्। उहुवाहाउ। २।
१ ९ २ २ १ १ १ १ १
उहुवा ३ हाउ। वा ३। इट्इडा २ ३ ४ ५॥ ४॥

(आ० गा० २१९)

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
स भूमिꣳ सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥ ६१७॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३
सहस्रशीर्षाः। सहस्र। शीर्षाः। पुरुषः। सहस्राक्षः। सहस्र।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २र ३ १ २ ३ २
अक्षः। सहस्रपात्। सहस्र। पात्। सः। भूमिम्। सर्वतः। वृत्वा।
१ २र ३ ३ २ ३ ३ २
अति। अतिष्ठत्। दशाङ्गुलम्। दश। अङ्गुलम्॥ ६१७॥

सहस्रों शिरोंवाला, सहस्रों नेत्रोंवाला, और सहस्रों पैरोंवाला वह विराट् पुरुष भूमि को चारों तरफ से लपेट कर दश अङ्गुल नपे हुए स्थान में ज्ञान को प्राप्त होता है। यानी ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा, ब्रह्म संसार के भीतर और बाहर सर्वत्र व्याप्त है परन्तु उसका ज्ञान मनुष्य के हृदय में होता है।

The Lord, with his innumerable heads, eyes, and feet, contracts Himself in a tiny form when He assumes a living form,

The Lord pervades the entire cosmos whom we can behold in our hearts, as that is His dwelling-place. 617.

२ १ र र १र र र
ओ३म् उहुवौहोवा २। ३। त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरु २ ३
२ १र र र र २ १ २ र २ १
षाः। पादोस्येहाभवत्पू २ ३ नाः। तथाविष्वङ्वियक्रा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ र १र २ २१रर

२ ३ मात् । अशानानशानेआ २ ३ भी । उहुवौहोवा २ ।

२१र १ ३ ५र र ३

२ । उहुवौ । हो २ । वा २ ३ ४ । औहोवा । ई २ ३ ४

५ २१र र २१र १ ३

डा । उहुवौहोवा २ । २ । उहुवौ । हो २ । वा २ ३ ४ ।

५र र ३ ५ २१र र २१ र

औहोवा । सू २ ३ ४ वाः । उहुवौहोवा २ । २ । उहुवौ ।

१ ३ ५र र ३ १ १ १ १

हो २ । वा २ ३ ४ । औहोवा । ऊ २ ३ ४ ५ ॥ ५ ॥

(आ० गा० २२०)

३ २ ३ २उ ३ १२३ १ २ ३ १ २३१२

त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।

२ ३ २ ३क २र ३ २ ३ २

तथा विष्वङ्व्यक्रामदशनानशने अभि ॥ ६१८ ॥

३ २ ३ २ ३ २ २ ३ १ २र १ २र

त्रिपात् । त्रि । पात् । ऊर्ध्वः । उत् । ऐत् । पुरुषः । पादः ।

३ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र १ २र २ ३ २

अस्य । इह । अभवत् । पुनरिति । तथा । विष्वङ् । वि । स्वङ् । वि ।

३ ३ २ ३ १ २ ३ २

अक्रामत् । अशानानशाने । अशान । अनशानेइति । अभि ॥ ६१८ ॥

जो कि यह अधिकांश संसार के स्पर्श से रहित ब्रह्म स्वरूप पुरुष, परमात्मा इस कार्य जगत् के ऊपर उदय को प्राप्त होता है, उसके एक अंश में यह सारा ब्रह्माण्ड विद्यमान है और उसकी माया से यह विष्वङ् यानी देवयोनि से मृतक योनि तक वह व्याप्त है और जड़ और चेतन यानी खानेवाले और न खानेवाले दोनों प्रकार की सृष्टि में व्याप्त है। मतलब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह हुआ कि परमात्मा ईश्वर ब्रह्म के एक अंश से समस्त ब्रह्माण्ड है और उसके अधिकांश में कोई भी वस्तु नहीं है, यानी अधिकांश शुद्ध सत्त्व है।

Only a fraction of the Divine is in the manifest universe.
All life is in Him—the mortals and immortals abide in Him.

The inanimate and the animate both are His manifestations.
But the manifest is but a small part of Brahman, the rest is pure Light. 618.

ॐ इयौहोवा २। ३। पुरुषएवेदꣳसा २ ३ वाँम्। यद्भूतंयच्चभावा २ ३ याम्। पादोस्यसर्वाभूता २ ३ नी। त्रिपादस्यामृतंदा २ ३ इवी। इयौहोवा २। २। इयौ। हो २। वा २ ३ ४। औहोवा। इ २ ३ ४ डा। इयौहोवा २। २। इयौ। हो २। वा २ ३ ४। औहोवा। ज्यो २ ३ ४ तीः। इयौहोवा २। २। इयौ। हो २। वा २ ३ ४। औहोवा। ई २ ३ ४ ५॥ ६॥

(आ० गा० २२१)

पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ ६१९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ २ ३ २ १ २र २ ३ २ २ ३
पुरुषः । एव । इदम् । सर्वम् । यत् । भूतम् । यत् । च ।
१ २र १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
भाव्यम् ॥ पादः । अस्य । सर्वा । भूतानि । त्रिपात् । त्रि । पात् ।
३ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
अस्य । अमृतम् । अ । मृतम् । दिवि ॥ ६१९ ॥

यह सब जगत् पुरुष ही है जो कि हो चुका है और जो आगे होने वाला है । इस पुरुष के एक अंश में सारी दुनिया व्याप्त है और इसका अधिकांश विनाशरहित प्रकाशस्वरूप ब्रह्माण्ड के बाहर विद्यमान है ।

All that is past and all that is happening—
Everything proceeds from Him alone.

He has unfolded only a part of Himself in the form of the Universe.

The rest, the major part is hidden and unmanifest. 619.

२र २र र २ १ २
ॐ हाउ । ३ । तावानस्य । महा २ ३ इमा ३ ।
२ र १ र र र २ १ २ २र
हाउ । ३ । ततोज्यायाꣳश्चपूरु २ ३ षा ३ः । हाउ । ३ ।
१र र २ २र १ र र २
उतामृतत्वस्येशा २ ३ ना ३ः । हाउ । ३ । यदन्नेनाति-
१र २ २ऽ १ १ १ १ १
रोहा २ ३ ती ३ । हाउ ३ । वा ३ । इट्इडा २ ३ ४ ५॥

(आ० गा० २२२)

१ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ ६२० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ ३ २ १२र १ २र ३ १२र ३२
तावान् । अस्य । महिमा । ततः । ज्यायान् । च । पूरुषः ॥ उत ।
३ १ २ ३ १ २ १ २र २ १२र ३ १२र
अमृतत्वस्य । अ । मृतत्वस्य । ईशानः । यत् । अन्नेन । अतिरोहति ।
३ १२र
अति । रोहति ॥ ६२० ॥

भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान जितना जगत् है, वह सब इस पुरुष का उतना सामर्थ्य है न कि वह जगत् वास्तव पुरुष है। क्योंकि वह पुरुष इस जगत् से कहीं बड़ा है और वह देवत्व का स्वामी है। इसी कारण प्राणियों के भोग करने की सामग्री को अपनी कारण-अवस्था को छोड़ कर जगत्-अवस्था में प्राप्त होता है। अर्थात् इस परमात्मा की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। वह देवताओं के अन्दर जो अमृतत्व धर्म है, उसका स्वामी है और इस दिखाई देनेवाले जगत् का आदि कारण है।

Which we behold, the universe is not the Lord that manifests Himself through times happenings.

The Lord is greater than His creation.

He is the cause of the universe, but is not caused by it.

He is the Lord of life. 620.

२ऽ १ र २ १र २र २ऽ
ॐ हाउ ३ वा। ततोविराडजायत। हाउ ३ वा।
२ १र २र १ २ १ २ २ऽ १ २र १र २
विराजोअधिपूरुषः। हाउ ३ वा। सजातोअत्यरिच्यत।
२ऽ २ १र र २ १ र २ १ २ऽ ३ १
हाउ ३ वा। पश्चाद्भूमिमथोपुरः। हाउ ३ वा ३। इ २
१ १ १
३ ४ ५॥ ८॥

(आ० गा० २२३)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
२ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ २
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमि मथो पुरः ॥ ६२१ ॥

१ २र ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र
ततः । विराट् । वि । राट् । अजायत । विराजः । वि । राजः ।
१ २र १ २र २ ३ २ १ २र ३ ३ २ १ २र
अधि । पूरुषः ॥ सः । जातः । अति । अरिच्यत । पश्चात् । भूमिम् ।
१ २र २ ३ २
अथ । ऊ । पुरः ॥ ६२१ ॥

उस शुद्ध ब्रह्म से ब्रह्माण्ड रूपी देह उत्पन्न हुई। इसी ब्रह्माण्ड को लेकर उसके अन्दर विराट् देह का अभिमानी पुरुष यानी ब्रह्मा उत्पन्न हुए तथा उस ब्रह्माण्ड में जीव रूप से प्रविष्ट होकर नाना जीवों को उत्पन्न किया। वह विराट पुरुष उत्पन्न होकर नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होनेवाले प्राणियों के निवास के लिये पृथिवी को वनाया। उसके वाद पुरः जीवों को यानी प्राणियों को बनाया।

The manifest world issued out of the pure spirit that is Brahman.

Out of pure Brahman came the manifest Brahman, with its gigantic ramifications, diverse life and endless living and unliving matter. 621.

२र १ २ १ २ १ २ १ २
ॐ हाउ । ३ । अस्मिनस्मिन् । ३ । नृम्णाइन्नृम्णम् ।
१ २ र १ २
३ । निधाइमाहे । ३ । कयानश्चित्रा ३ आभू १ वा २
र र १ २ र
त् । ऊतीसदावृ ३ धाः सा १ खा २ । कयानश्चित्रा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ २र १ २ १ २
३ यावा १ र्त्ता २ ३। हाउ । ३। अस्मिनस्मिन् । ३।
१ २ १ २ १ २ १
नृम्णाइनृम्णम् । ३। निधाइमाहे । २। निधा २ ३ इ।
१ ३ ५र र १ र ३ १ १ १
मा २। हा २ ३ ४। औहोवा। सुवर्ज्योतो २ ३ ४
१
५ः ॥ ९ ॥ ❀ इति विष्णुसंहिता ॥

(आ० गा० २२४)

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
कयानश्चित्र आ भुव दूती सदा वृधः सखा।
२ ३ १ २ ३ २
कया शचिष्ठया वृता ॥ १६९ ॥

१ २र ३ ३ २ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ २
कया। नः। चित्रः। आ। भुवत्। ऊती। सदावृधः। सदा।
३ १ २र २ ३ १ २र १ २र ३ २
वृधः। सखा। स। खा॥ कया। शचिष्ठया। वृता॥ १६९॥

सत्य के बल से बढ़नेवाला, इन्द्र, प्रभु ज्ञान करने योग्य, पूज्य अद्भुत, किस अपूर्व रक्षण करनेवाले सामर्थ्य या ज्ञान से और किस अति शक्तिसम्पन्न, बलयुक्त बुद्धियुक्त, कर्म और व्यवहार से हमारा मित्र हो रहा है, इसका विचार करो।

With what help will become to us, wonderful, ever waxing friend?

With what most mighty company? 169.

❀ इदं विष्णुः प्रत्नस्य वृष्णः प्रकाव्य मुशने वभ्रुवाण इति वाराहमन्त्यं पुरुष व्रते चैषा वैष्णवी नाम सꣳहितैतां प्रयुञ्जन् विष्णुं प्रीणाति ॥ सामवि० ब्रा० ११४।३१, ३२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ रुद्रसंहिता

४र ५र र ४ ३ २ ३ २ ३ ४ ५ १ २र
ॐ आवोराजा। नमध्व। रस्यरुद्राम्। हो। ता।
१ २ २ २र ३ ४ ५ २ १
राम्। स। त्ययजा ३ म्। रोदसीयोः। अग्निंपु। रा।
२ ३ २ ३ ४ ५ १ २ १ २ १
तनयि। त्नोरचित्तात्। हिरण्य। रू। पा ३ मव।
२ २ ४
सा ३ ४ ३ इ। का ३ णूं ५ ध्वा ६ ५ ६ म्॥ १॥

(वे० गा० ११३)

२ ३ १ २ ३१ २ ३१ २र ३ २ ३ १ २
आ वो राजान मध्वरस्य रुद्रꣳ होतारꣳ सत्ययजꣳ रोदस्योः।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निं पुरा तनयित्नोरचिताद्धिरण्य रूप मवसे कृणुध्वम्॥ ६९॥

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ १ २र ३ १ २
आ। वः। राजानम्। अध्वरस्य। रुद्रम्। होतारम्। सत्ययजम्।
३ १ २र १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
सत्य। यजम्। रोदस्योः॥ अग्निम्। पुरा। तनयित्नोः। अचित्तात्।
३ १ २र १ २र १ २र ३ १ २र २
अ। चित्तात्। हिरण्यरूपम्। हिरण्य। रूपम्। अवसे। कृणुध्वम्॥

हे मनुष्यो! तुम सव हिंसारहित यज्ञ के स्वामी, कर्मफल प्राप्त करने-वाले दुष्टों के सन्तापक, द्यौ तथा पृथिवी के वीच सच्चा यज्ञ करने वाले, ज्योतिर्मय हितकारी, तथा रमणीय प्रकाशवाले परमेश्वर की—अपनी रक्षा के लिये विजली के समान अकस्मात् आ जानेवाली अचेतन, ज्ञानरहित मृत्यु के आने से पहले ही उपासना कर लो।

Win to protect you, Rudra, Lord of worship, priest of both worlds, effectual sacrificer,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

Agni, invested with his golden colours, before the thunder strike and lay you senseless ! 69.

५ र ४ ५ १ ३ २ ३ ५
ॐ तद्धौहोवा । गाया २ । सुताइसा २ ३ ४ चा ।
१ २र र २ १ २ १ ऽऽ २
पुरुहूता । यसात्वा १ ना २ इ । शंयत् । हा । औ ३
२ ३ ५ १ ३ ५र र
होइ । गा २ ३ ४ वाइ । ना २ शा २ ३ ४ औहोवा ।
२ १ १ १ १ १
ए ३ । किने २ ३ ४ ५ ॥ २ ॥

(वे० गा० १८१)

५ र र २ १ र २
ॐ तद्धोगाया । सुताइसचा ३ । पूरू २ ३ हूता
३र २ १ २ ३ ५ २ १
३ ४ । हाहो ३ । यासत्वा २ ३ ४ नाइ । शंयद्गा २
२ २ १ ५ ४
३ वे । नशौ २ । हौ २ । हुवो २ ३ ४ । वा । का ५
५
इनो ६ हाइ ॥ ३ ॥ (वे० गा० १८२)

५ र र र ५ २ र१र २र १
ॐ तद्धोगायस्तेसचा ६ ए । पुरुहूतायसत्वने । पुरु-
२र र १ ७ २ ४ ५ २ ३
हूता । यासत्त्वा २ ३ ना ३ ४ इ । शंयत् । गौवाओ
५ १ ४ २
२ ३ ४ वा । ना २ ३ शा ३ । का ३ ४ ५ इनो ६
५
हाइ ॥ ४ ॥

(वे० गा० १८३)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५ र र   र   ५   २ र १र
ॐ तद्वोगायसुतेसचा ६ ए। पुरुहूतायसत्वनाइ।
१   २   २   १
शंयद्गा २ ३ वे। ऐ २ हो १ आ २ ३ इही। नशा २
१   ३   ५र र   ३ १ १ १ १
३। का २ इना २ ३ ४ औहोवा। ई २ ३ ४ ५॥ ५॥
(वे० गा० १८४)

१ २   ३ १ २र   ३ २ ३ १ २
तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने।
२उ   ३ २ ३ १ २
शं यद्गवे न शाकिने॥ ११५॥

२ ३ ३ ३ २ १ २र ३ १ २ ३ ३ १ २
तत्। वः। गाय। सुते। सचा। पुरुहूताय। पुरु। हूताय।
१ २र २ ३ १ २र २ ३ १ २
सत्वने॥ शम्। यत्। गवे। न। शाकिने॥ ११५॥

हे मनुष्यो तुम लोग वीर्यवान्, सत्य स्वरूप, सदा विद्यमान रहनेवाले इन्द्रिय गण प्रजाओं और अनेक मनुष्यों द्वारा पूजित गौ, पृथिवी, सूर्य और वेदवाणी के तुल्य शक्तिमान और जो कल्याणकारी है उस अपने यज्ञ में एक साथ मिल कर कीर्तन करो।

Sing this beside the flowing juice, to him your hero, much-invoked, To please him as a mighty Bull! 115.

२र   २र ३ ४ ५   २र १र   २
ॐ हाउ। ३। आज्यदोहम्। ३। मूर्धानन्दाइ। वा
१   २ ३ ४ ५   २र १र   २ १ र २र ३
३ अर। तिंपृथिव्याः। वैश्वानराम्। ऋतआ। जात-
४ ५   २ १   २   १   २ ३ ४र ५
मग्निम्। कविंᳪसंम्रा। जा ३ मति। थिंजनानाम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२र १ २ १ २ २४र ५ २र २र ३
आसन्नःपा । त्रा३ञ्जन । यन्तदेवाः । हाउ । ३ । आज्य-
४ ५ २र ३ ४ २ २र र १ २
दोहम् । २ । आज्यदो ५ हाउ । वा । ए । आज्यदोहम् ।
२र र १ ३ १ १ १ १
२ । ए । आज्यदोहा २ ३ ४ ५ म् ॥ ६ ॥

(आ० गा० ४३)

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२३२र ३ २ ३ २
मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वा नरमृत आ जात मग्निम् ।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
कविंᳬ संम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥६७॥
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३
मूर्धानम् । दिवः । अरतिम् । पृथिव्याः । वैश्वानरम् । वैश्व ।
३ २ ३ २ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
नरम् । ऋते । आ । जातम् । अग्निम् । कविम् । सम्म्राजम् । संम् । राजम् ।
१ २र १ २र ३ २ ३ १ २र ३ ३ २
अतिथिम् । जनानाम् । आसन् । नः । पात्रम् । जनयन्त । देवाः ॥६७॥

विद्वान् पुरुष मुख्य रूप से वा मुख द्वारा वाणी से बतलाते हैं कि ज्ञानवान् तेजोमय 'अग्नि', परमेश्वर ही द्यौ लोक के शिर के तुल्य उसका अधिष्ठाता है, वही पृथिवी का स्वामी है, वह सत्य यज्ञ गतिमत् जगत् में प्रादुर्भूत है। वही सब प्राणियों में व्यापक वैश्वानर है, वह सब में प्रकाशमान् सम्राट् है, वही मनुष्यों में अतिथि के तुल्य पूजनीय है, वही हम सब का पालक है।

Agni vaiṣvânara, born in course of order, the messenger of earth, the head of heaven. The Sage, the Sovran, guest of men, our vessel fit for their mouth, the Gods have generated. 67.

२र र १ २ १ २
ॐ हाउ । ३ । हुम्चिदोहम् । चिदोहम् । २ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२र १र २ १ २ ३ ४ ५ २र १र
मूर्धानन्दाइ । वा ३ अर । तिंपृथिव्याः । वैश्वानराम् ।
२ १ र २र ३ ४ ५ २ १ २ १
ऋतआ । जातमग्निम् । कविंसंम्रा । जा ३ मति ।
२ ३ ४र ५ २र १ २ १ २ ३ ४र ५
थिंजनानाम् । आसन्नःपा । त्रा ३ ञ्न । यन्तदेवाः ।
२र र १ २ १ २ २ ९
हाउ । ३ । हुम्चिदोहम् । चिदोहम् । चिदो २ हाउ ।
३ १ १ १ १
वा ३ । ई २ ३ ४ ५ ॥ ७ ॥

(आ० गा० ४४)

२र १ २ २र १र २
ॐ हाउ । ३ । च्योहम् । ३ । मूर्धानन्दाइ । वा
१ २ ३ ४ ५ २र १र २ १ र २र ३
३ अर । तिंपृथिव्याः । वैश्वानराम् । ऋतआ । जात-
४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४र ५
मग्निम् । कविंसंम्रा । जा३मति । थिंजनानाम् ।
२र १ २ १ २ ३ ४र ५ २र
आसन्नःपा । त्रा ३ ञ्न । यन्तदेवाः । हाउ । ३ ।
१ २ ९ २ २ २ १
च्योहम् । २ । च्यो ३ हाउ । वा ३ । ए ३ । ऋतम् ॥ ८ ॥

(आ० गा० ४५)

१ २ १ १ २ १ १ २ १
ॐ अधिप । ताइ । मित्रप । ताइ । क्षत्रप । ताइ ।
१ २ १ १ २ १ २ १ र २
स्वःप । ताइ । धनपता २ इ । ना २ माः । मन्युनावृत्र-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१र र र २ १र २ १र २ १ २र १ २र १र २ १र र २र १
ह्रासूर्येणस्वराड्यज्ञेनमघवादक्षिणास्यप्रियातनूराज्ञावि-
२र र १ र २ १र २ र १ २ १ र २ १ २
शंदाधार। वृषभस्त्वष्टावृत्रेणशचीपतिरन्नेनगयःपृथि-
१र २ १र र २र १ २ र र १ र र
व्यासृणिकोग्निनाविश्वंभूतम। भ्यभवोवायुनाविश्वाः-
२ १र २ र र १र र २ १र र र २ र १र
प्रजाअभ्यपवथावषट्कारेणार्द्धभाक्सोमेनसोमपाःसमि-
२र र १र र र २र र र २ १ २ १ र र २र र र
त्यापरमेष्ठी। येदेवादेवाः। दिविषदः। स्थतेभ्योवोदेवा-
र १र २र १ २ १र र २र र र २ १ २ १ र र
देवेभ्योनमः। येदेवादेवाः। अन्तरिक्षसदः। स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १र र २र र र २ र १ २ १ र र
वोदेवादेवेभ्योनमः। येदेवादेवाः। पृथिवीषदः। स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १र र २र र र २ १ २ १ र र
वोदेवादेवेभ्योनमः। येदेवादेवाः। अप्सुषदः। स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १र र २र र र २ १ २ १ र र
वोदेवादेवेभ्योनमः। येदेवादेवाः। दिक्षुसदः। स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १र र २र र र २र र १ २ १ र र
वोदेवादेवेभ्योनमः। येदेवादेवाः। आशासदः। स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १ २ १र २ १ २र १ र २ १ २र
वोदेवादेवेभ्योनमः। अवज्यामिवधन्वनोवितेमन्युन्नया-
१ र २ १ २ १ २ १ २ १
मसिमृडतान्नइहअस्मभ्यम्। इडा २ ३ भा। यइदं
र २ १ ३
विश्वंभूतम्। युयो ३। आउ। वा २ ३। ना २ ३
५
४ माः॥ ९॥ (आ० गा० २१२)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २र १ २र
अधिपते । अधि । पते । मित्रपते । मित्र । पते । क्षत्रपते । क्षत्र ।
३ १२ २ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २र
पते । स्वःपते । स्वाऽ३रिति । पते । धनपते । धन । पते । नमः ॥
३ १ २ ३ २ ३ २ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २
मन्युना । वृत्रहा । वृत्र । हा । सूर्येण । स्वराट् । स्व । राट् । यज्ञेन ।
३ १ २ १ २र ३ २ ३ २ १ २र १ २र ३
मघवा । दक्षिणा । अस्य । प्रिया । तनूः । राज्ञा । विशाम् । दाधार ।
३ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र १ २
वृषभः । त्वष्टा । वृत्रेण । शचीपतिः । शची । पतिः । अन्नेन । गयः ।
३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ २ ३ २ ३
पृथिव्या । सृणिकः । अग्निना । विश्वम् । भूतम् । अभि । अभवः ।
३ १ २ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
वायुना । विश्वाः । प्रजाः । प्र । जाः । अभि । अपवथाः । वषट्कारेण ।
३ १ २ ३ २ ३ २ १ २र ३ २ ३
वषट् । कारेण । अर्द्धभाक् । अर्द्ध । भाक् । सोमेन । सोमपाः । सोम ।
३ १ २र ३ २ ३ २ ३
पाः । समित्या । सम् । इत्या । परमेष्ठी । परमे । स्थी । ये । देवाः ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
देवाः । दिविषदः । दिवि । सदः । अन्तरिक्षसदः । अन्तरिक्ष । सदः ।
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
पृथिवीषदः । पृथिवी । सदः । अप्सुषदः । अप्सु । सदः । दिक्षुसदः ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र २
दिक्षु । सदः । आशासदः । आशा । सदः । स्थ । तेभ्यः । वः ।
१ २ १ २र १ २र ३ १ २र ३
देवाः । देवेभ्यः । नमः ॥ अव । ज्याम् । इव । धन्वनः । वि । ते ।
२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
मन्युम् । नयामसि । मृडताम् । नः । इह । अस्मभ्यम् । यः । इदम् ।
१ २र ३ २ १ २र १ २र
विश्वम् । भूतम् । युया । नमः ॥ (स्तोभ पद पाठः २।५)
१ २ १ १ २ १ १ २ १
ॐ अधिप । ताइ । मित्रप । ताइ । क्षत्रप । ताइ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ १ १ २ २ १ १ २ १
स्वः प । ताइ । धनपता २ इ । ना २ माः । नमउत्तति-
२र र१र २१र२ १ २र र१ २१र
भ्यश्चोत्तन्वानेभ्यश्चनमोनिषंगिभ्यश्चोपवीतिभ्यश्चनमोस्य-
२ १ र२र १ २१ २ र१
द्भ्यश्चप्र । तिदधानेभ्यश्चनमःप्रविध्यद्भ्यश्चप्रव्याधिभ्य-
२१२ १ २ र१ २.१ २ १र २ र १
श्चनमत्सरद्भ्यश्चत्सारिभ्यश्चनमःश्रि । तेभ्यश्चश्चायिभ्य-
२१२ १ २ र १. २ १ रर१र २ १र२१ २
श्चनमस्तिष्ठद्भ्यश्चोपतिष्ठद्भ्यश्चनमोयतेचवियतेचनमःप-
१र२ १ २र १२ १र २१ २र१र २ १ २र
थेचविपथायच । अवज्यामि वधन्वनोविते मन्युन्नयाम-
१ र२ १ २ १ २ १ २ १
सिमृडतान्नइह अस्मभ्यम् । इडा २ ३ भा । यइदं विश्वं-
र २ १ ५
भूतम् । युयो ३ । आउ । वा २ ३ । ना २ ३ ४ माः ॥१०॥
(आ० गा० २१३)

१ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३
नमः । उत्ततिभ्यः । उत् । ततिभ्यः । च । उत्तन्वानेभ्यः । उत् ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३
तन्वानेभ्यः । च । नमः । नीषङ्गिभ्यः । नी । सङ्गिभ्यः । च । उपवी-
१ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २
तिभ्यः । उप । वीतिभ्यः । च । नमः । अस्यद्भ्यः । च । प्रतिदधा-
३ १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
नेभ्यः । प्रति । दधानेभ्यः । च । नमः । प्रविध्यद्भ्यः । च । प्रव्याधिभ्यः ।
३ १ २र ३ १ २र १ २र ३ ३ १ २ ३ १ २र
प्र । व्याधिभ्यः । च । नमः । त्सरद्भ्यः । च । त्सारिभ्यः । च । नमः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २
श्रितेभ्यः । च । श्चायिभ्यः । च । नमः । तिष्ठद्भ्यः । च । उपतिष्ठ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २
द्भ्यः । उप । तिष्ठद्भ्यः । च । नमः । यते । च । वियते । वि । यते ।
३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३
च । नमः । पथे । च । विपथाय । वि । पथाय । च ॥ (स्तोभ पद पाठ; २।५)

१ २ १ १ २ १ १ २ १ १
ॐ अधिप । ताइ । मित्रप । ताइ । क्षत्रप । ताइ । स्वः
२ १ १ २ १ १ र र २ १ र
प । ताइ । धनपता २ इ । ना २ माः । नमोन्नायनमोन्न-
२ र र १र २र र १र २ १ २र १ २ १र २र
पतयएकाऽक्षायचावपन्नादाघचनमोनमः । रुद्रायतीर-
१ २र १ २ १र २ १ २ र १ २ १ २र १ र
सदेनमः स्थिरायस्थिरधन्वनेनमः प्रतिपदायचपटरिणे-
२ १ २ १ २ र २ १ र २ १ २र र १र २
चनमस्त्रियंबकायचक । पर्द्दिनेचनमआश्रायेभ्यश्च-
र र १र २ १ २ १र २ १र २ १ २ १ र २
प्रत्थाश्रायेभ्यश्चनमःकठ्येभ्यश्चविरिंफेभ्यश्चनमः संवृतेच-
१ २र १ २ १र २ १ २र १ र २ १ २र
विवृतेच । अवज्यामिवधन्वनोविते मन्युन्नयामसि-
१ र २ १ २ १ २ १ २ १
मृडतान्नइह अस्मभ्यम् । इडा २ ३ भा । यइदं विश्वं-
र २ १ ५
भूतम् । युयो ३ आउ । वा २ ३ । ना २ ३ ४ माः ॥❀

(आ० गा० २१४)

१ २र १ २ १ २र १ २र १ २र ३ १ २
नमः । अन्नाय । नमः । अन्नपतये । अन्न । पतये । एकाक्षाय ।

❀ आवोराजा तद्वोवर्गं आज्यदोहानि देवव्रतानि चैषा रौद्रीनाम सं-हितैतां प्रयुञ्जन् रुद्रं प्रीणाति । सामवि० ब्रा० १।४।२९, ३० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र
एक । अक्षाय । च । अवपन्नादाय । अव । पन्नादाय । च । नमः । नमः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
रुद्राय । तीरसदे । तीर । सदे । नमः । स्थिराय । स्थिरधन्वने । स्थिर ।
३ १ २र १ २र १ २र ३ १ २ ३ १ २र
धन्वने । नमः । प्रतिपदाय । प्रति । पदाय । च । पटरिणे । च । नमः ।
१२ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
ऽयम्बकाय । त्रि । अम्बकाय । च । कपर्द्दिने । च । नमः । आश्रायेभ्यः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
च । प्रत्याश्रायेभ्यः । प्रति । आश्रायेभ्यः । च । नमः । क्रव्येभ्यः ।
३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
च । विरिंफेभ्यः । वि । रिंफेभ्यः । च । नमः । संवृते । सम् । वृते ।
३ १ २ ३ १ २र ३
च । विवृते । वि । वृते । च ॥ (स्तोभ पद पाठः २१५)

इति रुद्रसंहिता

वसन्त इति प्रजापतिर्बृहत्यृतवः ॥
यह साम का प्रजापति ऋषि, बृहती छन्द और ऋतु देवता है ।

३ ४ २ ४ ५ १र
ॐ वा ५ सन्तः । ई ३ न्नू ३ रन्तायाः । ग्रीष्म-
२ २ २ २ १र २ १ २
इन्नूरा १ न्ती ३ याः । वर्षाण्यनुशा २ । हुम् । रा २
२ १र ३ २ २ १ १ १ १
दाः । हेमंतः शिशिरइन्नुरा २ न्तीयाउ । वा २ ३ ४ ५ ॥१॥
(आ० गा० २१५)

३ १ २र ३ १ २र
वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः ॥ ६१६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ २ २ १ २र ३ २ २ २ १ २र ३ १ २
वसन्तः। इत्। नु। रन्त्यः। ग्रीष्मः। इत्। नु। रन्त्यः। वर्षाणि।
१ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २र २ २ १ २र
अनु। शरदः। हेमन्तः। शिशिरः। इत्। नु। रन्त्यः॥ ६१६॥

चैत्र-वैशाखरूप वसन्त ऋतु ही रमणीय होता है। ज्येष्ठ-आषाढ़रूप ग्रीष्म ऋतु ही रमणीय होता है। श्रावण-भाद्रपदरूप वर्षा ऋतु के अनन्तर आश्विन-कार्तिकरूप शरद, मार्गशीर्ष-पौषरूप हेमन्त और माघ-फाल्गुनरूप शिशिर ऋतु ही रमणीय होता है।

Chaitra and Vaisakha are the delightful months of the spring, as the Jyestha and Ashadha are of the summer.

The rainy season delights in Shravana and Bhadrapada, followed by the Autumnal months of Ashwin and Kartika.

Margashirsha and Paush make Hemanta pleasant, and Shishir is made up of the two pleasant months of Magha and Phalguna.

वामदेव्यस्य वामदेवो गायत्रीन्द्रः। शान्त्यर्थं जपे विनियोगः॥

यह साम का वामदेव ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता है। शान्त्यर्थं जप करने में इसका विनियोग है॥

३ र ५ ४ २ ४र ५ १
ॐ का ५ या। नश्चा ३ इत्रा ३ आभूवात्। ऊ।
र २१र २ १ २ र २ १
ती सदावृधःस। खा। औ ३ होहाइ। कया २ ३
२ ३ र २ १ १ २
शचाइ। ष्ठयौहो ३। हुम्मा २। वा २ तों ३ ५ हाइ॥१॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
कयानश्चित्र आ भुव दूती सदा वृधः सखा।
२ ३ १ २ ३ २
कया शचिष्ठया वृता॥ ६८२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ ३ २ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ २
कया । नः । चित्रः । आ । भुवत् । ऊती । सदावृधः । सदा ।
३ १ २र २ ३ १ २र १ २र ३ २
वृधः । सखा । स । खा ॥ कया । शचिष्ठया । वृता ॥ ६८२ ॥

विचित्र पूज्य तथा सदा वृद्धि को प्राप्त इन्द्र परमेश्वर किसी रक्षा के सामर्थ्य और किसी बुद्धि-बलयुक्त व्यवहार के द्वारा मित्र हो जाता है।

With what help will he come to us, wonderful, ever waxing friend ?

With what most mighty company ? 682.

३ र ४ २ ४र ५ १
ॐ का ५ स्त्वा । सत्यो ३ मा ३ दानाम् । मा ।
२र १ २ १ २ र २ १
हिष्ठोमात्सादन्ध । सा । औ ३ होहाइ । दृढा २ ३
२ ३ र २ १ १ २
चिदा । रुजौहो ३ । हुम्मा २ । वा २ सो ३ ५ हाइ ॥२॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
कस्त्वा सत्यो मदानान्मꣳ हिष्ठो मत्सदन्धसः ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
दृढाचिदा रुजे वसु ॥ ६८३ ॥

२ ३ २ १ २र १ २र ३ १ २र
कः । त्वा । सत्यः । मदानाम् । मꣳहिष्ठः । मत्सत् । अन्धसः ॥
३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र १ २र
दृढा । चित् । आरुजे । आ । रुजे । वसु ॥ ६८३ ॥

पूजनीय, सत्यस्वरूप, हर्षों, आनन्दों के बीच में कौन सा जीवन धारण करानेवाला या अंधकार का नाश करनेवाला परम रस है जो दृढ़वास योग्य दुर्गादि रूप बन्धनों को तोड़ने के लिये आप को आनन्दित व उत्साहित करता है।

what genuine and most liberal draught will spirit thee with juice to burst.

Open e'en strongly-guarded wealth ! 683.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ र ४ २ ४र ५ १
ॐ आ ५ भी । षुणा ३ः सा ३ रवीनाम् । आ ।
२र १ २र १ १ र २ १
विताजराइतृ । णाम् । औ २ ३ होहाइ । शता २ ३
२ ३ र २ १ १ २
म्भवा । सियौहो ३ । हुम्मा २ । ता २ यो ३ ५ हाइ ॥
(उह गा० ५)

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अभीषुणः सखीना मविता जरितृणाम् ।
३ १ २ ३ १ २
शतं भवास्यूतये ॥ ६८४ ॥

३ २ ३ १ २र २ ३ ३ २ ३ २
अभि । सु । नः । सखीनाम् । स । खीनाम् । अविता । जरितृणाम् ॥
३ २ ३ ३ १ २
शतम् । भवासि । ऊतये ॥ ६८४ ॥

हे इन्द्र, परमेश्वर आप हमारे मित्र तथा उपासकों के लिये सौ वर्ष तक अर्थात् जीवन भर रक्षक बने रहें ।

Do thou who art protector of us thy friends who praise thee with hundred aids approach us ! 684.

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३२ ३ १ २
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदाः ।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

१ ३ २ ३ २ ३ १ २
ॐ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

इति सामवेदीयं साङ्गरुद्राध्यायजपः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३
स्वस्ति । सु । अस्ति । नः । इन्द्रः । वृद्धश्रवाः । वृद्धः । श्रवाः ।
३ २ ३ २ ३ ३ ३ १ २ ३ २ ३
स्वस्ति । सु । अस्ति । नः । पूषा । विश्ववेदाः । विश्व । वेदाः ॥
३ २ ३ २ ३ १ २र १ २र १ २र ३
स्वस्ति । सु । अस्ति । नः । तार्क्ष्यः । अरिष्टनेमिः । अरिष्ट । नेमिः ।
३ २ ३ २ ३ १ २र १ २र ३
स्वस्ति । सु । अस्ति । नः । बृहः । पतिः । दधातु ॥ १८७५ ॥

महान् , यशस्वी और ज्ञानवान् इन्द्र परमेश्वर हमारा कल्याण करे । हे सर्वज्ञ सब पदार्थों के स्वामी और पुष्टिकारक पूषन् हमारा कल्याण करें जिसके काल रूप महान् शासन और नियमों को कोई नहीं तोड़ सकता वह तार्क्ष्य हमारा कल्याण करे । वेदवाणी का रक्षक, स्वामी, पालक, परम प्रभु बृहस्पति हमारा कल्याण करे । वेद वाणी का रक्षक, स्वामी, पालक, परम प्रभु बृहस्पति हमारा कल्याण करे ।

Illustrious far and wide, may Indra bless us, may Pûshan bless us, master of all riches !

May Târkshya with uninjured fellies bless us ! Bṛihaspati bestow on us his favour ! Brihaspati bestow on us his favour.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ आरती ॥

ततः पञ्चोपचारेण शिवं सम्पूज्य आरार्तिक्यं कुर्यात् ।

इस कृत्य के पश्चात् यजमान पञ्चोपचार सामग्री से शंकर जी की पूजा करके आरती करे ।

उद्यं लोकेति इन्द्रोनुष्टुप् सूर्यः । आरार्तिके विनियोगः ।

इस साम का इन्द्र ऋषि, अनुष्टुप् छन्द और सूर्य देवता है । आरती करने में इसका विनियोग है ।

२ १ र र २ १ २ १ र र
ॐ उद्यँल्लोकानरोचयः । होयि । इमाँल्लोकान
२ १ २ १र र २ १ १ २र १
रोचयः । होयि । प्रजाभूत मरोचयः । होयि । विश्वम्भूत-
२ १ ३ ५र र २ १र र ३
मरोचयः । हो २ । हा २ ३ ४ । औहोवा । घर्मो ज्योती
१ १ १ १
२ ३ ४ ५ः ॥

(आ० गा० २७९)

---

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
उद्यन् । उत् । यन् । लोकान् । अरोचयः । इमान् । लोकान् ।
३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
अरोचयः । प्रजाः । प्र । जाः । भूतम् । अरोचयः । विश्वम् । भूतम् ।
३
अरोचयः ॥ (स्तोभ पद पाठे २–१०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीशा,
शिव जय गिरिजाधीशा ।

त्वं मां पालय नित्यं २ कृपया जगदीशा,
ॐ हर हर हर महादेव ।

कैलाशे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने,
शिव कल्पद्रुम विपिने ।

गुञ्जति मधुकर पुञ्जे २ कुञ्ज बने गहने,
हर हर हर महादेव ॥

ॐ कोकिल कूजति खेलति हंसावन ललिता,
शिव हंसा वन ललिता ।

रचयति कला कलापं नृत्यति मुदसहिता,
हर हर हर महादेव ॥

तस्मिंल्ललित सुदेशे शाला मणि रचिता,
शिव शाला मणि रचिता ।

तन्मध्ये हर निकटे २ गौरी मदु सहिता,
हर हर हर महादेव ॥

क्रीडा रचयति भूषा रञ्जित निज मीशम्,
शिव रञ्जित निज मीशम् ।

ब्रह्मादिक सुर सेवित २ प्रणमति ते शीर्षम्,
हर हर हर महादेव ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विबुधवधूर्बहुनृत्यति हृदयं मुदसहिता,
शिव हृदये मुदसहिता।
किन्नर गानं कुरुते २ सप्त स्वर सहिता,
हर हर हर महादेव॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते,
शिव मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणु २ मधुरं नादयते,
हर हर हर महादेव॥
रुणु रुणु चरणे रचयति नूपुर मुज्वलिता,
शिव नूपुर मुज्वलिता।
चक्रावर्त्तं भ्रमयति भ्रमयति २ कुरुते तां धिक् ताम्,
हर हर हर महादेव॥
तां तां लुप चुप तां तां डमरु वादयते,
शिव डमरु वादयते।
अङ्गुष्ठाङ्गुलि नादं २ लास्यकतां कुरुते,
हर हर हर महादेव॥
कर्पूर द्युति गौरं पञ्चानन सहितम्,
शिव पञ्चानन सहितम्।
त्रिनयन शशिधर मौलिं २ विषधर कण्ठयुतम्,
हर हर हर महादेव॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुन्दर जटा कलापं पावक युत भालम्,
शिव पावक युत भालम् ।
डमरु त्रिशूल पिनाकं २ करधृत नृकपालम्,
हर हर हर महादेव ॥
शंख निनादं कृत्वा झल्लरि नादयते,
शिव झल्लरि नादयते ।
नीराजयते ब्रह्मा २ वेद ऋचां पठते,
हर हर हर महादेव ॥
इति मृदु चरण सरोजं हृदि कमले धृत्वा,
शिव हृदि कमले धृत्वा ।
अवलोकयति महेशं २ ईशं अभिनत्त्वा,
हर हर हर महादेव ॥
खण्ड रचित उर माला पन्नगमुपवीतम्,
शिव पन्नगमुपवीतम् ।
वाम विभागे गिरिजा २ रूपं अति ललितम्,
हर हर हर महादेव ॥
सुन्दर सकल शरीरे कृत भस्माभरणम्,
शिव कृत भस्माभरणम् ।
इति वृषभध्वज रूपं २ तापत्रय हरणम्,
हर हर हर महादेव ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ध्यानं आरति समये हृदये इति कृत्वा,
शिव हृदये इति कृत्वा।
रामं त्रिजटानाथं २ ईशं अभिनत्वा,
हर हर हर महादेव॥
संगितमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते,
शिव पठनं यः कुरुते।
शिव सायुज्यं गच्छति २ भक्त्या यः शृणुते,
हर हर हर महादेव॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

ॐ पाती २ः। ३। दिवआ। पाती २ः। ३। अन्तरिक्ष। स्या। पाती २ः। ३। पार्थिव। स्या। पाती २ः। ३। अपा मोषधी। नाम्। पाती २ः। ३। विश्वस्य भूत। स्या। पाती २ः। पाती २ ३ः। पा २। ता २ ३ ४। औहोवा। ए। पति र्दिवः। ए। पतिरन्तरिक्षस्य। ए। पतिः पार्थिवस्य। ए। पतिरपा मोषधोनाम्। ए। पतिर्विश्वस्यभूतस्य। ए। सुवर्ज्योती २ ३ ४ ५ः॥❀

(आ० गा० ३९)

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्म्महे। स मे कामान् काम कामाय मह्यं

❀ पतिः। दिवः। अन्तरिक्षस्य। पार्थिवस्य। अपाम्। ओषधीनाम्। ओष। धीनाम्। विश्वस्य। भूतस्य॥ (स्तोभपद पाठे १-६-२)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्द्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति ।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

ॐ साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रार्थना

ॐ अङ्गहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं महेश्वर।
पूजितोऽसि मया देव तत्क्षमस्व भ्रमात्कृतम् ॥ १ ॥

हे महेश्वर ! मैं ने जो भ्रमवश अङ्ग, क्रिया तथा विधान से रहित आपकी पूजा की, हे देव ! उसके लिये क्षमा कीजिये ॥ १ ॥

यद्यप्युपहतैः पुष्पैरपास्तैर्भावदूषितैः।
केशकीटापविद्धैश्च पूजितोऽसि मया प्रभो ॥ २ ॥

हे प्रभो ! यद्यपि अशुद्ध, गिरे हुए, भावों से दूषित तथा केश-कीड़ोंवाले पुष्पों से जो मैंने आपकी पूजा की उसके लिये क्षमा-प्रार्थना करता हूँ ॥ २ ॥

अन्यथासक्तचित्तेन क्रियाहीनेन वा प्रभो।
मनोवाक्कायदुष्टेन पूजितोऽसि त्रिलोचन ॥ ३ ॥

हे तीन नेत्रोंवाले शंकर जी ! अन्यासक्त चित्त से अथवा विधान रहित कर्म से दूषित मनसा, वाचा, कर्मणा जो मैंने आपकी पूजा की उसको क्षमा कीजिये ॥ ३ ॥

यच्चोपहतपात्रेण कृतमर्घ्यादिकं मया।
तामसेन च भावेन तत्क्षमस्व मम प्रभो ॥ ४ ॥

हे प्रभो ! जो मैंने आपके लिये तामसी भाव तथा अशुद्ध वर्त्तन से अर्घ्य आदि को दिया है उसको क्षमा कीजिये ॥ ४ ॥

मन्त्रेणाक्षरहीनेन पुष्पेण विकलेन च।
पूजितोऽसि महादेव तत्सर्वं क्षम्यतां मम ॥ ५ ॥

हे महादेव ! मन्त्र तथा अक्षर को न जाननेवाले मैंने जो छिन्न भिन्न फूलों से आपकी अर्चना की वह सभी क्षम्य है ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अयं दानकालस्त्वहं दानपात्रं
भवानेव दाता त्वदन्यं न याचे ।
भवद्भक्तिमन्तःस्थिरां देहि मह्यं
कृपाशील शम्भो कृतार्थोऽस्मि यस्मात् ॥ ६ ॥

भक्त शंकर जी से प्रार्थना कर रहा है कि हे कृपानिधान शंकर ! यह दान देने का समय है और मैं दान का पात्र हूँ, आप ही दान देनेवाले हैं मैं आपको छोड़कर अन्यत्र नहीं माँगता हूँ । अतः मुझको मेरे अन्तःकरण में स्थिर रहनेवाली अपनी भक्ति को दीजिये जिससे मैं कृतार्थ हो जाऊँ ॥ ६ ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ७ ॥

हे महादेव शम्भो ! हाथ तथा पैरों से, मन, वाणी, कर्म से तथा नेत्र और कानों से किये हुए अथवा मानसिक अपराधों को क्षमा कीजिये । हे करुणा के सागर आपकी जय होवे ॥ ७ ॥

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥ ८ ॥
इत्येवं सम्प्रार्थ्य प्रणम्य यथासुखं विहरेदिति ॥

हे महेश्वर ! मुझे, आप (शिव जी) के विषय में वास्तविक ज्ञान नहीं है कि आप कैसे हैं । आप जैसे भी हों उसी स्वरूपवाले आपके लिये नमस्कार है ॥

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection
बुलन्दशहर (उ.प्र.)

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चंदनम् ।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥

प्रस्तुत श्लोकों से शिव जी की मानसिक पूजा की गई है। हे दयानिधान, पशुओं के स्वामी शंकर जी ! मैं आपके लिये रत्नादि मणियों से निर्मित आसन, शीतल जलों से स्नान, सुन्दर वस्त्र, कस्तूरी के सुगन्ध से सुवासित चन्दन, चमेली, चम्पा तथा बेलपत्रों के सहित पुष्प और धूप से युक्त, हृदय से कल्पित हुए दीप को समर्पित करता हूँ, ग्रहण कीजिये ॥ १ ॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २ ॥

हे प्रभो ! हृदय से कल्पित किये हुए, सुवर्णमण्डित नवीन रत्नों के टुकड़ों से निर्मित पात्र में घी तथा खीर, दूध-दही से युक्त पाँच प्रकार से बनाया गया खाने योग्य पदार्थ, केलाफल तथा पानक, अयुत शाक, कपूर-खण्ड के समान उज्ज्वल तथा रुचिकर जल तथा पान को मैं भक्ति से आपके लिये अर्पित करता हूँ, स्वीकार कीजिये ॥ २ ॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे प्रभो तथा विभो ! मैं आपके लिये छत्र, हवा के लिये चँवर के जोड़े, निर्मल शीशा, वीणा, नगाड़ा, मृदङ्गादि से युक्त गीत तथा नृत्य, आठ अंगोंवाले प्रणाम तथा बहुत प्रकारवाली स्तुति इन सबको, संकल्प के द्वारा ही अर्पित करता हूँ, ग्रहण कीजिये ॥ ३ ॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ ४ ॥

हे शंकर जी ! मेरी आत्मा तुम्हारे रूप में, बुद्धि पार्वती रूप में, प्राण सहचर के रूप में तथा शरीर घर के रूप में और तुम्हारी पूजा ही विषय-भोगादि के रूप में है। मेरी निद्रा ही आपकी समाधिस्थिति है। पैरों से चलना ही प्रदक्षिणा का कार्य है। मेरी समस्त वाणी ही स्तोत्र रूप में है और जो कुछ भी मैं कर्म करता हूँ वह सभी तुम्हारी आराधना है ॥ ४ ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ५ ॥

हे महादेव शम्भो ! हाथ तथा पैरों से, मन, वाणी, कर्म से तथा नेत्र और कानों से किये हुए अथवा मानसिक अपराधों को क्षमा कीजिये। हे करुणा के सागर आपकी जय होवे ॥ ५ ॥

इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचिता शिवमानसपूजा समाप्ता ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुछ… प्रहार से बुरी तरह घायल कर
दिया। उन्हें घायल अवस्था में स्थानी[य]
श्री शिव प्रसाद गुप्त अस्पताल
भरती किया गया है।

बताया जाता है कि मड़वा ग्राम
सांस्कृतिक कार्यक्रम हो रहा था
कुछ लोगों द्वारा हंगामा किये जाने प
पुलिस ने उन्हें मना किया तथा कु
बदमाशों को भीड़ से बाहर लाने क
प्रयास किया। इसी बीच एक बदमा
ने सब इंस्पेक्टर श्री बैजनाथ द्विवे
पर खुखड़ी से प्रहार कर दिया। उन
सीने में गंभीर चोट आयी है। घाय
अवस्था में सब इंस्पेक्टर को स्थानी
श्री शिवप्रसाद गुप्त अस्पताल पहुंचाया
गया।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

पुलिस

आयुक्त

हजनीकी घटनाओंमें वृद्धि ... थानाध्यक्षको हटाने ... है।

हिन्दू विश्वविद्यालय

... र राव विज्ञान ... दसीके सदस्य

... हिन्दू विश्वविद्यालयके धातु- ... विभागके प्रख्यात ... प्रोफेसर पी. रामा ... भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान ... सदस्य चुना गया है। ... राव भारतीय विज्ञान अका- ... सदस्य है तथा राष्ट्री ... पुरस्कार प्राप्त कर चुके ...

कांग्रेसका चुनाव ... अभियान प्रारम्भ

... कांग्रेसके नेता श्री कमला- ... रविवारको मुगलसराय ... सभामें चुनाव अभियान ... करते हुए कहा कि देश ... अखण्डता एवं स्वतंत्रता ... लिए इंदिरा कांग्रेसके ... विजयी बनानेका आवाह्न ...

... उन्होंने कहा कि श्री जग- ... को प्रधान मंत्री न बनने ... मुख्य रूपसे जनता पार्टी ... उन्होंने ...

... विरुद्ध डीजल अधिक मूल्यपर बेचने तथा कई अन्य अनियमिततायें करनेकी रिपोर्ट मडुआडीह थानामें दर्ज करायी गयी है।

नागरिकोंद्वारा उक्त पेट्रोल पम्प के विरुद्ध शिकायत मिलनेपर जिला पूर्ति अधिकारी श्री के. पी. सिंहके निर्देशपर क्षेत्रीय खाद्य आपूर्ति अधिकारी श्री शशि कान्त राय तथा श्री आनन्द श्रीवास्तवने जांच की। जांचके दौरान व्यापक अनियमितताएं पायी गयी। अधिकारियोंने आवश्यक वस्तु अधिनियमके अन्तर्गत मडुआडीह थानामें मुकदमा दर्ज कराया।

चौकाघाटमें युवकका शव पाया गया

सोमवारको प्रातःकाल चौकाघाट पुलके पास रेलवे लाइनके किनारे एक अज्ञात युवकका शव पाया गया। बताया जाता है कि उक्त युवक ट्रेन में यात्रा कर रहा था। बाहर झांकते समय दरवाजेपर खड़ा उक्त युवक पुलके खम्भेसे टकरा कर बाहर गिर गया। बुरी तरह घायल हो जानेके कारण उसकी मृत्यु हो गयी। कैण्ट रेलवे पुलिसने उसका शव पोस्टमार्टम ... लिए भेज दिया।

महाकाली पूजा

सार्वजनिक दुर्गोत्सव सम्मेलनी ... के तत्वावधानमें २० अक्तूबरको महाकाली पूजाके अवसरपर सायंकाल सात बजे ... पार्कमें ... निबन्ध ... का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रमका उद्घाटन श्री देवी नारायण विद्यासागर करेंगे तथा ...

... आदिके ... १० ... ० ... ० ... किया गया है ... तिथि भाग करता ... है।

काशी

दिनमान	२८ घटी ३४।
सूर्योदय	६ घं० ०.६
सूर्यास्त	१७ घं० २९.
चन्द्रोदय	२७ घं० २१

हिजरी २४ ... जल्काद । पर्व ...

अंग्रेजी ...

प्रदेश स... लादनेकी

पूरे प्रदेशको सूखाग्र...

/ अखिल भारतीय अंग्रेजी ... सम्मेलनके प्रादेशिक अधिवेशनमें प्रदेश सरकारका अंग्रेजी ... नीतिकी तीव्र निन्दा की गयी। ... वेशनमें चन्द्र, राज्यों न्यायालय ... शिक्षा नौकरी अंग्रेजीका प्रयोग ... बन्द करनेका माग की गयी।

अधिवेशनमें ११ प्रस्ताव ... किये गये। कार्यक्रम सम्बन्धी ... में अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन ... में २९ नवम्बरको जुलूस, ... फेरी निकालने तथा अंग्रेजी ... सम्बन्धमें प्रजातन्त्रको ज्ञापन ... निर्णय ... कहा गया है कि राजभाषा ... १९६३ तक १९६ ...

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection